सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 196, नई दिल्ली, मंगलवार 23 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है "भरोसा"

03 हरिनगर में DTC के इलेक्ट्रिक बस डिपो का शिलान्यास

06 क्यों छात्रों को काउंसलिंग के दौरान नीट रैंक से परे देखना चाहिए

08 तरुण चुघ ने GST में राहत को बताया दिवाली से पहले बड़ा तोहफा

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत एवं परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र द्वारा सांझा प्रयास

बालिका सुरक्षा पर कार्यशाला का आयोजन, न्यायालय, कानूनी जानकारों एवं विभागों को बनाया जाएगा सहयोगी

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

"बालिका सुरक्षा भारत में उसके लिए एक सुरक्षित और सशक्त वातावरण की ओर" विषय पर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन करने का लिया गया फैसला। इसका उद्देश्य बालिकाओं के खिलाफ हिंसा, बाल विवाह और तस्करी रोकने के उपायों पर चर्चा कर उनके सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए योजना बनाना है। कार्यशाला में बालिकाओं को निर्भीक और आत्मविश्वासी बनने का संदेश देने का प्रयास किया जाएगा। कार्यशाला के सत्रों में पीसीपीएनडीटी एक्ट, एमटीपी एक्ट, पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों तथा उनके दुरुपयोग पर व्यापक चर्चा की जाएगी।

यह कार्यशाला बालिकाओं के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने और उनके सशक्तिकरण के लिए न्यायपालिका एवं प्रशासन के संयुक्त प्रयासों को मजबूती प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

(टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत)

आपका डेटा, आपका अधिकार. अपनी गोपनीयता की रक्षा करें

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

भारत में गोपनीयता का अधिकार

कानूनी स्थिति: 1. वर्ष 2017 में के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ मामले में सुप्रीम कोर्ट ने गोपनीयता को मौलिक अधिकार घोषित किया।

2. यह अधिकार अनुच्छेद 21 – जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत आता है।

3. इसमें शामिल है – व्यक्तिगत जानकारी, शारीरिक स्वायत्तता, यौन अभिरुचि और राज्य की अनावश्यक जासूसी से स्वतंत्रता।

वास्तविकता:

निगरानी: आधार डेटा, सीसीटीवी, चेहरे की पहचान तकनीक, पेगासस स्पाइवेयर जैसे मामलों से निजता पर सवाल।

कमज़ोर डेटा सुरक्षा: 2023 में डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट आया, पर इसमें सरकार को व्यापक छूट मिली है।

सोशल मीडिया पर नियंत्रण: कंपनियों को यूज़र्स का डेटा सरकार से साझा करना पड़ता है।

जन-जागरूकता की कमी: अधिकांश नागरिक अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं।

भारत के पड़ोसी देशों में स्थिति

1. पाकिस्तान

कानून: संविधान में सीधा गोपनीयता का अधिकार नहीं है। 2016 का पीईसीए (Prevention of Electronic Crimes Act) कुछ सुरक्षा देता है।

हकीकत: सरकारी निगरानी, सोशल मीडिया सेंसरशिप, डेटा का दुरुपयोग आम है।

2. बांग्लादेश

कानून: सीमित गोपनीयता प्रावधान। 2018 का डीएसए (Digital Security Act) साइबर अपराधों पर केंद्रित है, व्यक्तिगत डेटा पर नहीं।

हकीकत: इंटरनेट निगरानी, सोशल मीडिया पोस्ट पर गिरफ्तारी, डेटा सुरक्षा की कमी।

3. नेपाल

कानून: 2015 का संविधान गोपनीयता का अधिकार देता है। 2018 में पी नियम (Privacy Act) लागू हुआ।

हकीकत: कानून है पर लागू करने की ताकत कमज़ोर, सरकारी डेटा संग्रह में सुरक्षा की कमी।

4. श्रीलंका

कानून: 2022 में पीडीपी नियम (Personal Data Protection Act) लाया गया।

हकीकत: राजनीतिक उद्देश्यों से निगरानी, डेटा का दुरुपयोग, कानून का कमजोर अमल।

5. चीन

कानून: 2021 में पीआईपी कानून (Personal Information Protection Law) बनाया गया।

हकीकत: गोपनीयता लगभग समाप्त – व्यापक सरकारी निगरानी, सेंसरशिप और डेटा नियंत्रण।

कानून बनाम हकीकत

कानून: भारत, नेपाल और श्रीलंका ने गोपनीयता से जुड़े कानून बनाए हैं।

हकीकत:

1. सरकारें अक्सर राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर अधिकारों को दरकिनार कर देती हैं।

2. कानूनों का सही पालन और स्वतंत्र नियामक संस्थाओं की कमी।

3. आम जनता में जागरूकता की कमी।

4. जासूसी, निगरानी और सेंसरशिप हकीकत में ज़्यादा मज़बूत।

निष्कर्ष:

1. भारत में गोपनीयता का अधिकार कागज़ पर मज़बूत है, लेकिन हकीकत में सरकार की निगरानी और कानून के दुरुपयोग से लगातार टकराव है।

2. पड़ोसी देशों में या तो कानून कमज़ोर हैं या अमल नहीं हो रहा।

3. चीन का उदाहरण दिखाता है कि जब सरकार की पकड़ मज़बूत होती है तो निजता पूरी तरह समाप्त हो जाती हैं।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत,
tolwaindia@gmail.com

दिल्ली के डीटीसी यातायात में बसों का अकाल और खराब बसों से जनता असुरक्षित, सरकार अनजान

सुनील मिश्रा नई दिल्ली:

दिल्ली के दिल्ली ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन की बसों का अकाल पड़ना शुरू हो गया है दिल्ली के रूटों पर अब ड्राइवर बस स्टैंड पर बस नहीं रोकते ज्यादातर छोटी बसों की शिकायत ज्यादा रहती है डीटीसी का कोई शिकायत केंद्र काम नहीं करता दिल्ली के रोज सुबह ऑफिस जाने वाले डीटीसी के यात्रियों को एक एक बस के लिए 1 घण्टे से डेढ़ घंटे बस स्टैंड पर समय खराब होता है और शाम को आने वाले लोगों को भी 1 से दो घण्टे खराब करने पड़ते हैं फिर इतनी भीषण गर्मी में डेढ़ घंटे में बस भी आती है तो किसी का AC खराब लेकिन टिकट AC का ही लेना पड़ेगा किसी बस का दरवाजा खराब रास्ते में रोक देते हैं आजकल जनता को इतनी परेशानी उठानी पड़ रही है उसका कारण कई बसों को खराब होने के बाबजूद डिपो में बिना निरीक्षण के ही निकाल देते हैं न कोई इंस्पेक्शन होता है न कोई डिपो मैनेजर बसों की हालत पर ध्यान देता है ड्राइवर कंडक्टर भी ड्यूटी के लिए खराब गाड़ी सड़क पर उतार लेते हैं। कहा जाए कि डीटीसी भी अब असुरक्षित होती जा रही है

सरकार की तरफ से डीटीसी को काफी सुरक्षित बनाने की जरूरत है सरकार को उच्च अधिकारियों से लेकर ड्राइवर कंडक्टर तक और यातायात को सुरक्षित बनाने के लिए वाहनों के देखरेख की विशेष आवश्यकता है(

ओल चिकी लिपि का शताब्दी समारोह राउरकेला में आयोजित होगा....

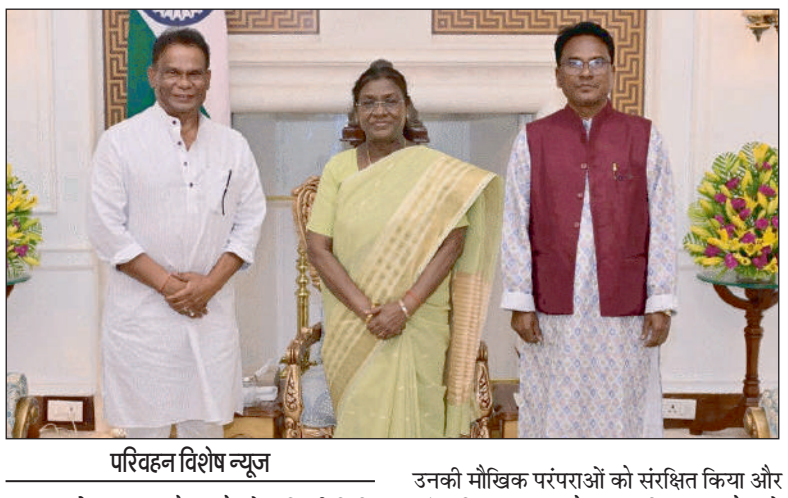

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: राउरकेला में ओल चिकी लिपि और संथाली भाषा विजय दिवस का भव्य शताब्दी समारोह 21 से 23 दिसंबर 2025 तक आयोजित होने जा रहा है। इस संदर्भ में पूर्व केंद्रीय मंत्री दिलीप राय ने भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए आमंत्रित किया है। देशभर से गणमान्य अतिथियों और सांस्कृतिक नेताओं के शामिल होने की संभावना है, और कई प्रतिष्ठित हस्तियों को आमंत्रण भेजा गया है।

वर्ष 2025 ओल चिकी लिपि के 100 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। यह लिपि गुरु गोमके पंडित रघुनाथ मुर्मू की अनूठी रचना है, जिसने संथाली समाज को एक लिखित स्वरूप प्रदान किया, उनकी मौखिक परंपराओं को संरक्षित किया और सांस्कृतिक पहचान को सशक्त किया। आयोजकों का कहना है कि यह मील का पत्थर सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय महत्व दोनों का प्रतीक है, जो दृढ़ता, मान्यता और सशक्तिकरण का संदेश देता है।

एक स्वागत समिति का गठन किया गया है, जिसमें प्रमुख संगठनों की भागीदारी है — समिति तीन दिवसीय समारोह की सफलता सुनिश्चित करने के लिए प्रयासों का समन्वय कर रही है।

आयोजकों ने आशा व्यक्त की है कि इस शताब्दी समारोह में गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति संथाली समाज को प्रेरित करेगी और भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता में इस लिपि के योगदान को रेखांकित करेगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील

हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

नवरात्रि 2025 का बड़ा रहस्य क्यों माँ दुर्गा आएंगी हाथी पर सवार और क्यों इस बार नवरात्रि उत्सव होंगे 10 दिन के?

माँ दुर्गा की पूजा का उत्सव शारदीय नवरात्रि 22 सितंबर से शुरू हो रहा है। 1 अक्टूबर को दुर्गा नवमी के साथ नवरात्रि का समापन होगा। इस बार ये पर्व 9 नहीं बल्कि 10 दिनों का होगा, क्योंकि इस बार नवरात्रि की एक तिथि तृतीया/चतुर्थी 2 दिन रहेगी। नवरात्रि में तिथियों की घट-बढ़कर और तारीख को लेकर पंचांग भेद हैं। कुछ पंचांग में चतुर्थी तिथि दो दिन बताई गई है और कुछ में तृतीया तिथि। 10 दिनों की नवरात्रि 9 साल बाद मनाई जाएगी। इससे पहले साल 2016 में भी नवरात्रि 10 दिनों की थी।

नवरात्रि में तृतीया तिथि रहेगी दो दिन :
भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग के मुताबिक, इस नवरात्रि में तृतीया तिथि दो दिन 24 और 25 सितंबर को रहेगी। जबकि, कई ज्योतिषियों का मत है कि चतुर्थी तिथि (25 और 26 सितंबर) दो दिन रहेगी। इन तिथियों की घट-बढ़ की वजह से देवी पूजा के लिए भक्तों को एक अतिरिक्त दिन मिलेगा और भक्त 10 दिनों तक नवरात्रि मना पाएंगे। नवरात्रि की समाप्ति के बाद इस बार दशहरा 2 अक्टूबर को मनाया जाएगा। भारतीय पंचांग की गणना के हिसाब से इस नवरात्रि में चतुर्थी तिथि ही 2 दिन रहेगी यानी देवी कुष्मांडा की पूजा दो दिन की जाएगी।

हाथी पर सवार होकर आएंगी मां दुर्गा :
नवरात्रि की शुरुआत में माँ दुर्गा के वाहन का विशेष महत्व रहता है। ये वाहन नवरात्रि के प्रारंभ होने वाले दिन (वार) पर निर्भर करता है। इस बार नवरात्रि की शुरुआत रविवार से हो रही है। जब नवरात्रि की शुरुआत रविवार या सोमवार को होती है, तो माँ दुर्गा हाथी पर सवार होकर आती हैं। हाथी को सुख-समृद्धि, धन-धान्य और खुशहाली का प्रतीक है। ऐसे में हाथी पर सवार होकर माँ दुर्गा के आने से देश और समाज के सुख-समृद्धि और उन्नति के योग बनेंगे। शनिवार या मंगलवार को नवरात्रि शुरू हो तो माँ का वाहन अश्व (घोड़ा) पर, गुरुवार या शुक्रवार को डोली में और बुधवार को नौका से देवी का आगमन होता है। देवी के वाहनों के अलग-अलग फल बताए गए हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में माँ दुर्गा के नौ अलग-अलग स्वरूपों की पूजा करते हैं, इनमें शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री देवी शामिल हैं।

ऐसे कर सकते हैं देवी दुर्गा की पूजा :
शारदीय नवरात्रि में रोज सुबह स्नान के बाद घर के मंदिर में सबसे पहले गणेश पूजा करें। गणेश जी को स्नान कराएं। वस्त्र अर्पित करें। फूल, चावल, दूर्वा, भोग गणेश जी को चढ़ाएं। गणेश जी की पूजा के बाद देवी दुर्गा की पूजा शुरू करें। मूर्ति में माता दुर्गा का आवाहन करें, आवाहन यानी देवी मां को आमंत्रित करना। माता दुर्गा को आसन दें। अब माता दुर्गा को स्नान कराएं। स्नान पहले जल से फिर पंचामृत से और फिर जल से स्नान कराएं। दुर्गा जी को लाल वस्त्र, लाल चुनरी अर्पित करें। वस्त्रों के बाद आभूषण, हार चढ़ाएं। इत्र अर्पित करें। कुमकुम से तिलक लगाएं। धूप और दीप जलाएं। लाल फूल अर्पित करें। चावल चढ़ाएं। नारियल अर्पित करें। मिठाई का भोग लगाएं। आरती करें। आरती के बाद परिक्रमा करें। माता दुर्गा की पूजा में दुं दुर्गायै नमः' मंत्र का जाप करें। पूजा में हुई गलतियों की क्षमा मांगे।

इन मंत्रों का करें जप :
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्येत्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तु ते॥
ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

इन मंत्रों के अलावा दुर्गा सप्तशती का पाठ भी किया जा सकता है। देवी कथाएं पढ़ और सुन सकते हैं। इस दिन किसी गौशाला में धन और हरी घास का दान करें।

अगर रहती है कफ की समस्या, तो इन 5 चीजों को खाने से करें परहेज

कफ (Phlegm) की समस्या बहुत आम है। यह शरीर में ठंडे और भारी पदार्थों के सेवन से बढ़ जाती है। खासकर जिन लोगों की प्रकृति कफ प्रधान होती है, उन्हें अक्सर खांसी, जुकाम, बलगम, गले में खराश, भारीपन और पाचन संबंधी दिक्कतें बनी रहती हैं।

आयुर्वेद में कफ को संतुलित करने के लिए खान-पान का विशेष महत्व बताया गया है। आइए जानते हैं कि कफ की समस्या होने पर किन चीजों से परहेज करना चाहिए और किन चीजों का सेवन करना फायदेमंद रहता है।

कफ बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ (Avoid These Foods in Cough & Phlegm)

1. वसायुक्त चीजें

तेल, तली हुई चीजें और अधिक वसा युक्त भोजन कफ को बढ़ाता है। यदि आपको बार-बार बलगम की समस्या होती है तो वसायुक्त चीजों से दूरी बनाना ही बेहतर है।

2. दूध

दूध को कफ बढ़ाने वाला माना जाता है। अगर आपकी प्रकृति कफ प्रधान है, तो दूध का अधिक सेवन न करें। यदि आपको दूध लेना ही है तो उसमें हल्दी डालकर पिएं, यह कफ को नियंत्रित करता है।

3. मक्खन

मक्खन और घी जैसे भारी पदार्थ शरीर में कफ को बढ़ाते हैं। खासकर खांसी-जुकाम में मक्खन का सेवन समस्या को और ज्यादा कर सकता है।

4. पनीर

पनीर से कफ का उत्पादन बढ़ता है। साथ ही, कई लोगों को पनीर आसानी से पचता नहीं है जिससे पाचन संबंधी समस्या भी हो सकती है। अतिसेवन से बचें।

कफ कम करने के लिए क्या खाएं (Foods That Help Reduce Cough & Phlegm)

1. गुड़

भोजन के बाद थोड़ा-सा गुड़ खाना कफ को कम करने में मदद करता है। गुड़ की तासीर गर्म होती है और यह पाचन शक्ति को भी बेहतर बनाता है।

2. तुलसी, सौंठ, अदरक और शहद

ये चारों कफ को कम करने के लिए आयुर्वेदिक औषधियों की तरह काम करते हैं।

तुलसी श्वसन तंत्र को साफ करती है।

सौंठ (सूखी अदरक) बलगम को पतला करती है।

ताजा अदरक गले की खराश और खांसी में राहत देती है।

शहद कफ को कम करके गले को चिकनाई प्रदान करता है।

इन्हें किसी भी रूप में अपने आहार में शामिल करें—जैसे काढ़ा, चाय या गर्म पानी के साथ।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से कफ को संतुलित करने के उपाय

सुबह गर्म पानी पीने की आदत डालें।

भोजन हल्का और सुपाच्य रखें।

ठंडी, बासी और तैलीय चीजों से बचें।

नियमित रूप से योग और प्राणायाम करें।

निष्कर्ष

कफ की समस्या को नियंत्रित करने के लिए सही खान-पान सबसे महत्वपूर्ण है। यदि आप ऊपर बताए गए परहेज और उपायों का पालन करते हैं तो कफ से जुड़ी परेशानियां जैसे खांसी, जुकाम और गले में बलगम की समस्या काफी हद तक कम हो सकती हैं।

मृत्यु-डर नहीं, कर्म सुधार प्रेरणा

हम सभी में सार्वभौमिक चेतना होती है, जिसे ब्रह्म, आत्मा भी कहा जाता है। चेतना- एक अद्वैत, एकल तत्व है, 'सत' - जो हमेशा हर जगह मौजूद है, 'चित' - जो ब्रह्मांड को संवेदनशील बनाने का कारण है, और 'आनंद'- शुद्ध आनंद। इसलिए, इसे सत-चित-आनंद के रूप में जाना जाता है। यह ब्रह्म, आत्मा, हमारे सूक्ष्म शरीर पर प्रतिबिंबित होता है जो हमें संवेदनशील बनाता है। जीव- स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों का एक संयोजन है जिसमें ब्रह्म की चेतना चमकती है। जबकि हम में से प्रत्येक का भौतिक और सूक्ष्म शरीर अलग है, यह वही आत्मा है जो हर जीव में चमकती है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य एक दिव्य प्राणी है।

क्या पत्थर जैसी निर्जीव वस्तुओं में चेतना होती है? वेदांत कहता है हाँ, यह है। लेकिन हम पत्थर को अन्य प्राणियों की तरह संवेदनशील नहीं देखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पत्थर में इंसानों और अन्य जानवरों की तरह सूक्ष्म शरीर नहीं होता है। सूक्ष्म शरीर में चेतना प्रतिबिंबित होती है, जैसे सूर्य केवल एक पॉलिश सतह पर प्रकाश को प्रतिबिंबित कर सकता है, अंधेरे या असमान सतह पर नहीं।

वास्तव में, हमारे मन की गुणवत्ता के आधार पर हमारे बीच चेतना के प्रतिबिंब की डिग्री भी भिन्न होती है। सात्विक मन वाले व्यक्ति को चेतना का बेहतर प्रतिबिंब मिलता है, जिससे वह सदा प्रसन्न रहता है। इसलिए आनंद हमारे मन की पवित्रता पर निर्भर है।

जब हम मरते हैं, तो आत्मा के मरने का कोई प्रश्न ही नहीं है क्योंकि वह सत है। आत्मा सदा सर्वत्र चमकती रहती है। जैसे सूर्य का प्रकाश जो पृथ्वी न होने पर भी चमकता रहता है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो भौतिक शरीर काम करना बंद कर देता है। लेकिन हमारा सूक्ष्म

शरीर और कारण शरीर, अंततः हमारे कर्मों के अनुसार, दूसरे भौतिक शरीर में चला जाता है। हमारे कर्म ही तय करते हैं कि हमें किस तरह का अगला जन्म मिलेगा - चाहे वह देवता का शरीर हो, मनुष्य का या किसी पशु का शरीर।

तो, सीख है - प्रथम, हमें हमेशा ब्रह्म को सभी में देखना चाहिए। हर एक, ईश्वरीय उपस्थिति का, प्रकटीकरण है। इसलिए, आइए हर व्यक्ति के साथ सम्मान से पेश आएं और किसी से घृणा न करें।

द्वितीय, हमें कभी भी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए, क्योंकि आत्मा का अनिवार्य भाग कभी नहीं मरता। हम केवल अपने शरीर को बदलते हैं। हमारा सूक्ष्म शरीर हमारे कर्म के पैकेट के साथ अगले शरीर में भी हमारे साथ यात्रा करता है। हमारा कर्म उस शरीर को तय करता है जिसमें हम अगला जन्म लेंगे। साथ ही इस जन्म के अच्छे कर्मों को हम बेहतर आनंद के लिए आगे बढ़ाएंगे। इसलिए हमें मृत्यु से डरने के बजाय इस जन्म में जितना हो सके अपने कर्मों को सुधारने की चेष्टा करनी चाहिए।

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

धर्म, संस्कृति और भक्ति का प्रतीक जनकपुरी महोत्सव इस बार अपने उद्देश्य से भटका और बना विवादों, अराजकता और राजनीति का अखाड़ा

मंच पर जूते पहनकर चढ़ने, पत्रकारों से धक्का-मुक्की और हथियार लहराने जैसी घटनाएं इस ऐतिहासिक आयोजन की गरिमा पर गंभीर प्रश्नचिन्ह

श्रद्धालु स्तब्ध, धार्मिक आयोजन में अराजकता पर गहरी नाराजगी - सवालों के घेरे में ऐतिहासिक जनकपुरी आयोजन : क्या अगला महोत्सव सुरक्षित और गरिमामय हो सकेगा?

आगरा। धर्म, संस्कृति और भक्ति का प्रतीक माने जाने वाला ऐतिहासिक जनकपुरी महोत्सव इस बार अपने उद्देश्य से भटकता हुआ विवादों, अराजकता और राजनीति का अखाड़ा बन गया। मंच पर जूते पहनकर चढ़ने, पत्रकारों से धक्का-मुक्की और हथियार लहराने जैसी घटनाओं ने इस ऐतिहासिक आयोजन की गरिमा पर गंभीर प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए हैं।

श्रद्धालु स्तब्ध, धार्मिक आयोजन में अराजकता पर गहरी नाराजगी

पूरे घटनाक्रम से श्रद्धालुओं में निराशा और क्षोभ का माहौल है। मंच, जहां श्रीराम की लीला का मंचन होना था, वहां हुए शराब, हथियार और हिंसा के दृश्य ने आयोजन की धार्मिक मर्यादा को तार-तार कर दिया। स्थानीय लोगों ने इस आयोजन को राजनीतिक महत्वाकांक्षा और निजी स्वार्थ से मुक्त करने की मांग की है। साथ ही एक स्वतंत्र और जवाबदेह आयोजन समिति के गठन की मांग भी जोर पकड़ रही है।

सवालों के घेरे में ऐतिहासिक आयोजनः क्या अगला महोत्सव सुरक्षित और गरिमामय हो सकेगा?

हर वर्ष कुछ न कुछ विवाद झेलने वाला यह ऐतिहासिक आयोजन अब एक सुधार की पुकार बन चुका है। श्रद्धालुओं और सामाजिक संगठनों का कहना है कि जब तक आयोजन में पारदर्शिता, अनुशासन और सार्वजनिक सहभागिता नहीं जोड़ी जाएगी, तब तक इसकी आध्यात्मिक गरिमा को पुनर्स्थापित करना संभव नहीं होगा।

ऐतिहासिक जनकपुरी महोत्सव में गरिमा को लगा धक्काः मंच पर विवाद, धक्का-मुक्की और रिवाल्वर लहराने तक पहुंचे हालात

पार्षद प्रदीप अग्रवाल का आरोपः जूते पहनकर मंच पर चढ़े राजा दशरथ - नगर निगम पार्षद

प्रदीप अग्रवाल ने मंच पर मौजूद 'राजा दशरथ' की भूमिका पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि वह अपने परिजनों के साथ मंच पर जूते पहनकर चढ़े। जब उन्हें रोकने का प्रयास किया गया तो उन्होंने अप्रसन्नता और नाराजगी जाहिर की वे किस नशे में थे, पैसे के या मदिरा के, यह वही जानें लेकिन उन्होंने जो आरोप लगाए, वे पूरी तरह निराधार हैं।

संयोजक पंकज अग्रवाल का गंभीर आरोपः हथियार लहराया, जान से मारने की धमकी

महोत्सव के संयोजक और पार्षद पंकज अग्रवाल ने आरोप लगाया कि मंच पर पहुंचे कुछ लोग नशे की हालत में थे और उनके पास हथियार भी थे। जब प्रभु श्रीराम मंच पर विराजमान थे, तभी उन्होंने रिवाल्वर निकाल ली और मुझे जान से मारने की धमकी दी। उन्होंने बताया कि विवाद उस समय और बढ़ गया जब राजा दशरथ ने अपने रिश्तेदारों को जबरन मंच पर बैठाने की कोशिश की, जिससे धक्का-मुक्की की स्थिति उत्पन्न हुई।

महोत्सव अध्यक्ष का आत्ममंथनः शायद मुझसे श्रीराम सेवा में कमी रह गई

महोत्सव के अध्यक्ष मुरारीलाल अग्रवाल ने विवाद पर खेद व्यक्त करते हुए कहा कि शायद मुझसे श्रीराम सेवा में कहीं कोई कमी रह गई, इसलिए इस तरह का विवाद उत्पन्न हुआ। पार्षदों के तीखे व्यवहार पर उन्होंने सफाई देते हुए कहा कि हजारों लोगों से मिलने के कारण कभी-कभी स्वर की कठोरता को गलत समझा जाता है। पत्रकारों के साथ हुई धक्का-मुक्की पर भी उन्होंने खेद जताते हुए कहा कि भीड़ अधिक होने के कारण यह स्थिति बनी होगी।

निमंत्रण को लेकर विवाद की जड़ः राजा दशरथ नाराज थे

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, विवाद की जड़ 'बढ़ार की परंपरागत दावत' में निमंत्रण न मिलना थी। राजा दशरथ को आयोजन समिति से कोई व्यक्तिगत नाराजगी नहीं थी, लेकिन दावत में नहीं बुलाए जाने पर वह आहत थे।

॥ श्रीनवदुर्गा-स्तोत्रम् ॥

॥देवी शैलपुत्री॥
वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्री यशस्विनीम्॥1॥

॥देवी ब्रह्मचारिणी॥
दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥2॥

॥देवी चन्द्रघण्टा॥
पिण्डजप्रवरारूढा चन्दकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥*॥

॥देवी कूष्माण्डा॥
सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे॥4॥

॥देवी स्कन्दमाता॥
सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥5॥

॥देवी कात्यायनी॥
चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यादेवि दानवघातिनी॥6॥

॥देवी कालरात्रि॥
एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी॥7॥

॥देवी महागौरी॥
श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा॥8॥

॥देवी सिद्धिदात्रि॥
सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥9॥
इति श्रीनवदुर्गास्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

.ईश्वर की बनाई यह सृष्टी बेशकीमती ख़ज़ानों से भरी हुई है

संसार में अरबों-खरबों व्यक्तियों का आवागमन प्रतिवर्ष होता है, किन्तु यहां से कोई भी एक तीली तक नहीं ले जा सका। इसलिए अपने मन में जो है उसे कहने का साहस और दूसरों के मन में जो है उसे समझने की कला, यदि है तो हमारे रिश्ते सदैव ताजा बने रहेंगें। ध्यान रहे कि भिक्षा पात्र तो भरा जा सकता है लेकिन इच्छा पात्र कभी नहीं भरा जा सकता इसलिए संतोष में ही परम सुख है। तकदीर के खेल से नाराज नहीं होना है जिंदगी में कभी उदास नहीं होना हो। हाथों की लक़ीरों तो उनकी भी होती हैं,जिनके हाथ ही नहीं होते। जीवन केवल गुज़रते दिनों का नहीं, बल्कि यादगार लम्हों का नाम है जिंदगी। हमारी सबसे बड़ी शक्ति तुम्हारा मन है इसे हम जहां लगाएंगे, वहीं सफ़लता पाएंगे।

दक्षिण दिशा में भोजन करना मृत्यु कारक-

दक्षिण दिशा में मुंह करके खाना खाना, आपको अकाल मृत्यु की ओर ले जाता है.. वास्तव, माना जाता है कि ये दिशा मरे हुए लोगों की है और इस दिशा में ऐसी ही ऊर्जा रहती है। जब आप इस दिशा में खाना खाते हैं तो ये नकारात्मक ऊर्जा आपके खाने में मिल जाती है या फिर आपके खाने का एक भाग इन्हें भी जाने लगता है। फिर लगातार ये काम करना इनके साथ संपर्क बढ़ाता है और मृत्यु की दिशा क्रियाशील हो जाती है और आप या आपका कोई विशेष अचानक से अकाल मृत्यु की ओर जाता है।

खाने की सही दिशा क्या है- खाने की सही दिशा है पूर्व। वास्तव में, इस दिशा में खाना मानसिक तनाव को दूर करता है और आपके पाचन क्रिया को सही करता है।इसके अलावा इस दिशा में खाना खाने से आप स्वस्थ्य रहते हैं। इतना ही नहीं इस दिशा में खाना खाने से आपके माता-पिता का भी स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

भोजन करने के नियम सनातन धर्म के अनुसार- खाने से पूर्व अन्नपूर्णा माता की स्तुति करके उनका धन्यवाद देते हुये, तथा सभी भूखों को भोजन प्राप्त हो इश्वर से ऐसी प्रार्थना करके भोजन करना चाहिये..

गृहस्थ के लिये प्रातः और सायं (दो समय) ही भोजन का विधान है। दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख, इन पाँच अंगों को धोकर भोजन करने वाला दीर्घजीवी होता है।

भींगे पैर खाने से आयु की वृद्धि होती है।

सूखे पैर, जुते पहने हुये, खड़े होकर, सोते हुये, चलते फिरते, बिछावन पर बैठकर, गोद मे रखकर, हाथ मे लेकर, फुटे हुये बर्तन में, बायें हाथ से, मन्दिर मे, संध्या के समय, मध्य रात्रि या अंधेरे में भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि के समय दही, सत्तु एव तिल का सेवन नहीं करना चाहिये।

हँसते हुये, रोते हुये, बोलते हुये, बिना इच्छा के, सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण के समय भोजन नहीं करना चाहिये। पूर्व की ओर मुख करके खाना खाने से आयु बढ़ती है।

उत्तर की ओर मुख करके भोजन करने से आयु तथा धन की प्राप्ति होती है। दक्षिण की ओर मुख करके भोजन करने से प्रेतत्व की प्राप्ति होती है। पश्चिम की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति रोगी होता है।

भोजन सदा एकान्त मे ही करना चाहिये।

यदि पत्नि भोजन कर रही हो, तो उसे नहीं देखना चाहिये। बालक और वृद्ध को भोजन करने के बाद स्वंय भोजन ग्रहण करें। बिना स्नान, पूजन, हवन किये बिना भोजन न करें। बिना स्नान ईख, जल, दूध, फल एवं औषध का सेवन कर सकते हैं।

किसी के साथ एक बर्तन मे भोजन न करें। (पत्नि के साथ कदापि नहीं) अपना जूठा किसी को ना दें, ना स्वंय किसी का जुठा खायें। काँसे के बर्तन में भोजन करने से (रविवार छोड़कर) आयु, बुद्धि, यश और बल की वृद्धि होती है। परोसे हुये अन्न की निन्दा न करें, वह जैसा भी हो, प्रेम से भोजन कर लेना चाहिये। सत्कारपूर्वक खाये गये अन्न से बल और तेज की वृद्धि होती है। ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, राग और द्वेष के समय किया गया भोजन शरीर मे विकार उत्पन्न कर रोग को आमन्त्रित करता है। भोजन में पहले मीठा, बीच मे नमकीन एवं खट्टी तथा अन्त में कड़वे पदार्थ ग्रहण करें। कोई भी मिष्ठान्न पदार्थ जैसे हलवा, खीर, मालपूआ इत्यादि देवताओ एवं पितरों को अर्पण करके ही खाना चाहिये। जल, शहद, दूध, दही, घी, खीर और सत्तु को छोड़कर कोई भी पदार्थ सम्पुर्ण रूप से नहीं खाना चाहिये। (अर्थात बिल्कुल थोड़ा सा थाली मे छोड़ देना चाहिये)। जिससे प्रेम न हो उसके यहाँ भोजन कदापि न करें। मल मूत्र का वेग होने पर, कलह के माहौल में, अधिक शोर में, पीपल, वट वृक्ष के नीचे, भोजन नहीं करना चाहिये। आधा खाया हुआ फल, मिठाइयाँ आदि पुनः नहीं खानी चाहिये।

खाना छोड़ कर उठ जाने पर दोबारा भोजन नहीं करना चाहिये। गृहस्थ को २ ग्रास से अधिक नहीं खाना चाहिये।

थोडा खाने वाले को आरोग्य, आयु, बल, सुख, सुन्दर सन्तान, और सौन्दर्य प्राप्त होता है। जिसने ढिंढोरा पीट कर खिलाया हो वहाँ कभी न खायें। कुत्ते का छुआ, श्राद्ध का निकाला, बासी, मुँह से फूंक मारकर ठण्डा किया, बाल गिरा हुआ भोजन, अनादर युक्त, अवहेलना पूर्ण परोसा गया भोजन कभी न करें। कंजूस का, राजा का, चरित्रहीन के हाथ का, शराब बेचने वाले का दिया भोजन कभी नहीं करना चाहिये। भोजन बनाने वाला स्नान करके ही शुद्ध मन से, मन्त्र जप करते हुये ही रसोयी में भोजन बनायें और सबसे पहले रोटियाँ अलग निकाल कर (गाय, कुत्ता, और कौवे हेतु) फिर अग्नि देव का भोग लगा कर ही घर वालों को खिलायें।

मां दुर्गा 32 नामावली स्तोत्र ।।

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गानिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरुपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरुपिणी ।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः
।। पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ।।

राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस आज

भारत सरकार ने आयुर्वेद को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। अब से हर साल 23 सितंबर को आयुर्वेद दिवस मनाया जाएगा। पहले यह दिन धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) को मनाया जाता था। सरकार का मानना है कि तिथि तय होने से आयुर्वेद दिवस को एक सार्वभौमिक कैलेंडर पर पहचान मिलेगी और दुनिया भर में इसका व्यापक रूप से आयोजन संभव हो सकेगा।

आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति नहीं बल्कि केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने कहा कि आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि यह व्यक्ति और प्रकृति के बीच संतुलन और सामंजस्य का विज्ञान है। यह हमारे सामूहिक संकल्प को दर्शाता है कि आयुर्वेद के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य और स्वस्थ ग्रह की दिशा में काम किया जाएगा।

क्यों खास है 23 सितंबर का दिन मंत्रालय के अनुसार, अगले दस वर्षों में धनतेरस की तारीख 15 अक्तूबर से 12 नवंबर के बीच बदलती रहेगी, जिससे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे एकसाथ मनाना मुश्किल हो जाता। इसी वजह मंत्रालय ने एक समिति बनाई, जिसने चार संभावित तारीखें सुझाईं। इनमें से 23 सितंबर को सबसे उपयुक्त माना गया। इस दिन, दिन और रात लगभग बराबर होते हैं। मंत्रालय ने बताया कि यह खगोलीय घटना प्राकृतिक संतुलन का प्रतीक है, जो आयुर्वेद के मूल सिद्धांत 'मन, शरीर और आत्मा के संतुलन' से मेल खाती है।

क्या होता है आयुर्वेद दिवस पर? आयुर्वेद दिवस के अवसर पर देशभर में और विदेशों में भी कई आयोजन होते हैं। जैसे स्वास्थ्य शिविर और जागरूकता अभियान, सेमिनार और कार्यशालाएं जिनमें विशेषज्ञ आयुर्वेद के बारे में जानकारी साझा करते हैं। प्रदर्शनियां और पब्लिक अवेयरनेस प्रोग्राम जिनमें आयुर्वेदिक उत्पाद और उपचार दिखाए जाते हैं। स्कूल, कॉलेज और मेडिकल संस्थानों में विशेष कार्यक्रम, जिससे युवा पीढ़ी आयुर्वेद को समझ सके।

आयुर्वेद दिवस का महत्व आज जब पूरी दुनिया प्राकृतिक चिकित्सा की ओर लौट रही है, ऐसे में भारत का यह प्रयास बेहद जरूरी और समय के अनुकूल है। आयुर्वेद न केवल उपचार की एक पद्धति है, बल्कि यह जीवनशैली, खान-पान और मानसिक संतुलन पर भी जोर देता है। आयुर्वेद दिवस का उद्देश्य यही है कि लोग आयुर्वेद को केवल विकल्प नहीं, बल्कि मुख्यधारा की चिकित्सा के रूप में अपनाएं।

हरिनगर में DTC के इलेक्ट्रिक बस डिपो का शिलान्यास, 400 से ज्यादा बसें होंगी चार्ज

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दी राजधानी को बड़ी सौगात, दिल्ली की हरित परिवहन व्यवस्था को मिलेगी नई दिशा

सुषमा रानी

नई दिल्ली। राजधानी की परिवहन व्यवस्था को और अधिक स्मार्ट और हरित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोमवार को हरिनगर में डीटीसी के बहु-स्तरीय इलेक्ट्रिक बस डिपो का शिलान्यास किया।

यह परियोजना 'सेवा पखवाड़ा' के अंतर्गत राजधानी को मिली एक बड़ी सौगात मानी जा रही है, जो आने वाले वर्षों में विकसित दिल्ली–विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को मजबूती देने का कार्य करेगी।

नई तकनीकों से सुसज्जित यह अत्याधुनिक डिपो सेल्फ-सस्टेनेबल बिल्डिंग के रूप में विकसित किया जा रहा है, यानी इसकी संपूर्ण संचालन लागत यह स्वयं वहन करेगा। सरकार पर किसी प्रकार का अतिरिक्त आर्थिक भार नहीं पड़ेगा।

इस बहु-स्तरीय इलेक्ट्रिक डिपो में 400 से अधिक इलेक्ट्रिक बसों की पार्किंग और चार्जिंग की सुविधा होगी। इसके अलावा इसमें कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए ऑफिस स्पेस, क्लीनिंग यूनिट, डॉरमेट्री, साथ ही कमर्शियल कॉम्प्लेक्स और मॉल जैसी आधुनिक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि, ₹दिल्ली की पब्लिक ट्रांसपोर्ट को आधुनिक और पर्यावरण अनुकूल बनाना हमारी प्राथमिकता है। यह डिपो राजधानी को प्रदूषण मुक्त और सुगम यातायात की दिशा में आगे ले जाएगा।"

इस मौके पर दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री आशीष सूद, डॉ. पंकज कुमार सिंह सहित कई वरिष्ठ अधिकारी और गणमान्य जन उपस्थित रहे।

राजधानीवासियों को यह डिपो न केवल एक बेहतर परिवहन अनुभव देगा, बल्कि भविष्य के लिए दिल्ली को स्मार्ट और टिकाऊ शहर के रूप में स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

भारत विकास परिषद सुनाम की बैठक में 'भारत को जानो' कार्यक्रम और दिवाली उत्सव की तैयारियों पर चर्चा

सुनाम, (जगसीर लोगोंवाल)– भारत विकास परिषद सुनाम की कार्यकारी कमेटी एवं बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक क्लब अध्यक्ष राकेश कुमार की अध्यक्षता में न्यू गर्ग स्वीट्स पर संपन्न हुई। बैठक में परिषद के पूर्व राज्य अध्यक्ष गोपाल शर्मा विशेष तौर पर मौजूद रहे। बैठक के दौरान 'भारत को जानो' कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रिंसिपल अमित डोगरा ने विस्तार से चर्चा की। वहीं क्लब महासचिव बलविंदर बांसल ने आगामी दिवाली उत्सव को लेकर क्लब की योजनाओं को सदस्यों के साथ साझा किया। बैठक में राकेश कुमार, बलविंदर बांसल, रविंदर गर्ग, गोपाल शर्मा, रविंदर भारद्वाज, भूषण कांसल, एडवोकेट अनिल सिंगला, दिनेश गुप्ता, राजिंदर गोयल, मनदीप गोयल, डॉ. धीरज, पुनीत बांसल, प्रेम सिंगला, सुखविंदर सिंह भट्टी, आर. एन. कांसल, अमित डोगरा, एडवोकेट साहिल बांसल और संजीव जिंदल उपस्थित रहे।

हिंदी उर्दू अदबी संगम करेगा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह 2025 का आयोजन

शिक्षा,साहित्य और समाजसेवा के दिग्गज होंगे सम्मानित, पुस्तकों व कैलेंडर का होगा लोकार्पण

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। राजधानी की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था हिंदी उर्दू अदबी संगम, दिल्ली आगामी 11 अक्टूबर 2025 को एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह का आयोजन करेगी। इस भव्य कार्यक्रम का उद्देश्य विश्व मैत्री और देश की गंगा-जमुनी तहजीब को बढ़ावा देना है।

संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख्तर नकवी ने बताया कि समारोह में कवि सम्मेलन, मुशायरा और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी होंगी। देश के विभिन्न राज्यों

से आए कवि-शायर अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे, वहीं लोक परंपराओं और संस्कृत कलाकृतियों की झलक भी मंच पर दिखाई जाएगी।इस अवसर पर शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा, विधि, समाज सेवा, राजनीति और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले देश-विदेश के 151 विशिष्ट व्यक्तित्वों को सम्मानित किया जाएगा। इस वर्ष से संस्था ने खेल व अभिभावक सेवा के क्षेत्र में भी विशेष शख्सियतों को सम्मानित किया जाएगा। समारोह के दौरान प्रतिभागियों केजीवनऔर कार्यों पर आधारित पुस्तक अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनमोल शख्सियत', डॉ. नकवी की कृति 'सफरनामा एक कलमकार', संस्था की परिचय पत्रिका 'मेरे ख्वाब मेरे साथ' और कैलेंडर-2026 का विमोचन भी होगा। डॉ. नकवी ने बताया कि संस्था पिछले कई वर्षों से दिल्ली में सम्मान समारोह आयोजित कर रही है और अब तक अनेक पुस्तकों का प्रकाशन कर चुकी है, जिनमें नये दौर की नई लघुकथाएं, आदाब अर्ज है, रिमझिम सावन, गुलिस्ता हमारा, हमारे बापू तथा आधुनिक साहित्यिक जगत के अनमोल रतन प्रमुख हैं।डॉ.नकवी ने कहा कि संस्था का मुख्य उद्देश्य न केवल विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को पहचान देना है, बल्कि विशेष रूप से युवाओं को मंच उपलब्ध कराकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाना भी है।

डॉ. शंभू पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अंतरराष्ट्रीय लेखक,पत्रकार-विचारक,

साइबर ठगी करने के मामले में प्रकाश में आए 02 शातिर साइबर ठग चढे पुलिस के हत्थे

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

एटा– जनपदीय साइबर क्राइम थाना व कोतवाली देहात की संयुक्त कार्यवाही में साइबर ठगी करने के मामले में प्रकाश में आए 02 शातिर साइबर ठग चढे पुलिस के हत्थे,

03 मोबाइल ,5 सिम, 01 बैंक पासबुक, 01 एटीएम, 1500 रूपये नगद बरामद।

कोतवाली देहात पर दर्ज FIR 343/2025 धारा धारा 318(4)/319(2)/61(2) बी0एन0एस0 व 66 सी/66डी आईटी एक्ट मामले मे की गई गिरफ्तारी,

मुख्य बिन्दु-

1. अभियुक्त चन्दन प्रताप द्वारा *जस्ट डायल* प्लेटफार्म पर अपनी आईडी बना रखी थी।

2. जब थोक विक्रेताओं द्वारा जरुरत का सामान खरीदने के लिए जस्ट डायल प्लेटफार्म पर जब सर्च किया जाता तो अभियुक्त चन्दन प्रताप सिंह को जस्ट डायल एप्प से इस बात की जानकारी हो जाती।

3. जिसके वाद अभियुक्त द्वारा विक्रेता के वॉट्सएप पर सर्च किए गए सामान से संबंधित वस्तु का फुटेज व वीडियो साझा किया जाता था एप्प के माध्यम से फर्जी बिल काटकर थोक विक्रेता भेज दिया जाता था,

जिससे थोक विक्रेता को इस बात का विश्वास हो जाता कि सामने वाला व्यक्ति सही है।

4. इसी बात का फायदा उठाकर चन्दन प्रताप उपरोक्त अपने ग्रुप के साथियों से फर्जी बैंक अकाउंट के क्यू आर कोड लेकर सामने वाली पार्टी को भेज देता था, अभियुक्त द्वारा आए हुए, सारे पैसे को एटीएम कार्ड व अपने साथी जिनके द्वारा जनसेवा केन्द्र चलाया जा रहा है, के माध्यम से निकाल लेता था व निकाले हुए पैसे में से 30 प्रतिशत उन लोगों को देता जिनके द्वारा खाता उपलब्ध कराया जा रहा है । व 20 प्रतिशत जनसेवा केन्द्र वाले साथी को देता था इसी तरह चन्दन प्रताप सिंह उपरोक्त द्वारा भिन्न प्रान्तो में साइबर फ्राड की कई घटनाओं को अंजाम दिया गया है ।

गिरफ्तार अभियक्तों का नाम व पता।

1. चन्दनप्रताप सिंह पुत्र बाबूसिंह निवासी सीडे चकरपुर थाना राजेपुर जिला फर्रुखाबाद

2. लोकेन्द्र कुमार पुत्र धर्मपाल सिंह निवासी ग्राम पुरा, छछैना थाना मलावन जनपद एटा

गिरफ्तार करने वाली टीम

1.प्र0नि0 जितेन्द्र कुमार गौतम मय टीम

2.प्र0नि0 साइबर थाना शशिकान्त सिंह मय टीम

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज अनिल राठौड़ गजडुंडवारा

मा0 मुख्यमंत्री उ0प्र0 सरकार द्वारा नारी सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलम्बन हेतु चलाये जा रहे मिशन शक्ति 5.0 अभियान के तहत छात्राओं नें बनाये पोस्टर ।*

गंजडुण्डवारा। मा0 मुख्यमंत्री उ0प्र0 सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु चलाये जा रहे 'मिशन शक्ति' फेज 5 अभियान के तहत आज पूर्व माध्यमिक विद्यालय राम छितौनी मै महिला सुरक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यालय के ई प्रधानाध्यापक संजय कुमार नें स्वयं नेतृत्व किया गया । छात्राओं नें महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों, सरकारी योजनाओं और नीतियों के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया गया । इसका उद्देश्य समाज में महिलाओं को उनके कानूनी और संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना है।

समाज सेवा और कला की दुनिया में उभरता नाम – शैलेश वशिष्ठ

नई दिल्ली। रामलीला मंचन में भगवान राम का किरदार निभाकर दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाने वाले शैलेश वशिष्ठ जी आज समाज सेवा और कला दोनों क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। अपनी सशक्त अभिनय शैली और प्रभावशाली संवाद अदायगी से उन्होंने रामलीला के मंच पर दर्शकों को मोहित किया है।

शैलेश वशिष्ठ जी सिर्फ़ एक कलाकार ही नहीं बल्कि सक्रिय समाजसेवी भी हैं। समाज की भलाई और ज़रूरतमंदों की मदद के लिए वे निरंतर कार्यरत रहते हैं। कला और समाज सेवा का यह अद्भुत संगम उन्हें औरों से अलग बनाता है।

उन्होंने कई फिल्मों में और वेब सीरीज़ में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है, जिससे वे युवाओं के बीच प्रेरणा का स्रोत बने हैं। अभिनय और सेवा के प्रति उनकी यह निष्ठा उन्हें निरंतर नई ऊँचाइयों तक ले जा रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शैलेश जी जैसे कलाकार और समाजसेवी समाज को नई दिशा और ऊर्जा देने का कार्य कर रहे हैं।

मिस अर्थ इंडिया 2025 कोमल चौधरी और मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 एकता सिंह को एक शानदार फिनाले में ताज पहनाया गया

मुख्य संवाददाता

हरियाणा का इंद्रधनुष ऑडिटोरियम ग्लैमर और प्रेरणा से जगमगा उठा जब मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 का ग्रैंड फिनाले मुख्य मंच पर आया। इस बहुप्रतीक्षित शाम में नई मिस अर्थ इंडिया 2025 का ताज पहनाया गया और एकता सिंह को मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 का प्रतिष्ठित खिताब प्रदान किया गया, जिससे उद्देश्यपूर्ण सौंदर्य का जश्न मनाने की परंपरा जारी रही।

चमकदार प्रदर्शनों और प्रतिभा, बुद्धिमत्ता और वकालत के मनमोहक प्रदर्शनों के बीच, इस वर्ष की विजेता भारत भर से आई 17 उत्कृष्ट फाइनलिस्टों के बीच प्रतिस्पर्धा करने के बाद विजयी हुईं। ताजपोशी का क्षण

मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 - एकता सिंह (मिस कॉन्फिडेंस से भी सम्मानित)

मिस अर्थ इंडिया 2025 - कोमल चौधरी

प्रथम उपविजेता - बाहुन नोंग्रम (मेघालय)

द्वितीय उपविजेता - स्नेहा हेगड़े

उपशीर्षक और विशेष पुरस्कार

निशिता थिरुनगरी - जिम्मेदारी के साथ मिस ब्यूटी,पर्णिका द्विवेदी - मिस पॉपुलर,सुमजीत चौहान - मिस ब्यूटी स्माइल

रितु रावत - मिस इंटेलेक्चुअल और मिस फोटोजेनिक,

एकता सिंह - मिस कॉन्फिडेंस अन्य फाइनलिस्ट निकिता सिंह, हैप्पी वर्मा, ख़ुशी जयसवाल, कोमल हरेश चौधरी, शुति प्रभाकरन, श्वेता ठाकुर, प्रियांशी अग्रवाल, अनुष्का सोने, दिशा करमाकर और शमिता भाग्यलक्ष्मी विश्वनाथ।

शानदार समापन समारोह को आतिथ्य सत्कार भागीदार के सहयोग से और भी बेहतर बनाया गया, और इसमें प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, उद्योग जगत के दिग्गजों और सांस्कृतिक हस्तियों ने भाग लिया, जिन्होंने प्रतियोगियों के जुनून और दृढ़ता की सराहना की।

इस अवसर पर बोलते हुए, मिस डिवाइन ब्यूटी की सह-संस्थापक निमिषा सक्सेना ने कहाः

"मिस डिवाइन ब्यूटी हमेशा से एक सौंदर्य प्रतियोगिता से कहीं बढ़कर रही है—यह परिवर्तन की एक यात्रा है। यहाँ प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी शक्ति, अपनी आवाज़ और अपने उद्देश्य को खोजने का अवसर दिया जाता है। 2025 की विजेता वास्तव में ज़िम्मेदारी के साथ सौंदर्य की भावना को मूर्त रूप देती हैं, और मुझे विश्वास है कि वे वैश्विक मंचों पर गरिमा और दृढ़ विश्वास के साथ चमकेंगी।"

इसी दृष्टिकोण को दोहराते हुए, डिवाइन ग्रुप फ़ाउंडेशन के संस्थापक दीपक अग्रवाल ने कहाः"आज रात हमने केवल विजेताओं का ताज पहनाया जाना नहीं, बल्कि परिवर्तनकर्ताओं का उदय देखा। हमारा मिशन हमेशा से महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें सकारात्मक बदलाव की दूत बनने के लिए प्रोत्साहित करना रहा है। मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 इस मिशन को आगे बढ़ाती है, यह साबित करते हुए कि सच्ची सुंदरता साहस, करुणा और समाज के प्रति प्रतिबद्धता में निहित है।"

मिस अर्थ इंडिया 2025 की विजेता अब दुनिया भर में मिस अर्थ प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी, जहाँ वे न केवल अपनी विशिष्टता का प्रदर्शन करेंगी, बल्कि स्थिरता, समावेशिता और महिला सशक्तिकरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का भी प्रदर्शन करेंगी। इस बीच, मिस डिवाइन ब्यूटी 2025 के रूप में एकता सिंह, डिवाइन ग्रुप फ़ाउंडेशन के विज़न का प्रतिनिधित्व करती रहेंगी, जो नेतृत्व, शान और ज़िम्मेदारी को दर्शाता है और साथ ही देश भर की युवा महिलाओं को प्रेरित करता है।

अपने विज़न को साझा करते हुए, प्रबंधन से दीपक शर्मा, नरिंदर कुमार और डॉ. आर.एस. औलख ने सामूहिक रूप से कहाः

स्ट्राई-सिटी में पहली बार आयोजित हो रहे मिस डिवाइन ब्यूटी के माध्यम से, हमारा उद्देश्य हरियाणा और पंजाब के युवाओं को प्रेरित और प्रोत्साहित करना है। हमारा प्रयास यह प्रदर्शित करना है कि सच्चा सशक्तिकरण आत्मविश्वास, आत्मविश्वास और ज़िम्मेदारी से आता है - ऐसे गुण जिन्हें हर युवा को समाज को एक उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने के लिए अपनाना चाहिए।"

25 सालों की सफलता के साथ स्टार प्लस ने किया स्टार परिवार अवॉर्ड्स 2025 का भव्य आयोजन!

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस, भारत के सबसे पसंदीदा एंटरटेनमेंट चैनलों में से एक, ने स्टार परिवार अवॉर्ड्स 2025 के साथ अपनी सालाना परंपरा का जश्न मनाया है। ये अवॉर्ड हर साल चैनल के जाने माने शो और किरदारों को सम्मान देने के लिए होते हैं। इस बार का एडिशन और भी खास और मज़ेदार है, क्योंकि यह एक बड़े मौके के साथ आया है। दरअसल, स्टार प्लस ने एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में अपने शानदार 25 साल पूरे कर लिए है। इस सिल्वर जुबली का जश्न मनाते हुए, उत्साह, शानदार परफॉर्मेंस और गर्व और यादों से भरे अनमोल पलों के साथ शाम दोहरी खुशियों में बदल गई। इस जश्न की शुरुआत एक खास प्रेस कॉन्फ्रेंस से हुई, जिसने अवॉर्ड्स के इस एडिशन को सबसे यादगार बनाने का माहौल तैयार कर दिया।

रेड कार्पेट पर टीवी की सबसे लोकप्रिय हस्तियों की मौजूदगी ने शाम को और भी शानदार बना दिया, जो स्टार प्लस की यात्रा

का अहम हिस्सा रही हैं। इस मौके पर उर्वशी ढोलकिया, श्वेता तिवारी, दिव्यांका त्रिपाठी अपने पति विवेक दहिया के साथ, शिवांगी जोशी, करण मेहरा, अमर उपाध्याय, रागिनी खन्ना, जय सोनी, जिया मानेक, रोनित रॉय, हर्ष राजपूत और करण पटेल जैसे सितारे मौजूद रहे।

शानदार माहौल में चार चाँद लगाते हुए स्टार प्लस के प्यारे चेहरे भी मौजूद थे, रुपाली गांगुली, समृद्धि शुक्ला, मेघा चक्रवर्ती, कमर राजपाल, कान्वर ढिल्लों, नेहा हर्षोरा, श्रितमा मित्रा, पुनीत चौकसे, अद्रिजा रॉय, शिवम खजुरिया, दिव्या पाटिल, मंजीत मक्कड़, संदीप्त सेन, अहम शर्मा, विशाल सिंह, रिया कपूर, अशलेषा सवंत, संजय नारवेतकर, अदिति त्रिपाठी, अक्षित सुखिजा, अनंग देसाई, सुमीत सचदेव, रिया शर्मा, अरिजीत तनेजा, खुशि दुबे, जैन इबाद खान, राजन शाहि और कई अन्य सितारे शामिल हुए, जिससे यह शाम एक असली स्टार-स्टडेड इवेंट बन गई।

यह रात सिर्फ ग्लैमर तक ही नहीं थी, बल्कि टैलेंट को सराहने और शानदार परफॉर्मेंस का जश्न मनाने का भी मौका थी। उत्साहित डांस परफॉर्मेंस, दिल को छू लेने वाले पल और अवॉर्ड की घोषणा ने स्टेज को रोशन कर दिया, और स्टार प्लस की एनर्जी और क्रिएटिविटी को दिखाया। पुराने दिग्गजों से लेकर नए उभरते सितारों तक, इस इवेंट ने हर पीढ़ी के योगदान को सम्मानित किया।

स्टार प्लस अवॉर्ड्स 2025 के साथ, स्टार प्लस ने अपने शानदार पुराने समय का जश्न मनाया और एक मज़ेदार और रोमांचक भविष्य का वादा किया। जैसे ही चैनल नई कहानियाँ दिखाने की ओर बढ़ रहा है, यह दर्शकों को प्रेरित करने वाले, मज़ेदार और याद रहने वाले पल देने की अपनी खासियत को फिर से दिखाता है।

इस सिल्वर जुबली स्पेशल की सारी मज़ेदार परफॉर्मेंस, इमोशंस से भरे जीत और खुशियों भरे जश्न देखने के लिए जुड़े रहिए।

वृन्दावन में संस्कृति, अध्यात्म और मानसिक स्वास्थ्य विषय पर हो रहा है सीआईपीकॉन 2025 सम्मेलन

कार्यक्रम में ब्रज सेवा संस्थान के द्वारा किया गया मनोचिकित्सकों का सम्मान

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दाव। छटीकरा रोड़ स्थित होटल रेडिशन में सीआईपीकॉन 2025 सम्मेलन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ चल रहा है। जिसका मुख्य विषय है — "संस्कृति, अध्यात्म और मानसिक स्वास्थ्य।"

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री लक्ष्मी नारायण चौधरी जी, जिन्होंने दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने संबोधन में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐसे आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला और इस प्रयास के लिए आयोजकों को हार्दिक बधाई दी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सविता मल्होत्रा, अध्यक्ष, इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी (IPS) ने समारोह की शोभा बढ़ाई। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में आधुनिक शोध और पारंपरिक मूल्यों के संतुलन पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के मनोचिकित्सक प्रोफेसर डॉक्टर राजेश सागर, प्रोफेसर डॉ. सुषमा सागर, प्रोफेसर डॉ. निमेश जी. देसाई, डॉक्टर जे.पी.नारायण और डॉक्टर रंजीत चौधरी आदि को ठाकुर बांके बिहारी महाराज का चित्र पट, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह आदि भेट कर उनका सम्मान किया।

आयोजन समिति का नेतृत्व आयोजन अध्यक्ष डॉ. जे. पी. नारायण और आयोजन सचिव डॉ. रंजीत चौधरी ने किया। इनके साथ डॉ. अमरप्रीत, डॉ. श्वेता चौहान, और डॉ. मनीष बोरेसी सहित पूरी टीम के अथक प्रयासों से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजन सचिव डॉ. रंजीत चौधरी ने कहा,

₹सीआईपीकॉन 2025 का वृंदावन में आयोजन हमारे लिए एक सपना था, जो आज साकार हुआ है। हमारा उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हुए लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। देशभर से आए प्रतिष्ठित मनोचिकित्सकों और विशेषज्ञों के साथ यह मंच मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई दिशा और नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेगा।₹

उद्घाटन समारोह में देशभर से आए प्रतिष्ठित मनोचिकित्सकों, वक्ताओं और प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

यह आयोजन वृंदावन के लिए एक ऐतिहासिक क्षण सिद्ध हुआ, जो आने वाले वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर डॉ. टी.एस.एस. राव, सीपीएस अध्यक्ष डॉ. सौरभ टंडन, डॉ. रूमा भट्टाचार्य, डॉ. गणेश शंकर, डॉ. श्वेता चौहान, और डॉ. मनीष बोरेसी, डॉ. आदर्श त्रिपाठी, गोपाल शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी विशेष और सार्थक बना दिया।

घर घर तथा देवी मंदिरो पर नवरात्र के प्रथम दिन मां शैलपुत्री से की पूजा अर्चना

घंटे घडियालो कि गूंज से नगर हुआ धर्ममयी

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

अनिल राठौर।गंजडुंडवारा

नगर के रेलवे रोड प्रचीन दुर्गा मंदिर पंचायती बाग स्तिथि काली मंदिर ,सर्राफा बाजार स्तिथि बेलोंन माता का मन्दिर ,मोहल्ला घासी बाल्मीक वस्ती में गमा देवी मंदिर मोहल्ला खेरू में नो देवी मंदिर ,कादरगंज रोड स्तिथि मातारानी मठ ,पर शारदीय नवरात्र के प्रथम दिवस श्रद्धालुओं ने मां शैलपुत्री की पूजा-अर्चना के साथ शारदीय नवरात्र का शुभारंभ श्रद्धा एवं उल्लास के साथ पूजा अर्चना शुरू की घर-मंदिरों में प्रातःकाल घट स्थापना के साथ मां नव दुर्गा के प्रथम रूप शैल पुत्री की पूजा-अर्चना कर भक्तों ने देश में सुख शांति और रोग मुक्ति की कामना की। मां को जल चढ़कर और व्रत रखकर मनौतियां मांगी। पहले दिन देवी मंदिरों में श्रद्धालुओं की खासी भीड़ देखने को मिली। श्रद्धालु मां की आस्था में सराबोर नजर आए। प्रातः काल पंचायती बाग ,तेलमिल कालोनी स्तिथि मन्दिर, पर यज्ञ में धर्मप्रेमियों ने लोक कल्याण के लिये आहुति दी ।वही देर रात तक भजन-कीर्तन गूंजते रहे।

इस मौके पर ब्रजमोहन गुप्ता ,अशोक पाठक ,धेर्मेन्द्र सोलंकी ,संजीव गुप्ता बल्ला सुशील शर्मा मनीष पाठकर , संजय गुप्ता ,ओमकार सिंह चौहान ,विकास गुप्ता आदि मौजूद थे,।

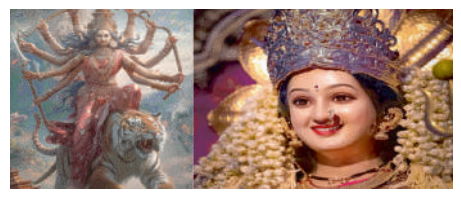

नवरात्र: कानपुर के मंदिरों में भक्तों का रेला

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां आज माता के नवरात्र के पहले दिन शहर के प्रमुख दुर्गा मंदिरों के साथ ही छोटे मंदिरों में भी भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। इस दौरान दुर्गा मंदिरों में 'अमृत की बरसे बदरिया अम्बे मां की दुअरिया..' आदि भजन गुंजायमान होते रहे। गुरुवार का दिन होने के कारण जंगली देवी मंदिर, काली मठिया शास्त्री नगर, बारादेवी किदवई नगर, तपेरी देवी बिरहाना रोड, फूलमती मंदिर जनरलगंज, वैष्णो देवी मंदिर बर्रा, चंद्रिका देवी मंदिर, शीतला माता मंदिर चौक, दुर्गा मंदिर गोविंद नगर सहित शहर के प्रमुख दुर्गा मंदिरों में छात्र-छात्राओं की अच्छी-खासी संख्या देखी गयी। अपने माता-पिता व दोस्तों के साथ मां के द्वारे पहुंचे इन भक्तों ने मां से परीक्षा में पास होने की कामना की। इसी के साथ माता को प्रसाद, नारियल, फूल-मालाएं व चुनरी चढ़ाकर मुरादें मांगीं।

वहीं मंदिरों में लगने वाले पारम्परिक मेले में खूब भीड़ दिखायी दी। महिलाओं ने जमकर खरीदारी की। इस दौरान माता के दरबार में भजन-कीर्तन गूंजते रहे। जागरण का आयोजन हुआ। नवरात्र के तीसरे दिन भी मुंडन संस्कार हुए। मन्नतें पूरी होने पर बारादेवी मंदिर व काली मठिया मंदिर आदि मंदिर में भक्तगण नंगे पांव चलकर आये।

चित्रकारों के सम्मान के साथ हुआ तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला का समापन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। छटीकरा रोड़ स्थित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में चल रही तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुई ।जिसके अंतर्गत तीन सदस्यीय जजेस कमेटी के प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनन्द, सुश्री उमा शर्मा एवं डॉ. उज्ज्वला शर्मा ने देश भर के 15 राज्यों से आए हुए 55 चित्रकारों की चित्रकला का अवलोकन किया। साथ ही भरत भाई (गुजरात) व महेश कुमार (दिल्ली) को प्रथम स्थान, चित्रकार रमेश व नरेन्द्र कुमार नेचर (बिहार) को द्वितीय स्थान, अमन यादव (हरियाणा) को तृतीय स्थान प्रदान किया ।साथ ही देश के विभिन्न प्रांतों से आए समस्त चित्रकारों को पटुका ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक देवदत्त शर्मा ने कहा कि रामायण रिसर्च काउंसिल देश की एक ऐसी संस्था है, जो अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला के मंदिर संघर्ष पर भी कार्य करती है और मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी में भी मां सीताजी को श्रीभगवती के रूप में स्थापित करने के प्रति संकल्पित है। साथ ही माता सीता के प्रति सीतामढ़ी में काउंसिल के सतत कार्यों को देखते हुए बिहार सरकार ने काउंसिल को 12 एकड़ जमीन भी आवंटित की है।

ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी व भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व उच्चाधिकारी देवदत्त शर्मा भारतीय चित्रकला के अत्यन्त प्रेमी व प्रशंसक हैं ।इसीलिए वे अपनी संस्था के द्वारा प्रति वर्ष देश भर के चित्रकारों को वृन्दावन बुलाकर उनकी कार्यशाला आयोजित करते हैं ।साथ ही उन्हें सम्मानित कर उनकी कला को प्रोत्साहित करते हैं ।चित्रकला के क्षेत्र में उनकी यह सेवा अत्यन्त प्रशंसनीय है।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात संत स्वामी गोविंदानंद तीर्थ व महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद महाराज, विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे पद्मश्री कृष्ण कन्हाई चित्रकार, डॉ. राधाकांत शर्मा, चित्रकार अनिल सोनी एवं विक्रम जीत (उड़ीसा) आदि की उपस्थिति विशेष रही।

ब्रज सेवा संस्थान के द्वारा सम्मानित हुए एम्स के प्रख्यात मनोचिकित्सक डॉ. राजेश सागर और ट्रामा सर्जरी की प्रभारी डॉ. सुषमा सागर

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित होटल रेडिशन में आगरा साइकियाट्रिक सोसाइटी द्वारा आयोजित सेंट्रल साइकियाट्रिक सोसाइटी के 46वें त्रिदिवसीय वार्षिक सम्मेलन में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के साइकियाट्रिक विभाग के प्रोफेसर व प्रख्यात मनोचिकित्सक डॉ. राजेश सागर एवं एम्स, नई दिल्ली के ट्रामा सर्जरी की प्रभारी प्रोफेसर (डॉ.) सुषमा सागर का, उनके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में की गई अद्भुत व अविस्मरणीय सेवाओं के लिए ब्रज सेवा संस्थान, वृन्दावन के द्वारा सम्मानित किया गया ।उन्हें यह सम्मान संस्थान के अध्यक्ष डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ,एडवोकेट व उपाध्यक्ष श्रीमती वसुधा गोपाल ने ठाकुर बांके बिहारी महाराज का चित्रपट, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके दिया।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी व श्रीमती वसुधा गोपाल ने कहा कि डॉ. राजेश सागर व उनकी धर्मपत्नी डॉ. सुषमा सागर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान,नई दिल्ली के अत्यन्त सुयोग्य व प्रख्यात चिकित्सक होने के साथ-साथ अत्यधिक सेवाभावी और धर्मनिष्ठ दंपत्ति हैं ।हमारा संस्थान इनको सम्मानित करके स्वयं गौरांवित हो रहा है।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण, इंडियन साइकियाट्रिक सोसाइटी की अध्यक्ष डॉ. सविता मल्होत्रा, VIHBAS, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रोफेसर डॉ. निमेश जी. देसाई, आगरा साइकियाट्रिक सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. जे.पी. नारायण व सचिव डॉ. रंजीत चौधरी, डॉ. रूमा भट्टाचार्य, डॉ. टी.एस.एस. राव, डॉ. सौरभ टंडन व डॉ. मनीष वोरेसी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

नीम की पत्तियों का पानी पीने से दूर होने लगेंगी यह 5 स्वास्थ्य समस्याएं,

सेवन करने का सही तरीका जब इन पत्तियों को पानी में उबालकर पिया जाए, तो शरीर को अंदर से साफ करने का काम करता है. आइए जानते हैं नीम का पानी किन 5 समस्याओं को दूर करने में मदद करता है और इसका सही सेवन तरीका क्या है.

नीम को आयुर्वेद का वरदान माना जाता है. इसकी पत्तियों, छाल और फल सदियों से औषधीय गुणों के लिए इस्तेमाल होते आए हैं. लेकिन, क्या आप जानते हैं कि सिर्फ नीम की पत्तियों का पानी पीने से ही कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं दूर हो सकती हैं? यह एक ऐसा घरेलू उपाय है जो सस्ता, आसान और बेहद असरदार है. नीम की पत्तियों में एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल, एंटीवायरल और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं. जब इन पत्तियों को पानी में उबालकर पिया जाए, तो शरीर को अंदर से साफ करने का काम करता है. आइए जानते हैं नीम का पानी किन 5 समस्याओं को दूर करने में मदद करता है और इसका सही सेवन तरीका क्या है.

नीम का पानी पीने के फायदे

1. डायबिटीज को कंट्रोल करने में मददगार नीम की पत्तियों में ऐसे तत्व होते हैं जो ब्लड शुगर लेवल को बैलेंस करने में मदद करते हैं.रोज सुबह खाली पेट नीम का पानी पीने से इंसुलिन की फंक्शनिंग बढ़ती है और डायबिटीज के मरीजों को राहत मिलती है.

2. स्किन प्रॉब्लम्स जैसे मुंहासे और दाग-धब्बे दूर करें नीम का पानी शरीर को डिटॉक्स करता है, जिससे त्वचा पर जमा गंदगी और टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं. इससे मुंहासे, एलर्जी, खुजली और दाग-धब्बों में सुधार आता है. स्किन नेचुरली ग्लो करने लगती है

3. इम्युनिटी को मजबूत बनाए नीम की पत्तियों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर को संक्रमणों से लड़ने की ताकत देते हैं. बदलते मौसम में सर्दी-खांसी, वायरल फीवर और थकान से बचाव होता है.

4. पाचन तंत्र को दुरुस्त करता है नीम का पानी पेट की गर्मी को शांत करता है और एसिडिटी, कब्ज व गैस जैसी समस्याओं को दूर करता है. यह लिवर को भी साफ करता है, जिससे पाचन बेहतर होता है.

पितरों को भावपूर्ण ,अश्रु-युता विदाई-चिट्ठी ना कोई संदेश ना जाने कौनसा देश जहां तुम चले गए-सर्वपितृ अमावस्या ,की ग्राउंड रिपोर्टिंग व अंतरराष्ट्रीय- स्तरीय विवेचन

वैश्विक भारतीय समुदाय, अंतरराष्ट्रीय मूल भारतीय अपने- अपने पितरों को अंतिम विदाई का भावपूर्ण क्षण

सर्वपितृ अमावस्या सिर्फ एक तिथि अथवा धार्मिक अनुष्ठान नहीं है ;यह उन अनगिनत रिश्तों, यादों और ऋण-भावनाओं का संगम है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तरपर 21 सितंबर 2025 की अमावस्या, जिसे अनेक परंपराओं में सर्वपितृ अमावस्या भी कहा गया,सिर्फ एक तिथि अथवा धार्मिक अनुष्ठान नहीं है;यह उनअनगिनत रिश्तों, यादों और ऋृण- भावनाओं का संगम है जो हम अपने पूर्वजो,माता,पिता,दादा- दादी, नाना-नानी और अन्य पूर्व पीढ़ियों के साथ बाँधे रखते हैं। इस दिन भारत सहित संसार भर के मूल भारतीय और अन्तरराष्ट्रीय मूल के भारतीय (प्रवासी, प्रवासोत्तर पीढ़ियाँ) मिलकर अपने पितरों को भावपूर्ण, अश्रु-युता श्रद्धांजलि देते हैं। यह लेख उसी भाव, रीति- रिवाज़, मान्यताओं और आधुनिक-आध्यात्मिक अर्थों का विस्तृत, शोधप्रधान और सहृदय विवेचन है, जो पारंपरिक भारतीय समाज और विदेशी- पृष्ठभूमि के भारतीय निवासियों द्वारा मनाया जाता है वह चाहे किसी भी देश में हो। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि,अमावस्या के दिन परिवार मिलकर शोक और स्मृति को साझा करते हैं, यह एक निजी और सार्वजनिक दोनों तरह का अनुभव है। भारत में पारंपरिक रूप से यह दिन न केवल घरों में बल्कि नदी, तालाब के किनारे, तीर्थों पर भी मनाया जाता है ।आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि मैंनें 21 सितंबर 2025 की यह अमावस्या की मैंने भारत में ग्राउंड रिपोर्टिंग की तथा सोशल मीडिया के माध्यम से देखा,तो यह स्पष्ट था कि वैश्विक भारतीय समुदाय,लंदन, न्यूयॉर्क, दुबई, सिंगापुर, सिडनी और कनाडा के टोरन्टो तक, अपने-अपने रूपों में अपने पितरों को अंतिम विदाई दे रहे थे। अंतरराष्ट्रीय मूल भारतीयों का भाव एक विशेष साम्य रखता है: दूरस्थता के कारण व्यक्तिगत स्मृतियाँ और पारिवारिक वस्तुएँ, फोटो व कहानियाँ और स्थानीय जगहों पर आयोजित छोटे-छोटे समारोह पितृस्मृति को जीवंत रखते हैं ।अमावस्या पर उमड़ती संवेदना, सहानुभूति और साझा स्मरण,ये भाव न केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित हैं; वे पारिवारिक पुनर्संयोजन, लोकसंगीत,स्मृति-कथाएँ और भोजन के माध्यम से पीढ़ियों के बीच सेतु बनाते हैं।

साथियों बात अगर हम मेरी स्वयं की निगरानी: ग्राउंड रिपोर्टिंग की करें तो मुझे अश्रु-पूर्ण विदाई का सामाजिक अनुभव हुआ। मैंने 21 सितंबर 2025 कीअमावस्या पर संध्या 7 बज़े तक मित्रों के यहाँ जाकर जो दृश्य देखा, सबका अश्रु-पूर्ण विदाई देना,वह भारत की विविधता का सूक्ष्म उद्घाटन था। छोटे-छोटे घर, अपार्टमेंट के लिविंग रूम, महानगर के कॉमन-हॉल और गाँवों के आंगन,हर जगह एक समानता थी:चिर परिचित गहन भाव,अगस्त- सी नमी आँखों में और शब्दों से परे गूँथी हुई स्मृति। कुछ स्थानों पर वृद्धाएँ अपने पुराने सरज़मीन के हावभाव, पुरानी कहानियाँ और दिये हुए संस्कार याद कर रही थीं; युवा पीढ़ी मोबाइल पर दादी-दादाजी की पुरानी आवाज़ सुनाकर परिवार को जोड़ रहे थे ।अमावस्या के दिन का यह दृश्य केवल धार्मिक क्रिया न होकर, सामुदायिक सहानुभूति, सांस्कृतिक साझा स्मृति और सामाजिक समर्थन का प्रतीक बनकर उभरा। यह भावुकता न केवल व्यक्तिगत शोक की अभिव्यक्ति थी बल्कि एक सामूहिक अंतिम-आदर का रूप लेकर राज्य-स्तर, नगर-स्तर और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के जरिए फैला हुआ दिखा।

साथियों बात अगर हम मेरी निजी अनुभूति, मेंरे परिवार का अमावस्या 21 सितंबर शाम 6 बजे की अनुभूति की करें तो मेंरे दादाजी-दादी जी, पिताजी-मम्मी और छोटी बहन हमारे परिवार के 'पितृ' थे और मेंरे उन पन्द्रह दिनों में उनकी उपस्थिति अपने चारों ओर महसूस की थीं। यह तो अपने-अपने भाव हैं, इसे उच्च अनुभूति भाषा में व्यक्त करें तो "उन पंद्रह दिनों के भीतर मेरे घर का प्रत्येक क्षण एक शिष्ट, सुखद और शोक-युक्त स्मृति-आलम्ब बन गया। सुबह का पहला दीप मेरे दादाजी के सिरहाने की याद लेकर आता, उनके मुस्कुराते चेहरे का उदित प्रतिबिंब और संध्या की शंख-पुकार मेरे पिताजीकी गम्भीर परामर्श -आवाज़ की स्मृति जगाती। मेरे घर की दीवारों पर लगे फोटो केवल कागज़ नहीं रहे;वे जीवन के वे उजले अध्याय बन गए, जिन्हें मैं हर सुबह चाय के संग पिघलते हुए अनुभव करता था। उनकी उपस्थिति का आभास, कभी मृदु हवा के झोकों में तो कभी भोजन की खुशबू में आता,और उस अनुभूति ने मुझे बतलाया कि जीव-सम्बन्ध केवल शरीर में नहीं, स्मृति और संस्कार में भी रहते हैं ।मैंने देखा कि श्रद्धा केवल शब्दोंसे परे है,वह कर्मों में बदलकर रह जाती है; वह क्षमाशीलता,दान,और जीवन को सरलता से जीने की साधना बन जाती है।"

साथियों बात अगर हम पितृपक्ष का समापन, जिसे सर्वपितृ अमावस्या कहा जाता है की करें तो,यह एक पौराणिक तथा वैदिक-पुराणिक परिप्रेक्ष्य से गहन अर्थ रखता है। प्राचीन ग्रंथों में पितरों को विशेष स्थान दिया गया है। पितृ, जिन्हें पितरों का कुल अथवा पूर्वज कहा जाता है, को परिवार के उत्थान और धर्म के पालन में उत्तरदायी माना गया है। पुराणिक कथा-परंपराएँ बताती हैं कि पितृ लोक और पृथ्वी के मध्यका वह क्षेत्र है जहाँ पूर्वज अपनी रक्षा और आशीर्वाद प्रदान करते हैं, परंतु उन्हें शांति और मुक्ति के लिए संतोषजनक श्राद्धों/पिण्डदानों की आवश्यकता रहती है। पितृपक्ष के पंद्रह दिनों में परिवार अपने पितरों को आह्वान करके, भोजन- दान, तर्पण, पिण्ड-दान और अनुष्ठान द्वारा उन्हेंसम्मानित करते हैं ताकि उनके पुत्र- पौत्रों पर सुख-शांति बनी रहे। सर्वपितृ अमावस्या को इन पंद्रह दिनों का समापन और अंतिम विदाई माना जाता है, एक तरह से यह 'धर्म, स्मृति और समर्पण' का अंतिम बिंदु है ।सर्वपितृ अमावस्या पर किए जाने वाले मूल अनुष्ठानों का उद्देश्य है,पितरों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति कृतज्ञता, क्षमा, और मंगल-आशीर्वाद प्रार्थना करना।

साथियों बात अगर हम पितृपक्ष यह 'पंद्रह दिनों' की आस्था, अनुभवात्मक और भावनात्मक व्याख्या की करें तो, मैंने जैसा अपने अपने घर में अनुभव तथा मित्रों के घरों में जाकर देखा, पितृपक्ष के पंद्रह दिनों में दौरान कई परिवार अपने पूर्वजो की प्रतिकृतियाँ या फोटो या स्वरुप घर में रखकर सुबह-शाम पूजा करते थे, उनसे संवाद करते हुए भोजन अर्पित करते थे और पशु-पक्षियों को भोज खिलाते थे, यह व्यवहार केवल अनुष्ठानिक क्रिया नहीं, बल्कि रिश्तों और स्मृतियों को बार-बार जीवन में लाने का एक संवेदनशील तरीका है। भावनात्मक भाष्य में इसे इस प्रकार कहा जा सकता है: 'पितृ' हमारा आनुवंशिक, संस्कारात्मक और सांस्कृतिक स्रोत हैं; वे जन्म देने-सम्भालने,निदान-संरक्षण और धार्मिक-सदाचार के मूल रूपों के संवाहक रहे हैं। पितृपक्ष में उनका आगमन प्रतीकात्मक रूप से तब मनाया जाता है जब हम अपने जीवन के उन मूलभूत स्तंभों को स्मरण कर, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और अपने कर्मों, विचारों व भावनाओं में शुद्धिकरण का संकल्प लेते हैं ।व्यवहारिक दृष्टि से पंद्रह दिनों की यह प्रथा, जिसे मैंने अपने घर में व मित्रों द्वारा अपनाया हुआ देखा तो ठोस रूप में तीन कार्य करते हैं: पहला, यह शोक- निवारण और स्मृति-उत्सव का माध्यम है; दूसरा, पारिवारिक कथाएँ, व्यंजनों और रीति- रिवाजों को अगली पीढ़ी तक स्थायी रूप से पहुँचाती है; तीसरा, यह सामाजिक दायित्व (दान, परोपकार) का अवसर देती है। इसलिए इसे केवल अलौकिक मान्यता नहीं, बल्कि पारिवारिक धरोहर और समुदाय- निर्माण की अभिव्यक्ति भी माना जाना चाहिए ।इसलिए पितृपक्ष और सर्वपितृ अमावस्या जैसे संस्कार यह याद दिलाते हैं कि जीवन केवल व्यक्तिगत नहीं,बल्कि एक निरंतर सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मकधारा है। आस्था का अर्थ कट्टर विश्वास नहीं, बल्कि एक ऐसा भाव है जो हमारे मूल्यों, कृतज्ञता और सामाजिक दायित्वों से जुड़ा होता है। आपने अपने मित्रों द्वारा अपनायी गई सरल परन्तु गहन प्रथा देखी,वही सच्ची आत्मीयता है: जो बड़े शहरों की व्यस्तता में भी रौशनी नहीं खोती।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि 21 सितंबर 2025 की वह अमावस्या,जब पितरों को अश्रु-पूर्ण विदाई दी गयी,केवल अंतिम संस्कार या एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं थी;वह एक समस्ती भावनात्मक समारोह था जहाँ स्मृति, कृतज्ञता,क्षमा और आशा एक साथ विहित हुए। सर्वपितृ अमावस्या ने हमें यह सिखाया कि पूर्वजों का स्मरण हमें हमारी जड़े, हमारी जिम्मेदारियाँ और हमारे संस्कार पुनः स्मरण कराता है ।और जब ये परंपराएँ अंतरराष्ट्रीय रूप से, शालीनता और पर्यावरण-ज्ञान के साथ निभायी जाती हैं, तब वे न केवल भारतीय संस्कृति को बनाये रखेंगी, बल्कि वैश्विक समुदाय के सामने उसके सौंदर्य और मानवता के संदेश को भी मजबूती से रखेंगी।

पसीने से सींची धरती, फिर भी अधूरी जिंदगी

धरती की गोद में पसीने की बूँदें जब अन्न की बाली बनकर लहलहाती हैं, तो सभ्यता की नींव को अटल बल मिलता है। ये मेहनतकश हाथ, जो सुबह की पहली किरण के साथ खेतों में उतरते हैं और रात की चाँदनी में उम्मीदों को सींचते हैं, राष्ट्र की भूख मिटाने वाले सच्चे सिपाही हैं। लेकिन विडंबना देखिए, ये छोटे किसान, जिनके कंधों पर देश की खाद्य सुरक्षा टिकी है, अपनी ख्वाहिशों को अधूरा छोड़कर चुपके से दुनिया से विदा ले जाते हैं। एक पक्का मकान, बच्चों की अच्छी तालीम, बेटी की शादी, या बस सम्मान की एक नजर—ये साधारण सपने भारत के ग्रामीण हकीकत की सबसे मार्मिक कहानी बन गए हैं।

छोटे किसान, जिनके पास मुश्किल से एक-दो हेक्टेयर जमीन होती है, अपनी जिंदगी को खेतों की मेड़ों पर बुनते हैं। कृषि मंत्रालय के 2020-21 के आँकड़े बताते हैं कि भारत के 86% किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनके पास 2 हेक्टेयर से कम जमीन है। इनका सपना बस इतना—मेहनत का फल परिवार की मुस्कान बने, बच्चे पढ़-लिखकर बेहतर जिंदगी पाएँ, और घर में दो वक्त की रोटी की कमी न हो। मगर ये सपने मंडी की मार, दलालों की चाल, और सरकारी वादों की अंतहीन कतारों में उलझकर टूट जाते हैं। एनएसएसओ की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, छोटे किसानों की औसत मासिक आय मात्र 10,218 रुपये है, जिसमें से आधा से ज्यादा खेती की लागत और कर्ज की किश्तों में खप जाता है।

खेती की बढ़ती लागत ने छोटे किसानों की कमर तोड़ दी है। बीज, उर्वरक, और कीटनाशकों की कीमतें हर साल आसमान छूती हैं। आईसीएआर के मुताबिक, 2004 से 2020 के बीच उर्वरकों की लागत 300% तक बढ़ी, जबकि फसलों के दाम उस अनुपात में नहीं बढ़े। आधुनिक मशीनें छोटे किसानों के लिए दूर का सपना हैं। जहाँ बड़े किसान ट्रैक्टर और ड्रोन का इस्तेमाल करते हैं, वहीं छोटे किसान हल और बैल के सहारे खेत जोतते हैं। सिंचाई की समस्या अलग मुसीबत है। नीति आयोग की 2023 की रिपोर्ट बताती है कि भारत का 52% कृषि क्षेत्र आज भी बारिश पर निर्भर है। जब बारिश बेवफाई करती है, तो खेत सूख जाते हैं, और उनके साथ किसान के सपने भी मुरझा जाते हैं।

कर्ज की जंजीरों में जकड़ा छोटा किसान, अपने सपनों और सम्मान की तलाश में भटक रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के 2021 के आँकड़े चीख-चीखकर बताते हैं कि हर साल 10,000 से अधिक किसान कर्ज के बोझ तले आत्महत्या कर लेते हैं। बैंक कर्ज की प्रक्रिया इतनी उलझी और धीमी है कि किसान स्थानीय साहूकारों के चंगुल में फँस जाता है, जहाँ 36% से 60% की ब्याज दरें उसे कर्ज के गहरे गड्ढे में धकेल देती हैं। पक्का मकान, बेटी की शादी, या बेटे को डॉक्टर बनाने का सपना इस भूलभुलैया में दम तोड़ देता है।

किसान को समाज 'अन्नदाता' कहता है, मगर उसकी मेहनत को वह सम्मान नहीं मिलता, जिसका वह हकदार है। एनसीआरबी के आँकड़े और अखबारों की सुर्खियाँ किसानों की बदहाली की दास्तान बयाँ करती हैं, पर नीतिगत बदलाव की राह धुंधली रहती है। चुनावी वादों में किसान मुद्दे गूँजते हैं, मगर जमीनी हकीकत में ये वादे खोखले साबित होते हैं। 2022 में केंद्र सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) लागू करने का दावा किया, लेकिन भारतीय किसान यूनियन की रिपोर्ट बताती है कि 70% से ज्यादा छोटे किसानों को उनकी उपज का एमएसपी नहीं मिलता। मंडियों में दलालों और बिचौलियों का जाल आज भी अटूट है।

सरकारी योजनाएँ—किसान क्रेडिट कार्ड, फसल बीमा योजना, या पीएम-किसान सम्मान निधि—कागजों पर चमकती हैं, लेकिन हकीकत में छोटे किसानों तक उनकी रोशनी नहीं पहुँचती। 2023 की कैग रिपोर्ट ने खुलासा किया कि पीएम-किसान योजना का लाभ 20% से ज्यादा पात्र किसानों तक नहीं पहुँचा, क्योंकि आधार कार्ड या बैंक खाते की जानकारी अपडेट नहीं थी। भ्रष्टाचार और जटिल कागजी प्रक्रियाएँ इन योजनाओं को छोटे किसानों के लिए मृगतृष्णा बना देती हैं। नतीजतन, बच्चों को बेहतर शिक्षा या खेतों में नई तकनीक लाने जैसे उनके सपने कागजों में ही सिमटकर रह जाते हैं।

सबसे मार्मिक है ग्रामीण युवाओं का खेती से पलायन। 2021 के एक सर्वे के मुताबिक, 40% से ज्यादा ग्रामीण युवा खेती छोड़कर शहरों में मजदूरी या छोटे-मोटे कामों की ओर जा रहे हैं। छोटा किसान चाहता है कि उसका बेटा खेती से जुड़े, उसकी जमीन पीढ़ियों तक हरी-भरी रहे। मगर आर्थिक तंगी और खेती में घाटे ने इस सपने को भी कुचल दिया है। गाँवों में खेत खाली हो रहे हैं, मेड़ें सूनी पड़ रही हैं। यह पलायन न केवल किसान के सपनों की हार है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा के लिए एक गंभीर संकट है। छोटे किसानों की अधूरी ख्वाहिशें केवल उनकी निजी त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी हैं। किसान की समृद्धि के बिना देश की खाद्य सुरक्षा अधर में लटकी रहेगी। नीति आयोग की 2023 की रिपोर्ट बताती है कि 2030 तक भारत में खाद्य मांग 30% बढ़ सकती है। ऐसे में, छोटे किसानों को सशक्त करना केवल नैतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक अनिवार्यता है।

इन ख्वाहिशों को हकीकत में बदलने के लिए ठोस और त्वरित कदम जरूरी हैं। पहला, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कानूनी गारंटी देकर किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करना होगा। दूसरा, सस्ते कर्ज की व्यवस्था, जिसमें ब्याज दर 4% से अधिक न हो, और ऋण प्रक्रिया को सरल बनाना होगा। तीसरा, ड्रोन, स्मार्ट सिंचाई, और जैविक खेती जैसी आधुनिक तकनीकों की पहुंच बढ़ानी होगी, ताकि लागत कम हो और उत्पादन बढ़े। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएं, जो युवाओं को खेती को आधुनिक, सम्मानजनक और लाभकारी पेशे के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करें। इसके अलावा, समाज की मानसिकता में बदलाव लाना सबसे महत्वपूर्ण है। किसान को केवल गरीब या मजबूर का तमगा देने के बजाय उसे राष्ट्र के आधार और अन्नदाता मानकर सम्मान देना होगा। उनकी मेहनत और योगदान को स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, ताकि नई पीढ़ी उनकी महत्ता को गहराई से समझे।

जब सरकार और समाज मिलकर छोटे किसानों के सपनों को पंख देंगे, तभी उनके खेतों में फसलें ही नहीं, बल्कि समृद्धि और उम्मीद की हरियाली भी लहलहाएगी। यह मेहनतकश अन्नदाता, जो अपने पसीने से धरती को सींचता है, तब तक अधूरा रहेगा, जब तक हम सब उसकी ख्वाहिशों को पूरा करने का संकल्प नहीं लेंगे। यह केवल किसान की कहानी नहीं, बल्कि उस भारत की कहानी है, जिसकी आत्मा गांवों में बसती है। छोटे किसानों के सपनों को साकार करके ही भारत सही मायनों में आत्मनिर्भर और समृद्ध बनेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

झूठे दुष्कर्म के मामलों में पिसता पुरुष समाज

राजेश कुमार पासी

जब दिल्ली में निर्भया कांड हुआ था तो पूरे देश में महिलाओं से होने वाले दुष्कर्म के प्रति गुस्सा भर गया था और जनता सड़कों पर आ गई थी। इस कांड के बाद ही संसद ने ऐसे मामलों को रोकने के लिए सख्त कानून बनाया था लेकिन ऐसे मामले रुक नहीं रहे हैं। दुष्कर्म विरोधी कानून बनाने के बाद महिलाओं से होने वाली दरिंदगी रुकने की बजाये बढ़ गई है। निर्भया कांड से पहले वैसी बर्बरता बहुत कम देखने को मिलती थी लेकिन इस कानून के बाद ऐसी बर्बरता बार-बार हो रही है लेकिन अब जनता को गुस्सा नहीं आता है। ऐसा लगता है कि समाज को ऐसी बर्बरता की आदत पड़ गई है। कोई भी यह विचार करने को तैयार नहीं है कि निर्भया कांड के बाद बने कानून का कोई अच्छा असर हुआ है या नहीं। देखने में आ रहा है कि इस कानून का अच्छा असर हुआ है या नहीं लेकिन बुरा असर जरूर हुआ है। कुछ महीने पहले दिल्ली उच्च न्यायालय ने सूरज प्रकाश नाम के एक व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर खारिज कर दी और कहा कि जिस प्रावधान के तहत एफआईआर दर्ज की गई है, वह महिलाओं के खिलाफ सबसे जघन्य अपराधों में से एक है। अदालत का कहना था कि पुरुषों को अनावश्यक रूप से परेशान करने के लिए यह एक हथियार के रूप में इस्तेमाल हो रहा है। एक ऐसे ही मामले में अदालत ने पाया कि एक 30 साल की महिला ने एक 20 साल के युवा पर यौन-शोषण का आरोप लगाया है जबकि दोनों करीब पिछले चार सालों से लगातार संबंध बना रहे थे। रिश्ता बिगड़ने पर उसने युवक पर दुष्कर्म करने का आरोप लगा दिया और उसके माता-पिता को भी सहआरोपी बना दिया। अदालत को युवक के माता-पिता को आरोपी बनाने पर महिला द्वारा लगाए गए आरोपों की सच्चाई पर शक हो गया। अदालत ने यह कहकर मामला खारिज कर दिया कि आरोपी युवा एक 30 साल की महिला का चार साल तक यौन शोषण कैसे कर सकता है।

ऐसे मामलों की बाढ़ आ गई है जिसमें महिलाएं अपने पुरुष साथी पर शादी का झूठा वादा करके यौन शोषण का आरोप लगा देती हैं और पुरुष वर्षों तक जेल में सड़ता रहता है। मामला झूठा साबित होने में भी कई साल लग जाते हैं और पुरुष तब तक जेल में सड़ता रहता है। वास्तव में आज पुलिस और अदालत इस कानून के दुरुपयोग से अच्छी तरह से परिचित है, इसलिए पुरुषों की बात भी सुनी जाने लगी है। समस्या यह है कि पुरुषों को निचली अदालतों से राहत नहीं मिल रही है। ज्यादातर मामलों में पुरुषों को राहत उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में जाकर ही मिलती है। इस न्यायालय पर सुप्रीम कोर्ट कई बार सवाल खड़े कर चुका है लेकिन निचली अदालतों पर उसका असर नहीं हो रहा है। महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की दृष्टि से देखा जाए तो दुष्कर्म बेहद पीड़ादायक होता है और इससे महिलाओं का उबर पाना बहुत मुश्किल होता है। यह न केवल शारीरिक पीड़ा देकर जाता है बल्कि जीवन भर के लिए मानसिक पीड़ा में तड़पने के लिए महिला को छोड़ जाता है। यही कारण है कि पुलिस-प्रशासन और अदालत ऐसे मामलों को बेहद गंभीरता से लेते हैं। जब कोई महिला किसी पुरुष पर दुष्कर्म का आरोप लगाती है तो उसके बयान को ही अंतिम सत्य मान लिया जाता है। देखा जाए तो दुष्कर्म के मामलों में पुलिस-प्रशासन और अदालतें पुरुषों के प्रति एक पूर्वाग्रह से भरी रहती हैं कि दुष्कर्म का आरोप लगा है तो पुरुष ही दोषी होगा। इसके कारण पुलिस और अदालतें पुरुषों के प्रति संवेदनहीन हो जाती हैं और सही तरीके से जांच भी नहीं होती है। पुलिस पर जल्दी से जल्दी आरोपपत्र दाखिल करने का दबाव होता है ताकि पुरुष को सजा सुनाई जा सके। अगर ऐसा मामला किसी गरीब व्यक्ति के खिलाफ दर्ज हो जाए तो उसकी सारी उम्र जेल में बीत सकती है क्योंकि वो अपने लिए कोई अच्छा वकील भी नहीं कर सकता। सच यह है कि अगर किसी महिला के साथ दुष्कर्म होना बेहद पीड़ादायक है तो किसी पुरुष के ऊपर झूठा दुष्कर्म का आरोप लगना उससे भी ज्यादा पीड़ादायक है। अगर दुष्कर्म महिला को शारीरिक और मानसिक पीड़ा पहुंचाता है तो पुरुष को दुष्कर्म का झूठा केस उससे भी ज्यादा पीड़ा पहुंचाता है।

समस्या यह है कि पुरुष को झूठे मामले में भी निर्दोष साबित होने तक चार-पांच साल या उससे भी ज्यादा जेल में गुजारने पड़ते हैं और जेल से छूटने के बाद भी उसे समाज निर्दोष नहीं मानता। पिछले कुछ वर्षों से शादी का झूठा वादा करके दुष्कर्म करने के आरोपों की बाढ़ आ गई है। ज्यादातर मामलों में पीड़ित और आरोपी लिव इन रिलेशनशिप में रह रहे होते हैं। जब किसी कारणवश शादी नहीं हो पाती है तो लड़कियां अपने प्रेमी पर शादी का झूठा वादा करके संबंध बनाने के आरोप लगा देती हैं। कई मामलों में तो देखा जा रहा है कि लड़का-लड़की कई वर्षों तक साथ रहते हैं और जब उनका रिश्ता किसी कारणवश टूट जाता है तो लड़की बदला लेने के लिए लड़के पर शादी का झूठा वादा करके संबंध बनाने का आरोप लगा देती है। कई मामलों में पुरुष विवाहित होता है तो कई बार दोनों विवाहित होते हैं। इसके बावजूद शादी के नाम पर दुष्कर्म का मामला दर्ज करवा दिया जाता है। शादी के वादे पर किसी के साथ संबंध बनाना दुष्कर्म कैसे हो सकता है लेकिन कानून इस मामले में महिलाओं के साथ है। अगर संबंध सहमति से बन रहे हैं तो फिर दुष्कर्म का केस क्यों दर्ज किया जाता है।

दुष्कर्म सिर्फ जबरन बनाए गए संबंधों को ही माना जाना चाहिए लेकिन कानून की परिभाषा अलग है। ऐसा कोई कानून नहीं है जिसमें महिला शादी का झूठा वादा करके संबंध बनाती है तो उसके खिलाफ केस दर्ज किया जा सके। भारतीय संस्कृति शादी के बाद ही संबंध बनाने की बात करती है। अगर शादी के वादे पर संबंध बनाए जा रहे हैं तो दोनों ही बराबर के दोषी हैं। अब सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे मामलों पर संज्ञान लेते हुए कहा है कि शादी के झूठे वादे पर संबंध बनाना, दुष्कर्म तब ही माना जाएगा जब संबंध बनाने से पहले ही पुरुष की मंशा शादी करने की न हो। अदालत का कहना है कि हो सकता है कि पुरुष शादी करना चाहता हो लेकिन कुछ समय बाद परिस्थितियां बदल गई हों और वो शादी न कर पा रहा हो। अगर उसने कुटिलता से महिला को अपने प्रेम जाल में फंसाकर उसका यौन शोषण किया हो तो ऐसे मामले में ही दुष्कर्म का केस दर्ज किया जाना चाहिए। जिस मामले में यह दिखाई दे रहा हो कि पुरुष की मंशा तो शादी करने की थी लेकिन वो परिस्थितियों के कारण अपना वादा पूरा नहीं कर पा रहा है, उस मामले में पुरुष के खिलाफ मुकदमा नहीं चलाया जाएगा। दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि अगर दो वयस्क (चाहे उनमें से एक शादीशुदा ही क्यों न हो) आपसी सहमति से साथ रहते हैं या संबंध बनाते हैं तो उन्हें इसके परिणाम की जिम्मेदारी भी स्वीकारनी होगी। रिश्ता खराब होने के बाद उसे दुष्कर्म जैसे अपराध में बदलना ठीक नहीं है। अदालत ने नोट किया कि महिला शुरू से ही आरोपित की शादीशुदा स्थिति से वाकिफ थी, फिर भी दो वर्षों तक संबंध रखा। अदालत का कहना था कि किसी के शादीशुदा होने के बावजूद जब कोई शिक्षित महिला अपनी मर्जी से किसी के साथ संबंध बनाती है तो उसे यह भी समझना चाहिए कि ऐसा रिश्ता विवाह में नहीं बदलता, कभी-कभी टूट भी सकता है। ऐसे मामलों में कानून का सहारा नहीं लेना चाहिए। वास्तव में महिलाएं बदला लेने के लिए दुष्कर्म के कानून का इस्तेमाल कर रही हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे मामलों में सतर्कता बरतने के लिए चार कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। हाई कोर्ट के सामने जब ऐसा मामला आएगा तो उसे आरोपी से उसकी बेगुनाही के सबूत मांगने होंगे। सबसे पहले यह देखना होगा कि आरोपी द्वारा पेश किए गये सबूत, गवाह और तर्क विश्वसनीय और अच्छी गुणवत्ता के हैं। दूसरे कदम में हाई कोर्ट को देखना होगा कि इसके आधार पर आरोपी निर्दोष साबित होता है। तीसरे कदम में हाई कोर्ट को देखना होगा कि महिला उन सबूतों को नकारती है या नहीं। चौथे कदम के रूप में हाई कोर्ट को यह देखना होगा कि अगर मामला आगे बढ़ता है तो आरोपी निर्दोष साबित हो सकता है। अगर चारों कदम उठाने के बाद हाई कोर्ट को सकारात्मक जवाब मिलता है तो हाई कोर्ट अपने विशेषाधिकार का इस्तेमाल करते हुए मामले को खारिज कर सकता है। इससे न केवल निर्दोष व्यक्ति बेवजह जेल जाने से बच जाएगा बल्कि पुलिस और अदालत का वक्त भी बर्बाद नहीं होगा।

मेरा मानना है कि यह काफी नहीं है। इस तरह के मामलों पर तब ही लगाम लगाई जा सकती है जब झूठे केस दर्ज करवाने वाली महिलाओं को भी सजा मिले। एक मामले में अदालत ने झूठा केस दर्ज करवाने के बदले में महिला को चार साल के लिए जेल भेज दिया था क्योंकि आरोपी को चार साल तक जेल में रहना पड़ा था। अगर अदालतें झूठे मामले दर्ज करवाने पर सजा देने लगें तो ऐसे मामलों में कमी आ सकती है। मेरा मानना है कि इस कानून में सुधार की बहुत जरूरत है। पुरुषों के खिलाफ कार्यवाही सिर्फ महिला की शिकायत के आधार पर नहीं होनी चाहिए।

अमेरिका का संरक्षणवाद क्या अमेरिकी एकाधिकार को ख़त्म कर देगा ?

पंकज जायसवाल

हाल के वर्षों में अमेरिका ने वैश्विक व्यापार और प्रवासन नीतियों में कड़ा रुख अपनाया है। दरअसल, अमेरिकी प्रशासन ने अपने "अमेरिका फर्स्ट" एजेंडे के तहत बाहरी दुनिया से आने वाले सामान और टैलेंट पर कई तरह की बाधाएं लगाई हैं। एक ओर अमेरिका ने अपने इनलैंड में आयातित सामानों को महंगा करने के लिए टैरिफ बढ़ाए हैं जिससे विदेशी वस्तुएं महंगी हो जाएं और अमेरिकी उपभोक्ता अधिकतर घरेलू उत्पादों की ओर आकर्षित हों। दूसरी ओर, H1B वीज़ा और अन्य कार्य वीज़ाओं की लागत बढ़ाकर अमेरिका बाहर से आने वाले उच्चकुशल टैलेंट के लिए भी बाधाएं खड़ी कर रहा है। इस प्रकार अमेरिका अपने दरवाजे तो बंद कर रहा है, अपने चारों तरफ बैरियर को मजबूत कर रहा है लेकिन इस प्रक्रिया में सवाल यह है कि क्या अपने आपको अलग थलग करने की इस प्रक्रिया में क्या अमेरिका के पास खुद का अपना इतना टैलेंट है? खुद का इतना उत्पादन या अन्य देशों से आयात का विकल्प यदि है तो ठीक है अन्यथा कुछ वर्षों में यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था के एकाधिकार को ख़त्म कर देगा. विश्व इकॉनमी में पुनर्चिन्तन को जागृत कर अमेरिका ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है, यह उपरोक्त सवालों के हाँ या ना के जवाब पर निर्भर करेगा. ऐसा कैसे हो सकता है, इसका विश्लेषण करते हैं.

अमेरिका ने प्रमुख देशों से आयातित सामानों पर टैरिफ बढ़ाकर अपने बाजार को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने का प्रयास किया है। यह कदम अमेरिका के औद्योगिक और विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने की दृष्टि से समझा जा सकता है लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह रणनीति दीर्घकाल में अमेरिका के लिए लाभकारी रहेगी? टैरिफ के कारण अमेरिका में आयात महंगा हो गया है, इससे अमेरिकी कंपनियों के लिए भी कच्चा माल और मशीनरी की लागत बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप उनके उत्पादन की लागत बढ़ी है. इससे केवल अमेरिका में ही नहीं, वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अमेरिकी उत्पाद अन्य देशों के मुकाबले महंगे हो सकते हैं। परिणामस्वरूप अमेरिका में घरेलू महंगाई के साथ उसका निर्यात भी महंगा हो सकता है. अगर अमेरिका के पास इस आयात के बैरियर को रोकने के बाद भी सस्ते आयात या उत्पादन का विकल्प है तो ठीक है अन्यथा यह निर्णय इसके खिलाफ ही जाने वाला है.

H1B वीज़ा महंगा करने से अमेरिका के इनोवेशन और शोध में बाधा आनी ही आनी है. आज अमेरिका का दुनिया में एकाधिकार है. उसके मूल में उसका रिसर्च और इनोवेशन पर निवेश है लेकिन इस क्षेत्र में वह तकनीक और उच्चकुशलता के लिए विदेशी टैलेंट पर निर्भर है। Silicon Valley और अन्य टेक हब में विदेशियों की बड़ी संख्या काम कर रही है। H1B वीज़ा महंगा और कठिन करने का मतलब यह हुआ कि अब कंपनियों को बाहरी टैलेंट ढूंढना मुश्किल होगा। अगर अमेरिका के पास खुद पर्याप्त उच्चकुशल कर्मचारियों का भंडार नहीं है तो यह कदम अमेरिकी नवाचार और तकनीकी विकास को धीमा कर सकता है और उसे तकनीक की सिरमौर स्थिति से नीचे गिरा सकता है।

यह नीति अमेरिका की आत्मनिर्भरता बनाम एकाधिकार की स्थिति में उसके अगुवा की स्थिति में संकट ला सकती है. यह अमेरिका को "आत्मनिर्भर" बनाने की दिशा में एक प्रयास हो सकती है लेकिन इसके साथ ही यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था के वैश्विक एकाधिकार को खतरे में डाल सकती है। यदि अमेरिका को अपने घरेलू संसाधनों और टैलेंट पर भरोसा करना संभव हो तो यह रणनीति सफल हो सकती है लेकिन अगर उत्पादन और कुशल मानव संसाधनों की कमी रही तो कुछ वर्षों में अमेरिकी अर्थव्यवस्था अपनी वैश्विक प्रभुता खो सकती है। उसके पास पहले से चल रहे अपने मेगा इनोवेटिव प्रोजेक्ट पर नए टैलेंट के आने की स्पीड धीमी हो सकती है. अमेरिकी शोध कंपनिया बुरी तरह से प्रभावित होंगी. इससे आउटसोर्स पुनः बढ़ेगा।

अमेरिका की इन नीतियों ने वैश्विक आर्थिक सोच को पुनः जागृत किया है। अन्य देशों को यह स्पष्ट संदेश गया है कि अमेरिका अब अपने हितों को प्राथमिकता देने की ओर बढ़ रहा है। इससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं, निवेश प्रवाह और अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों में बदलाव की संभावनाएं बढ़ गई हैं। कई देशों ने अब अमेरिका पर निर्भरता कम करने और अपनी उत्पादन और तकनीकी क्षमताओं को सुदृढ़ करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है।

अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और विकल्प के नए आयाम बनने शुरू हो गए हैं. यदि अमेरिका के पास पर्याप्त घरेलू उत्पादन और उच्चकुशल मानव संसाधन उपलब्ध हैं तो यह नीति दीर्घकाल में सफल हो सकती है लेकिन यदि विकल्प सीमित हैं और वैश्विक सहयोग और आयात आवश्यक है तो अमेरिका ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। वैश्विक अर्थव्यवस्था अब अमेरिका के संरक्षणवाद और स्वायत्तता की रणनीति को लेकर सतर्क है।

संक्षेप में कहा जाए तो अमेरिका का संरक्षणवाद, टैरिफ और H1B में बाधाएं इस बात पर निर्भर करेगी कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था के पास खुद का पर्याप्त उत्पादन और टैलेंट है या नहीं। यदि है, तो यह कदम अमेरिका को और अधिक आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बना सकता है। यदि नहीं, तो यह अमेरिकी वैश्विक प्रभुता और नवाचार की स्थिति को कमजोर कर सकता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में पुनर्विचार को प्रेरित करने के साथ-साथ यह नीति अमेरिका के लिए दीर्घकालीन चुनौती भी बन सकती है।

अमेरिका के इस कदम से यह सवाल अनिवार्यरूप से उठता है: क्या एक देश अपने दरवाजे बंद कर, बाहरी सहयोग और संसाधनों पर निर्भरता कम करके दीर्घकालिक रूप से स्थिर रह सकता है या यह उसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में कमजोर कर देगा? जवाब हाँ या नहीं में सीमित नहीं है बल्कि यह उस क्षमता और संसाधनों पर निर्भर करेगा जो अमेरिका के पास वास्तव में हैं।

डॉ0 अम्बेडकर संकल्प दिवस - 23 सितंबर 1917
आजाद भारत के महानायक डॉ0 अम्बेडकर का संकल्प

ओ पी सोनिक

भारत में स्कूली जीवन से ही पढ़ाया-सिखाया जाता है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' यानी कि पूरी दुनिया ही एक कुटुम्ब है। दुनिया में मानवता को जिन्दा रखने के लिए इससे बेहतर कोई विचार नहीं हो सकता। फिर क्या कारण हैं कि समुद्र पार की यात्राएं धर्म विरुद्ध घोषित कर दी जाती हैं। जिन विद्यालयों में कुटुम्बकम का पाठ पढ़ाया जाता है, उन्हीं विद्यालयों में अम्बेडकर को सामाजिक अस्पृश्यताओं से जूझना पड़ता है। अम्बेडकर से समय की समस्याएं आजादी के बाद भी समाज में देखी जा सकती हैं। स्कूलों में किसी दलित बच्चे द्वारा मटके से पानी पीने के प्रयासों में शिक्षक द्वारा जातिगत रूप से प्रताड़ित किया जाता है। दलित दूल्हे को घोड़ी पर चढ़ते हुए देखना गंवारा नहीं होता। भारत में दलितों के नरसंहारों का भी अपना इतिहास रहा है। ऐसी तमाम घटनाएं बताती हैं कि भारत में सामाजिक रूप से समता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं हो पा रहे हैं पर यह सच है कि भारतीय समाज में सामाजिक विषमताओं की जड़ें जितनी गहरी हैं, सामाजिक परिवर्तन का इतिहास भी उतना ही पुराना है। बुद्ध से लेकर ज्योतिबा फूले और अम्बेडकर से लेकर कांशीराम ने वंचित वर्गों को सामाजिक विषमताओं से मुक्ति दिलाने के लिए सामाजिक परिवर्तन के संघर्ष को जारी रखा।

किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन की परंपरा को जारी रखने के लिए संकल्पों एवं प्रतिज्ञाओं का अपना महत्व होता है। संकल्प की महत्ता को २३ सितंबर 1917 को वडोदरा में डॉ0 अम्बेडकर द्वारा लिए गए संकल्प से समझा जा सकता है। भारतीय इतिहास में यह दर्ज है कि बचपन से ही उन्हें सामाजिक विषमताओं का सामना करना पड़ा। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद समाज की संकीर्ण मानसिकता ने उन्हें अपमानित करने का काम किया। जब वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत लौटे और बड़ौदा नरेश के साथ हुए समझौते के अनुसार बड़ौदा राज्य में सैनिक सचिव की नौकरी स्वीकार की। बड़ौदा नरेश के फरमान के बावजूद उन्हें न तो शासकीय सम्मान मिला और न ही सामाजिक सम्मान। इतना ही नहीं, जातिवादी व्यवस्था के कारण बड़ौदा में किराए पर मकान नहीं मिल पाया. उस समय अस्पृश्यता की जड़ें लगभग सभी धर्मों से जुड़ी थीं। पारसी के यहाँ उन्हें किराए पर रहने का अवसर तो मिला पर वहाँ भी उन्हें जातीय उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा। डॉ0 अम्बेडकर को यह अनुभव हुआ कि उनकी शिक्षा और योग्यता के बावजूद उन्हें केवल अछूत होने के कारण सामाजिक सम्मान नहीं मिलता। इन्हीं कटु अनुभवों ने उनके भीतर यह दृढ़ निश्चय पैदा किया कि जब तक समाज की संरचना नहीं बदलेगी, तब तक वंचितों के जीवन में परिवर्तन संभव नहीं होगा। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के संकल्प को भारतीय संविधान की रचना करके पूरा किया है।

डा0 अम्बेडकर ने जहाँ सामाजिक परिवर्तन का संकल्प लिया था, उस संकल्प भूमि पर उनके अनुयायी प्रतिवर्ष संकल्प दिवस मनाते हैं। हजारों लोग बगैर किसी आह्वान के इकट्ठा होते हैं और सामाजिक परितर्वन के संकल्प को दोहराते हैं। इस संकल्प भूमि को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक बनाने के सरकारी प्रयास भी जारी है। संकल्प दिवस के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में २३ सितंबर २017 को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने संकल्प भूमि स्मारक का शिलान्यास किया था। 8 जुलाई २०२२ राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण ने भारतीय संविधान के निर्माता एवं महान समाज सुधारक डॉ0 अम्बेडकर से जुड़े दो स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित करने की सिफारिश की थी। वडोदरा स्थित संकल्प भूमि बरगद के पेड़ परिसर जहाँ डॉ0 अम्बेडकर ने २३ सितम्बर 1917 को अस्पृश्यता उन्मूलन का संकल्प लिया था, यह स्थान सौ साल से भी अधिक पुराना है और डॉ0 अम्बेडकर द्वारा सामाजिक परिवर्तन के लिए शुरू किए गए संघर्ष का गवाह रहा है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण ने सतारा स्थित प्रताप राव भोसले हाई स्कूल को भी राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किए जाने की सिफारिश की है। इसी स्कूल में डॉ0 अम्बेडकर ने प्राथमिक शिक्षा पूरी की थी।

गाजा की तबाही और वेस्ट बैंक कब्ज़े के बीच उठी वैश्विक आवाज़

ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया द्वारा २१ सितंबर को फिलिस्तीन को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता देना मध्य पूर्व की भू-राजनीति में एक ऐतिहासिक कदम है। यह फैसला गाजा में दो साल से चल रहे विनाशकारी युद्ध, वेस्ट बैंक में गैरकानूनी इस्राइली बस्तियों के विस्तार और विश्व शांति प्रयासों की असफलता के बीच आया है। यह कदम दो-राष्ट्र समाधान को पुनर्जनन देने का प्रयास है, जो इस्राइल और फिलिस्तीन के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नींव रख सकता है। फिर भी, सवाल यह है: क्या यह प्रतीकात्मक कदम जमीन पर बदलाव ला पाएगा, या केवल कूटनीतिक बयानबाजी तक सीमित रहेगा?

यह मान्यता 1917 के बाल्फोर घोषणापत्र की छाया में देखी जानी चाहिए, जब ब्रिटेन ने फिलिस्तीन में यहूदी राष्ट्रीय घर की स्थापना का समर्थन किया था, साथ ही गैर-यहूदी आबादी के अधिकारों की रक्षा का वचन दिया था। एक सदी बाद, उसी ब्रिटेन ने फिलिस्तीन को राष्ट्र का दर्जा दिया, जिसे कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ने तुरंत समर्थन दिया। यह जी-7 देशों का साझा कदम है, जो अमेरिका—इस्राइल का सबसे मजबूत सहयोगी—की अनुपस्थिति में और भी महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से करीब 75 प्रतिशत पहले ही फिलिस्तीन को मान्यता दे चुके हैं, जिनमें चीन और रूस जैसे सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य शामिल हैं। अब, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के जुड़ने से चार स्थायी सदस्यों का समर्थन मिला है, जो फिलिस्तीन की वैश्विक स्थिति को और मजबूत करता है।

हालांकि, यह मान्यता अभी प्रतीकात्मक है, क्योंकि फिलिस्तीन पूर्ण राष्ट्र नहीं है। इसकी कोई स्पष्ट सीमाएं, स्वतंत्र सेना, या अपनी राजधानी पर नियंत्रण नहीं है। वेस्ट बैंक पर इस्राइली सैन्य कब्ज़ा और गाजा में हमास का प्रभाव इसकी संप्रभुता को सीमित करता है। फिर भी, यह कदम नैतिक और राजनीतिक रूप से शक्तिशाली है। यह संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन की पर्यवेक्षक भूमिका को मजबूत करेगा, राजनयिक कार्यालयों की संख्या बढ़ाएगा, और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर फिलिस्तीनी आवाज को बल देगा। खेल, सांस्कृतिक और वैश्विक आयोजनों में इसकी भागीदारी को और वैधता मिलेगी। सबसे बड़ा प्रभाव इस्राइल पर पड़ेगा, जो अब अंतरराष्ट्रीय अलगाव के कगार पर है।

गाजा में 7 अक्टूबर २०२३ के हमास हमले के बाद शुरू हुआ इस्राइली सैन्य अभियान अब तक 65,000 से अधिक फिलिस्तीनियों की जान ले चुका है, जिनमें ज्यादातर आम नागरिक हैं। संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट बताती है कि गाजा का 90 प्रतिशत हिस्सा विस्थापित है, भुखमरी और बीमारियां फैल रही हैं, और बुनियादी ढांचा पूरी तरह नष्ट हो चुका है। वेस्ट बैंक में इस्राइली बस्तियों का विस्तार—जो अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत गैरकानूनी है—तेजी से बढ़ रहा है। ई-1 परियोजना जैसी योजनाएं वेस्ट बैंक को दो हिस्सों में बांट सकती हैं, जिससे फिलिस्तीनी राज्य की भौगोलिक संरचना खतरे में है। इस पृष्ठभूमि में, यह मान्यता इस्राइली नीतियों पर वैश्विक असंतोष का प्रतीक है। यह कदम गाजा में तत्काल युद्धविराम और मानवीय सहायता की मांग को मजबूत करता है, साथ ही दो-राष्ट्र समाधान की दिशा में नया दबाव बनाता है।

इस्राइल ने इस मान्यता को कड़े शब्दों में खारिज करते हुए इसे "हमास के आतंक को पुरस्कार" करार दिया। उसका तर्क है कि यह कदम हमास को सशक्त करता है और बंधकों की रिहाई को और जटिल बनाता है। इस्राइली नेतृत्व ने पहले फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया पर "यहूदी-विरोधी भावनाओं को भड़काने" का आरोप लगाया था, और अब ब्रिटेन व कनाडा भी इस आलोचना के निशाने पर हैं। यह प्रतिक्रिया इस्राइल की उस रणनीति को उजागर करती है, जो जॉर्डन नदी के पश्चिम में किसी भी फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना को स्वीकार करने से इंकार करती है। वर्तमान में, इस्राइली सरकार वेस्ट बैंक के बड़े हिस्सों को औपचारिक रूप से हड़पने की योजना बना रही है, जिससे दो-राष्ट्र समाधान की संभावनाएं और कमजोर हो रही हैं।

हालांकि, इस्राइल का यह रुख उसे वैश्विक मंच पर और अलग-थलग कर सकता है। फ्रांस, बेल्जियम, लक्जमबर्ग और माल्टा जैसे यूरोपीय देश जल्द ही संयुक्त राष्ट्र में ऐसी ही घोषणाएं कर सकते हैं। यह बदलाव इस्राइल पर गाजा में सैन्य कार्रवाई रोकने और वेस्ट बैंक में बस्तियों के विस्तार को समाप्त करने का दबाव बढ़ाएगा। साथ ही, यह अमेरिका के लिए भी एक चुनौती है, जो अब तक इस्राइल का अटल समर्थक रहा है। अमेरिका ने इस मान्यता को "प्रदर्शनकारी कदम" कहकर आलोचना की है, लेकिन जब उसके जी-7 सहयोगी अलग रास्ता चुन रहे हैं, तो उसे अपनी नीतियों की समीक्षा के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।

यह मान्यता दो-राष्ट्र समाधान को पुनर्जनन दे सकती है, जो 1967 की सीमाओं पर आधारित एक फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना की कल्पना करता है, जिसमें पूर्वी यरुशलम राजधानी हो। फिर भी, कई बाधाएं बरकरार हैं। पहली, हमास का पूर्ण निशस्त्रीकरण, जो इस्राइल और पश्चिमी देशों की प्रमुख शर्त है। दूसरी, फिलिस्तीनी प्राधिकरण की अपनी जमीन और लोगों पर सीमित सत्ता, जो इस्राइली कब्जे और आंतरिक राजनीतिक विभाजन से कमजोर है। तीसरी, फिलिस्तीनी क्षेत्रों में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, जिसमें हमास की कोई भूमिका न हो। चौथी, गाजा में तत्काल मानवीय सहायता और पुनर्निर्माण, जो युद्ध और नाकेबंदी के कारण असंभव-सा प्रतीत होता है।

क्षेत्रीय स्तर पर, यह कदम मध्य पूर्व की गतिशीलता को गहराई से प्रभावित करेगा। ईरान-समर्थित समूह जैसे हिजबुल्लाह और यमन के हूती विद्रोही इसे अपनी जीत मान सकते हैं, जिससे क्षेत्रीय तनाव और बढ़ सकता है। सऊदी अरब और फ्रांस द्वारा प्रस्तावित शांति सम्मेलन अब और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि यह फिलिस्तीनी मुद्दे को वैश्विक मंच पर केंद्र में लाता है। वैश्विक स्तर पर, यह कदम उन दक्षिणपंथी सरकारों को चुनौती देता है जो मानवाधिकारों को नजरअंदाज करती हैं। साथ ही, यह वैश्विक दक्षिण के देशों को प्रेरित करेगा, जो लंबे समय से फिलिस्तीनी संघर्ष का समर्थन करते रहे हैं।

यह सच है कि यह मान्यता मुख्य रूप से प्रतीकात्मक है। गाजा में भुखमरी, वेस्ट बैंक में कब्ज़ा, और इस्राइली बस्तियों का विस्तार तत्काल नहीं थमेगा। फिर भी, यह कदम एक सशक्त नैतिक और राजनीतिक संदेश देता है: विश्व समुदाय अब इस्राइली नीतियों को मूक सहमति नहीं देगा। यह फिलिस्तीनियों को वैश्विक मंच पर नई ताकत प्रदान करता है और इस्राइल को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार के लिए बाध्य करता है। हालांकि, बिना ठोस कदमों—जैसे तत्काल युद्धविराम, बंधकों की रिहाई, नाकेबंदी का अंत, और बस्तियों का ठहराव—यह पहल अधूरी रहेगी। ओस्लो समझौते (1993) और अन्य शांति प्रयासों की असफलता सिखाती है कि विश्वास और कार्यान्वयन के बिना कोई भी कदम फल नहीं ला सकता।

ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया का यह कदम फिलिस्तीनी संघर्ष को वैश्विक केंद्र में लाता है, दो-राष्ट्र समाधान की दिशा में एक नया द्वार खोलता है। यह इस्राइल को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और अलग-थलग करता है, साथ ही अमेरिका पर अपनी नीतियों की समीक्षा के लिए दबाव बढ़ाता है। लेकिन इसकी सफलता तभी संभव है, जब इसके साथ जमीनी कार्रवाई हो—गाजा में तत्काल मानवीय सहायता, वेस्ट बैंक में कब्जे का अंत, और फिलिस्तीनी एकता का निर्माण। यह कदम आशा की एक किरण है, लेकिन बिना कार्यान्वयन के यह केवल शब्दों का खेल बनकर रह सकता है। मध्य पूर्व में शांति अब भी एक दूरस्थ सपना है, पर यह घोषणा उस सपने को हकीकत में बदलने की दिशा में एक साहसी और निर्णायक कदम है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

क्रांति की भ्रांति और राजनीतिक भटकाव के बीहड़ में राहुल गांधी

-हरीश शिवनानी

भारतीय राजनीति में सुर्खियां बटोरने और तात्कालिक फायदों के लिए ग़ैर-जिम्मेदार, विवादास्पद बयानबाजी कोई नई बात नहीं है। विभिन्न दलों के नेतागण समय-समय पर ऐसी बयानबाजी करते रहते हैं जो देश-समाज के लिए घातक साबित होते हैं। लोकसभा 2024 का चुनाव हारने के बाद कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने 'लोकतंत्र को बचाने' और 'संविधान की रक्षा' को जुमलों की तरह इस्तेमाल करते हुए कई मौकों पर अनेक ऐसी विवादास्पद बातें कहीं हैं जो राष्ट्रहितों के विपरीत होती हैं। जब ये बयान युवा पीढ़ी को सीधे संबोधित करते हुए दिए जाते हैं तो वे ज़्यादा गंभीर हो जाते हैं। हाल ही, 18 सितंबर को कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि ₹देश के युवा और छात्र, यानी जेन-जी, संविधान बचाएंगे, लोकतंत्र की रक्षा करेंगे और वोट चोरी रोकेंगे। मैं हमेशा उनके साथ खड़ा रहूंगा।₹ इस बयान के तुरंत बाद राजनीतिक हलकों में तीव्र प्रतिक्रियाओं का उबाल आ गया। इसे नेपाल और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों में युवा-नेतृत्व वाले हिंसक और अराजक आंदोलनों की नकल के रूप में देखा जा रहा है। भाजपा ने इसे देश में अराजकता फैलाने की कोशिश करार दिया है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने आरोप लगाया कि ₹राहुल गांधी भारत में अर्बन नक्सल के रूप में रिएक्ट करते हैं... वे भारत को गृह युद्ध में फंसाना चाहते हैं₹। वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने साफ़ कहा, ₹राहुल गांधी जानबूझकर और योजनाबद्ध तरीके से देश में लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं... वह देश में हिंसा को बढ़ावा देना चाहते हैं₹। राहुल गांधी के उस बयान को लेकर कांग्रेस के भीतर और उसके सहयोगी दलों में भी असहमति के स्वर उभरे हैं। सीपीआई सांसद संदोष कुमार ने राहुल को 'अपरिपक्व और असंवेदनशील' कहा तो एनसीपी नेता सुनील तटकरे ने इसे 'बचकाना' बताया। राहुल गांधी का यह बयान ऐसे समय में आया है जब भारत में 2024 के लोकसभा चुनावों के परिणाम को लेकर उन्होंने बार-बार वोट चोरी के आरोप लगाए हैं। सवाल यह उठता है कि क्या यह ऐसे बयान वास्तव में लोकतंत्र की रक्षा के लिए हैं या केवल राजनीतिक हताशा से उपजे ऐसे कदम, जो भारत की मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर कर सकते हैं? राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोप तथ्यात्मक आँकड़ों के आगे कहीं नहीं ठहरते, क्योंकि अगर भाजपा वोट चोरी कर रही होती, तो वह 272 से अधिक सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत प्राप्त करती, न कि 240 सीटों पर सिमट जाती और न ही अमेठी-अयोध्या जैसी प्रतिष्ठित सीटें हारतीं। वोट चोरी आरोपों का खोखलापन स्वयं कांग्रेस के परिणाम ही नकार रहे हैं। कांग्रेस की सीटें 2019 के 52 से बढ़कर 2024 में 99 हो गईं – क्या भाजपा इतनी अक्षम थी कि वोट चोरी करते हुए भी विपक्ष को लगभग दोगुना सीटें दे दीं? इसी तरह उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सीटें 5 से बढ़कर 37 हो गईं और महाराष्ट्र में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा।

दरअसल राहुल गांधी की सियासी रणनीति भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता को गलत समझने की भूल पर टिकी है, और इसके परिणाम कांग्रेस के लिए गंभीर हो सकते हैं। राहुल का जेन-जी वाला बयान भी भारत की मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं और परिपक्व मतदाता व्यवहार को देखते हुए कांग्रेस के लिए उल्टा असर डाल सकता है। नेपाल और बांग्लादेश के उदाहरण बताते हैं कि ऐसे अराजक आंदोलन कितने विनाशकारी हो सकते हैं। राहुल गांधी भारत के कोई सामान्य नेता नहीं हैं। वे पिछले दो दशकों से राजनीति में सक्रिय रहकर पांचवी बार सांसद बने हैं। उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि इतनी मजबूत है कि वे उस परिवार से आए हैं जिसने देश को तीन प्रधानमंत्री दिए हैं और ख़ुद को भी प्रधानमंत्री पद के दावेदार मानते हैं। विडम्बना यह है कि इतने महत्वपूर्ण तथ्यों के बावजूद राहुल गांधी की राजनीति में गंभीरता और परिपक्वता नहीं झलकती है। प्रभावी पृष्ठभूमि और संवैधानिक पद पर होने के बाद उन्हें मालूम ही नहीं होता कि किस मौके पर उन्हें कहना क्या है। उनकी अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक समझ, वैश्विक बोध की अपरिपक्वता इनके जेन-जी वाले बयान से झलकती है कि अराजक और दिशाहीन युवाओं के उन हिंसक प्रदर्शनों को वे क्रांति समझ रहे हैं, जिन्होंने अपने ही देशों को बर्बादी के कगार पर ला दिया। इक्कीस सालों की राजनीतिक यात्रा के बाद भी सियासी बीहड़ में उनके भटकाव का दौर जारी है। राहुल गांधी का नेपाल जैसी स्थिति की ओर इशारा करना भारत की लोकतांत्रिक परिपक्वता को नजरअंदाज करना है। वे निश्चित रूप से यह भी नहीं जानते कि भारत में आज की युवा पीढ़ी की प्राथमिकताएं रोजगार, शिक्षा और आर्थिक विकास जैसे मुद्दों पर केंद्रित हैं, न कि विवादास्पद राजनीतिक नैरेटिव पर। आज के भारत की जेन-जी टेक्नो-सेवी ही नहीं, काफी तार्किक और विश्लेषणात्मक बैद्धिक कौशल वाली है। वो परिवाद, भ्रष्टाचार, नाटकीय शैली में किये गए खोखले दावों को स्वीकार नहीं करती। राहुल गांधी को युवाओं के जवाब और उनकी प्रतिक्रिया को समझने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब और अब हैदराबाद विश्वविद्यालय छात्र संघों के चुनाव परिणाम महत्वपूर्ण उदाहरण है जहां अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने प्रमुख पद जीते, जबकि एनएसयूआई की करारी हार हुई। आज का युवा अच्छी तरह जानता है कि नेपाल और बांग्लादेश में हाल के राजनीतिक उथल-पुथल के परिणाम हिंसा, अराजकता और आर्थिक तबाही के रूप में सामने आए। इन सबके बावजूद राहुल गांधी अगर जेन-जी की भूमिका की सराहना कर उसे भारतीय व्यवस्था में इस्तेमाल करना चाहते हैं तो यह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता और अगम्भीरता को दर्शाती है।

(स्वतंत्र पत्रकारिता और लेखन)

मृत पेड़ का जीवन

विजय गर्ग

सरीसृप और उभयचर भी एक खोखले लॉग के सुरक्षात्मक कवर से लाभान्वित होते हैं, इसका उपयोग शिकारियों और तत्वों से छिपने के स्थान के रूप में किया जाता है। कीड़े, अपघटन के अनसंग नायक, खस्ताहाल लकड़ी के लिए झुंड, इसे तोड़ और मिट्टी के लिए पोषक तत्वों की वापसी की सुविधा । कवक, अपने नाजुक अभी तक लगातार मायसेलियम के साथ, लॉग के माध्यम से बुनाई, इसके अपघटन में आगे सहायता और महत्वपूर्ण कार्बनिक पदार्थ के साथ वन तल को समृद्ध ।

मृत पेड़, जिन्हें अक्सर स्नैग के रूप में जाना जाता है, वन पारिस्थितिक तंत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां तक कि अपनी गिरती स्थिति में, वन जीवन के जटिल वेब के लिए एक रोड़ा महत्वपूर्ण बना हुआ है। एक खोखला लॉग, जिसे अक्सर एक बार राजसी पेड़ के मात्र अवशेष के रूप में माना जाता है, पारिस्थितिक गतिविधि के हलचल केंद्र में बदल जाता है। खोखले लॉग के भीतर तापमान और आर्द्रता एक अद्वितीय माइक्रोक्लाइमेट बनाते हैं, जो एक स्थिर और संरक्षित वातावरण प्रदान करता है जो सर्दियों के महीनों में विभिन्न प्रजातियों का समर्थन करता है। स्तनधारी, मायावी लोमड़ी से लेकर दुर्जेय भालू तक, अपने मजबूत गले के भीतर या अपनी विशाल जड़ों के नीचे एक छेद में शरण लेते हैं, अपनी संतानों को आराम करने और पीछे करने के लिए एक सुरक्षित मांद पाते हैं। ये पेड़ कठफोड़वा के लिए घोंसले के शिकार स्थल प्रदान करते हैं, जो बाद में अन्य पक्षियों और स्तनधारियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले गुहाएं बनाते हैं।

जंगल में पोषक तत्वों के साइकिल चलाने के लिए मृत पेड़ों की क्षय प्रक्रिया आवश्यक है। जैसे-जैसे कवक और कीड़े मृत लकड़ी को तोड़ते हैं, वे महत्वपूर्ण पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन और फास्फोरस को मिट्टी में वापस छोड़ते हैं। ये पोषक तत्व अन्य पौधों के लिए उपलब्ध हो जाते हैं, उनके विकास और स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। चमगादड़ भी, छत के लिए मृत पेड़ों का उपयोग करते हैं, जबकि उभयचर और सरीसृप खस्ताहाल लकड़ी में आश्रय पाते हैं। अनिवार्य रूप से, मृत पेड़ जीवन के जीवंत हब हैं, जीवों की एक विविध सरणी का समर्थन करते हैं और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हैं।

इसके अलावा, मृत पेड़ अग्रणी प्रजातियों के विकास का समर्थन कर सकते हैं - पौधे जो नए उपलब्ध स्थानों का उपनिवेश करने वाले पहले हैं। ये प्रजातियां, जैसे कि कुछ घास और वाइल्डफ्लावर, मिट्टी को स्थिर करके और स्थापित करने के लिए अधिक जटिल वनस्पति के लिए उपयुक्त स्थितियों का निर्माण करके क्षेत्र के पुनर्वास में मदद करती हैं। जैसे-जैसे ये अग्रणी प्रजातियां बढ़ती और पनपती हैं, वे एक अधिक विविध और जटिल संयंत्र समुदाय के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, अंततः वन पारिस्थितिकी तंत्र के उत्थान और लचीलापन में योगदान देते हैं।

सरीसृप और उभयचर भी एक खोखले लॉग के सुरक्षात्मक कवर से लाभान्वित होते हैं, इसका उपयोग शिकारियों और तत्वों से छिपने के स्थान के रूप में किया जाता है। कीड़े, अपघटन के अनसंग नायक, खस्ताहाल लकड़ी के लिए झुंड, इसे तोड़ और मिट्टी के लिए पोषक तत्वों की वापसी की सुविधा । कवक, अपने नाजुक अभी तक लगातार मायसेलियम के साथ, लॉग के माध्यम से बुनाई, इसके अपघटन में आगे सहायता और महत्वपूर्ण कार्बनिक पदार्थ के साथ वन तल को समृद्ध ।

मृत पेड़ और उनकी सड़ने वाली लकड़ी भी पानी के प्रतिधारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नमी को फंसाकर, वे कटाव को रोकने और वन तल की स्थिरता को बनाए रखने में मदद करते हैं। यह बनाए रखा पानी आसपास के पौधों को आवश्यक नमी प्रदान करता है, जो शुष्क अवधि के दौरान उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, मृत पेड़ कार्बन सिंक के रूप में कार्य करते हैं, कार्बन को अलग करते हैं क्योंकि वे विघटित होते हैं। यह प्रक्रिया जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करते हुए वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को कम करने में मदद करती है। अपनी खस्ताहाल लकड़ी में कार्बन का भंडारण करके, मृत पेड़ पृथ्वी की जलवायु को विनियमित करने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में जंगल की भूमिका में योगदान करते हैं। मृत और जीवित पेड़ mycorrhizal नेटवर्क के माध्यम से जुड़े हुए हैं। कवक और पेड़ की जड़ों के बीच ये सहजीवी संबंध पोषक तत्वों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करते हैं, जिसमें माइकोरिज़ल कवक जीवित पेड़ों की जड़ों को सड़ने वाली लकड़ी से जोड़ता है। यह नेटवर्क जीवित पेड़ों के पोषक अवशोषण को बढ़ाता है, उनके विकास और स्वास्थ्य का समर्थन करता है

क्षय की यह प्रक्रिया केवल एक अंत नहीं बल्कि एक शुरुआत है। जैसा कि रोड़ा धीरे-धीरे विघटित होता है और वन तल पर एक लॉग बन जाता है, यह पोषक तत्वों को जारी करता है जो मिट्टी को पोषण देते हैं, नए पौधों और पेड़ों के विकास को बढ़ावा देते हैं। जीवन का चक्र जारी है, लॉग अतीत और भविष्य के बीच एक पुल के रूप में सेवारत । यह वन तल में नमी के स्तर को बनाए रखता है, एक माइक्रोहैबिट बनाता है जो प्रजातियों की एक विविध सरणी का समर्थन करता है। मॉस और लाइकेन इसकी सतह से चिपके रहते हैं, जो जीवन के समृद्ध टेपेस्ट्री को जोड़ते हैं जो लॉग में और उसके आसपास पनपते हैं।

इस तरह, एक खोखला लॉग बेजान से दूर है। यह प्रकृति के लचीलेपन और परस्पर जुड़ाव का एक वसीयतनामा है, यह दर्शाता है कि मृत्यु में भी जीवन है। जंगल, अपने असंख्य निवासियों के साथ, अपने नाजुक संतुलन को बनाए रखने के लिए इन गिरे हुए दिग्गजों पर निर्भर करता है। प्रत्येक रोड़ा एक अनुस्मारक है कि प्राकृतिक दुनिया के हर तत्व का एक उद्देश्य है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के समग्र स्वास्थ्य और जीवन शक्ति में योगदान देता है। इसलिए, अगली बार जब आप जंगल में एक रोड़ा का सामना करते हैं, तो छिपे हुए जीवन की सराहना करने के लिए एक क्षण लें और यह जीवन के चक्र में आवश्यक भूमिका निभाता है। कई संस्कृतियों में, मृत पेड़ गहरा प्रतीकात्मक अर्थ रखते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ स्वदेशी संस्कृतियां उन्हें प्राकृतिक दुनिया में नवीकरण और निरंतरता के प्रतीक के रूप में देखती हैं। ये संस्कृतियां पहचानती हैं कि मृत्यु में भी, पेड़ जीवन के चल रहे चक्र में योगदान करते हैं, सभी जीवित चीजों के परस्पर जुड़ाव को मजबूत करते हैं। प्रत्येक खोखले लॉग एक अनुस्मारक है कि प्राकृतिक दुनिया के हर तत्व का एक उद्देश्य है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के समग्र स्वास्थ्य और जीवन शक्ति में योगदान देता है।

पेड़ की मृत्यु कोई अंत नहीं है, बल्कि एक परिवर्तन है जो नए जीवन को ईंधन देता है और जंगल के स्वास्थ्य को बनाए रखता है। इस अवधारणा को उनकी पुस्तक, द हिडन लाइफ ऑफ ट्रीज़ में वनपाल और लेखक पीटर वोहलेबेन ने सबसे प्रसिद्ध रूप से खोजा है। जबकि पुस्तक का शीर्षक जीवित पेड़ों पर केंद्रित है, Wohlleben मृत पेड़ों के महत्व पर महत्वपूर्ण ध्यान समर्पित करता है, या स्नैग (मृत पेड़ खड़े) और स्लॉग (गिरे हुए पेड़), जंगल के जटिल नेटवर्क में जीवन। यहाँ मृत पेड़ों के स्जीवनस पर एक नज़र है:

पर्यावास और आश्रयः मृत पेड़ वन्यजीवों की एक विशाल सरणी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। जैसे ही लकड़ी नरम होती है, यह कठफोड़वा और अन्य स्प्राथमिक गुहा घोंसलेस के लिए अपने घोंसले के लिए छेद की खुदाई करने के लिए एक आदर्श स्थान बन जाता है। इन परित्यक्त गुहाओं का उपयोग तब स्माध्यमिक गुहा घोंसलेस जैसे उल्लू, चमगादड़ और गिलहरी द्वारा किया जाता है। ढीली छाल कीड़ों के लिए छिपने की जगह और चमगादड़ों के लिए विश्राम स्थल प्रदान करती है।

पोषक साइकिलिंगः अपघटन की प्रक्रिया जंगल के जीवन चक्र का एक मूलभूत हिस्सा है। कवक, बैक्टीरिया और कीड़े (डेट्रिवोरेस) लकड़ी के सेल्यूलोज और लिग्निन को तोड़ते हैं, जो कार्बन, नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे आवश्यक पोषक तत्वों को मिट्टी में लौटाते हैं। यह समृद्ध मिट्टी फिर पेड़ के रोपाई सहित नए पौधों के विकास का समर्थन करती है। गिरे हुए लॉग अक्सर स्नर्स लॉगस बन जाते हैं, जो नए पेड़ों को अंकुरित करने के लिए एक नम, पोषक तत्वों से भरपूर बिस्तर प्रदान करते हैं।

खाद्य स्रोतः अपघटन प्रक्रिया एक खाद्य वेब बनाती है। लकड़ी-बोरिंग कीड़े, कवक और अन्य अकशेरुकी जो मृत लकड़ी का उपनिवेश करते हैं, पक्षियों, स्तनधारियों और अन्य शिकारियों के लिए एक खाद्य स्रोत बन जाते हैं। जीवन की यह जटिल श्रृंखला पूरे जंगल में जैव विविधता का समर्थन करती है।

जल और मृदा प्रबंधनः मृत पेड़ कई मायनों में वन तल को प्रभावित करते हैं। वे प्राकृतिक बांधों के रूप में कार्य करके क्षरण को कम कर सकते हैं, और उनकी खस्ताहाल लकड़ी में पानी होता है, जो मिट्टी की नमी को विनियमित करने में मदद करता है। यह उभयचरों और अन्य प्राणियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिन्हें नम वातावरण की आवश्यकता होती है।

कार्बन भंडारणः अपने जीवन के दौरान एक पेड़ द्वारा अवशोषित कार्बन की एक महत्वपूर्ण मात्रा मरने के बाद भी इसकी लकड़ी में संग्रहीत रहती है। जैसा कि पेड़ धीरे-धीरे विघटित होता है, इस कार्बन को धीरे-धीरे पर्यावरण में वापस छोड़ दिया जाता है, लेकिन इसका एक हिस्सा मिट्टी में भी शामिल किया जाता है, जहां यह दशकों या सदियों तक रह सकता है। संक्षेप में, एक मृत पेड़ एक अपशिष्ट उत्पाद नहीं है, बल्कि एक स्वस्थ, कामकाजी पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है। निवास स्थान, साइकिल चलाने के पोषक तत्व प्रदान करके, और भौतिक वातावरण को प्रभावित करके, स्मृत पेड़ों का जीवनस जंगल में जीवन की निरंतर और परस्पर प्रकृति को प्रदर्शित करता है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

क्या फेरोमोन मानव आकर्षण को नियंत्रित करते हैं

विजय गर्ग

मानव आकर्षण में फेरोमोन की भूमिका वैज्ञानिक समुदाय में एक जटिल और अत्यधिक बहस वाला विषय है। जबकि फेरोमोन को कई जानवरों की प्रजातियों में एक संचार उपकरण के रूप में अच्छी तरह से स्थापित किया जाता है, मानव व्यवहार पर उनका प्रभाव पूरी तरह से समझ में नहीं आता है, और साक्ष्य को अक्सर कमजोर या अनिर्णायक माना जाता है। यहां प्रमुख बिंदुओं का टूटना हैः 1. फेरोमोन क्या हैं? फेरोमोन जीवों द्वारा स्रावित रासायनिक पदार्थ होते हैं जो एक ही प्रजाति के अन्य सदस्यों में एक विशिष्ट सामाजिक या व्यवहार प्रतिक्रिया को ट्रिगर करते हैं। पशु साम्राज्य में, वे संभोग, मनोदशा और अन्य व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए जाने जाते हैं। 2. साक्ष्य और अनुसंधान

वोमेरोनासल ऑर्गन (VNO): कई जानवरों में, एक विशेष अंग जिसे वोमरोनसल अंग (VNO) कहा जाता है, फेरोमोन का पता लगाने के लिए जिम्मेदार है। जबकि एक वीएनओ अधिकांश वयस्क मनुष्यों में मौजूद है, इसे आमतौर पर कीमोथेरेपी के लिए वेस्टिगियल और गैर-कार्यात्मक माना जाता है। यह इस बारे में एक महत्वपूर्ण सवाल उठाता है कि अगर वे मौजूद हैं तो मनुष्य फेरोमोन का पता कैसे लगाएगा। हालांकि, कुछ शोधकर्ताओं का सुझाव है कि नियमित घ्राण प्रणाली की तरह अन्य संवेदी प्रणालियां शामिल हो सकती हैं।

विवादास्पद अध्ययनः कुछ अध्ययनों से पता चला है कि मानव पसीने और अन्य शारीरिक तरल पदार्थों में पाए जाने वाले कुछ रसायन, जैसे एंड्रोस्टेनोन और एस्ट्रेटेनॉल, मूड और आकर्षण को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ शोध बताते हैं कि महिलाओं के मूड और आकर्षण की धारणा एंड्रोस्टेनोन से प्रभावित हो सकती है, खासकर ओव्यूलेशन के दौरान।

गंध और आकर्षणः इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि शरीर की गंध, जो आनुवांशिकी, आहार और स्वास्थ्य से प्रभावित होती है, यौन आकर्षण में भूमिका निभाती है। यह अक्सर मेजर हिस्टोकम्पैटिबिलिटी कॉम्प्लेक्स (एमएचसी) जीन से जुड़ा होता है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण हैं। अध्ययनों से पता चला है कि लोग विभिन्न एमएचसी जीन वाले लोगों के शरीर की गंध की ओर आकर्षित होते हैं, जिससे अधिक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली के साथ संतान हो सकती है। जबकि यह रासायनिक संचार का एक रूप है, यह एक एकल, प्रजातियों के व्यापक संकेत के क्लासिक अर्थ में कड़ाई से स्फेरोमोनस नहीं है।

अनुसंधान में चुनौतियांः मानव फेरोमोन का अध्ययन करना मुश्किल है। बदबूदार अणुओं की एक विशाल संख्या है जो मनुष्य छोड़ देते हैं, जिससे विशिष्ट फेरोमोन की पहचान करना कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त, उनकी कार्यप्रणाली के लिए कई पुराने अध्ययनों की आलोचना की गई है, और उनके परिणामों को प्रश्न में बुलाया गया है। 3. फैसला हालांकि यह अत्यधिक संभावना है कि रासायनिक संकेत सूक्ष्म तरीकों से मानव व्यवहार और आकर्षण को प्रभावित करते हैं, यह विचार कि मनुष्यों को विशिष्ट, शक्तिशाली फेरोमोन द्वारा नियंत्रित किया जाता है उसी तरह कीड़े या कुछ स्तनधारियों को निर्णायक वैज्ञानिक साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं किया जाता है। एक मानव फेरोमोन प्रणाली का अस्तित्व अभी भी अप्रमाणित है, और कई विशेषज्ञ विषय पर विभाजित हैं। अंत में, जबकि मानव फेरोमोन की अवधारणा एक लोकप्रिय है, विशेष रूप से स्फेरोमोन इत्रस जैसे उत्पादों के लिए विपणन में, कोई निश्चित वैज्ञानिक सहमति नहीं है। मानव आकर्षण पर गंध का प्रभाव जटिल है, संभावना एक सरल, सार्वभौमिक फेरोमोन प्रतिक्रिया के बजाय व्यक्तिगत 'गंध प्रिंट' और सीखा संघों के संयोजन को शामिल करती है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

डिजिटल दिवाली

विजय गर्ग

डिजिटल दिवाली प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करके रोशनी के पारंपरिक त्योहार को मनाने का एक आधुनिक और पर्यावरण के प्रति जागरूक तरीका है। यह डिजिटल युग की प्रतिक्रिया है, आधुनिक सुविधा के साथ पारंपरिक रीति-रिवाजों का संयोजन और पर्यावरण और सामाजिक जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करना। डिजिटल दिवाली के प्रमुख पहलूः

इको-फ्रेंडली सेलिब्रेशनः डिजिटल दिवाली के लिए एक बड़ी प्रेरणा पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना है। इसमें कागज कार्ड के बजाय डिजिटल अभिवादन और आतिशबाजी को प्रदूषित करने के बजाय आभासी पटाखों और प्रकाश व्यवस्था का उपयोग करना शामिल है।

प्रियजनों के साथ जुड़नाः प्रौद्योगिकी परिवार और उन दोस्तों के साथ जश्न मनाना संभव बनाती है जो बहुत दूर हैं। इसमें शामिल हैः

वीडियो कॉलः ज़ूम, गूगल मीट और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग आभासी पारिवारिक समारोहों, साझा भोजन और सामूहिक प्रार्थना या पूजा करने के लिए किया जाता है।

ई-बधाई और संदेशः लोग सोशल मीडिया, ईमेल और मैसेजिंग ऐप के माध्यम से व्यक्तिगत ई-कार्ड, वीडियो संदेश और उत्सव की शुभकामनाएं भेजते हैं।

आभासी गतिविधियाँ और मनोरंजनः डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म मनाने के लिए इंटरैक्टिव और रचनात्मक तरीकों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैंः

डिजिटल डायस और रंगोलीः ऐसे ऐप और वेबसाइट हैं जो आपको वर्चुअल डायस को हल्का करने या डिजिटल रंगोली डिजाइन बनाने की अनुमति देते हैं।

ऑनलाइन प्रतियोगिताएं और खेलः कंपनियां और व्यक्ति एक दिवाली थीम के साथ आभासी रंगोली प्रतियोगिताओं, जातीय पहनने के फैशन शो और तंबोला (भारतीय बिंगो) जैसे ऑनलाइन गेम की मेजबानी करते हैं।

लाइवस्ट्रीमिंगः मंदिर और सांस्कृतिक संगठन अक्सर आरती और अन्य उत्सव की घटनाओं को लाइवस्ट्रीम करते हैं, जिससे लोग घर से भाग ले सकते हैं।

डिजिटल उपहार और खरीदारीः डिजिटल दुनिया ने उपहार देने के पारंपरिक अभ्यास को बदल दिया हैः

ऑनलाइन शॉपिंगः ई-कॉमर्स ने त्योहार के लिए उपहार, सजावट और मिठाई खरीदना आसान बना दिया है।

ई-वाउचर और ई-उपहारः डिजिटल उपहार कार्ड और वाउचर उपहार का आदान-प्रदान करने का एक लोकप्रिय और सुविधाजनक तरीका है।

कॉर्पोरेट और ब्रांड अभियानः कई व्यवसाय अपने विपणन अभियानों के लिए डिजिटल दिवाली की अवधारणा का लाभ उठाते हैं, अक्सर एकजुटता, स्थिरता और कनेक्ट करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इन अभियानों में उपयोगकर्ता-जनित सामग्री, प्रतियोगिता और भावनात्मक कहानी शामिल हो सकती है। डिजिटल दिवाली एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है कि कैसे एक गहरा पारंपरिक त्योहार मनाया जाता है, जो अधिक टिकाऊ दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए 21 वीं शताब्दी की सुविधा और कनेक्टिविटी के साथ सदियों पुराने रीति-रिवाजों का सम्मिश्रण करता है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य

क्यों छात्रों को काउंसलिंग के दौरान नीट रैंक से परे देखना चाहिए

विजय गर्ग

छिपे हुए कारकों पर एक नज़र जो छात्रों को चिकित्सा परामर्श प्रक्रिया के दौरान विचार करना चाहिए

हर साल, नीट के हजारों लोग परीक्षा में अपनी रैंक के आधार पर जीवन को परिभाषित करने वाले विकल्प बनाते हैं। हालांकि रैंक मायने रखती है, यह एक मेडिकल कॉलेज या पाठ्यक्रम का चयन करने के लिए एकमात्र मापदंड होने दे सही नहीं है । कई कारक हैं जिन्हें अधिक सूचित, अच्छी तरह से गोल विकल्प बनाने के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए। यहां कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है

राज्य कोटाः यह परामर्श में सबसे कम उपयोग किए जाने वाले कारकों में से एक है। अधिकांश छात्र केवल अखिल भारतीय रैंक पर विचार करते हैं कि अधिवास की स्थिति उनके अवसरों को कैसे प्रभावित करती है। राज्य परामर्श सत्रों में अखिल भारतीय कोटा की तुलना में कम कटऑफ रैंक होती है, विशेष रूप से कम आवेदकों या नए संस्थानों वाले राज्यों में। यदि कोई छात्र किसी विशिष्ट राज्य की अधिवास शर्तों के अनुसार पात्र है, तो यह प्रवेश की संभावनाओं को काफी बढ़ा सकता है।

बांड और सेवा दायित्वोंः कुछ सरकारी कॉलेजों, विशेष रूप से ग्रामीण या अल्पसेवित क्षेत्रों में, एक अनिवार्य सेवा की आवश्यकता है कि छात्र को एक विशिष्ट अवधि के लिए सरकारी अस्पताल में काम करने की आवश्यकता होगी, पर्याप्त दंड के साथ अगर वह चूक करता है । इसलिए, एक कॉलेज के लिए साइन अप करने से पहले, छात्र को बांड अवधि, सेवा स्थान और दंड शुल्क की समीक्षा करनी होगी। एक अच्छी सीट पर दीर्घकालिक प्रतिबंध हो सकते हैं जो छात्र के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं।

बुनियादी ढांचा और गुणवत्ताः एक कॉलेज जो छात्रों को उच्च रैंक के साथ ले जाता है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह विश्व स्तरीय सुविधाएं या संकाय प्रदान करता है। वर्तमान छात्रों से परामर्श करें, एनएमसी निरीक्षण रिपोर्ट खोजें, या कॉलेज पर विचार करने से पहले वास्तविकता जानने के लिए तृतीय-पक्ष समीक्षा पढ़ें।

शुल्क और रहने की लागतः निजी और मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों में ट्यूशन फीस अधिक हो सकती है। कई छात्र बेंगलुरु या मुंबई जैसे शहर में रहने की लागत में भी कारक बनने में विफल रहते हैं। कुल लागत - ट्यूशन, हॉस्टल, और अन्य शुल्क, भोजन, परिवहन और अन्य रहने के खर्च - एक कॉलेज पर निर्णय लेने से पहले कुल गणना की जानी चाहिए। एक छोटे शहर में एक सरकारी कॉलेज एक बड़े शहर में एक महंगे निजी कॉलेज पर एक समझदार निर्णय हो सकता है।

नैदानिक जोखिमः यह चिकित्सा अध्ययन का भवन खंड है और प्रसिद्ध अस्पतालों से संबद्ध संस्थान नैदानिक और रोगी प्रबंधन कौशल सीखने के लिए अधिक जोखिम प्रदान करते हैं। ऐसे संस्थान चुनें जहां छात्रों के पास रोगियों के लिए दैनिक संपर्क, उच्च रोगी प्रवाह और विभिन्न चिकित्सा मामलों के संपर्क में है।

भविष्य की विशेषज्ञता के अवसरः कुछ कॉलेजों को अनुसंधान, पीजी तैयारी, या सर्जरी, बाल रोग, या मनोरोग जैसी विशिष्टताओं के लिए जाना जाता है। इसलिए, निर्णय लेने में दीर्घकालिक लक्ष्यों पर विचार करें। प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में पीजी के लिए लक्ष्य रखने वालों को एक मजबूत शैक्षणिक संस्कृति और अच्छे समर्थन वाले कॉलेज की तलाश करनी चाहिए। एनईईटी पीजी या आईएनआई-सीईटी जैसे पीजी परीक्षा में किन कॉलेजों को उत्कृष्ट बनाया गया है, यह जानने के लिए मेंटर्स या पूर्व छात्रों से बात करें।

भाषा और संस्कृतिः स्थानीय भाषा को जाने बिना एक राज्य में होना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, न केवल शिक्षाविदों के संदर्भ में, बल्कि नैदानिक पोस्टिंग करते समय और रोगियों के साथ बातचीत करते समय भी। यदि आप अपने अलावा किसी अन्य राज्य के कॉलेज पर विचार कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप स्थानीय भाषा को जल्दी से सीखने के लिए तैयार हैं। याद रखें, नीट रैंक एक प्रवेश टिकट है, पूरी कहानी नहीं। एक अच्छे कॉलेज का चयन करने में शैक्षणिक, वित्तीय, सामाजिक और कैरियर विचार शामिल हैं। इसलिए, एक अनुकूलित परामर्श योजना का निर्माण करें जो छिपे हुए लेकिन महत्वपूर्ण चर को ध्यान में रखता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

युग चेतना जगाने वाले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

-संदीप सृजन

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो ,किसने कहा, युद्ध की बेला चली गयी, शांति से बोलो ?

इन ओजस्वी पंक्तियों से जनमानस में चेतना जगाने वाले रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य के उन युग-प्रवर्तक कवियों में से हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना को जीवंत किया। उनकी रचनाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं को प्रेरित किया और राष्ट्रवाद की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से सम्मानित दिनकर की रचनाएँ ओज, विद्रोह और जागृति का प्रतीक हैं। आधुनिक हिंदी काव्य में वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता रवि सिंह और माता मनरूप देवी थीं। मात्र दो वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से उनका बचपन अभावों में बीता, लेकिन इसने उनके व्यक्तित्व को और निखारा। दिनकर ने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास और राजनीति विज्ञान में स्नातक किया और संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी तथा उर्दू भाषाओं का गहन अध्ययन किया। उनकी रचनाएँ उस दौर की प्रतिनिधि हैं, जब भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष कर रहा था।

रामधारी सिंह दिनकर का जीवन संघर्षों की गाथा है। सिमरिया गांव में जन्मे दिनकर की प्रारंभिक शिक्षा गांव के पाठशाला में हुई, जहाँ उन्होंने संस्कृत और हिंदी का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया। पिता की मृत्यु के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई, लेकिन उनकी माता ने उन्हें शिक्षा की ओर प्रेरित किया। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री हासिल करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक बने, लेकिन उनका मन साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन की ओर अधिक झुका। 1934 से 1947 तक वे बिहार सरकार में सब-रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक के पद पर कार्यरत रहे। इस दौरान उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई और अपनी रचनाओं से जनता को जागृत किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दिनकर का करियर नई ऊँचाइयों पर पहुँचा। 1950 से 1952 तक वे मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज में हिंदी विभाग के

अध्यक्ष रहे। 1952 में वे राज्यसभा सदस्य चुने गए और तीन बार (1952-1964) संसद में रहे। 1963 से 1965 तक भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में उन्होंने शिक्षा जगत में योगदान दिया। बाद में भारत सरकार के हिंदी सलाहकार के रूप में कार्य किया।

दिनकर का व्यक्तित्व विरोधाभासों से भरा था, जो उन्हें एक अनोखा कवि बनाता है। स्वभाव से वे सौम्य, मृदुभाषी और शांत थे, लेकिन जब बात देश के हित की आती थी, तो वे बेबाक और आक्रामक हो जाते थे। वे राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे और मानते थे कि साहित्य समाज का दर्पण होना चाहिए। मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बावजूद वे गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाते थे। उनका व्यक्तित्व क्रांतिकारी था; वे स्वतंत्रता पूर्व विद्रोही कवि के रूप में जाने जाते थे और बाद में राष्ट्रकवि बने।

उनके व्यक्तित्व में कोमलता और कठोरता का मिश्रण था। उनकी रचनाओं में वीरता के साथ-साथ प्रेम और करुणा की भावनाएँ भी झलकती थीं। वे सामाजिक असमानता, जातिवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ आवाज उठाते थे। दिनकर का मानना था कि कवि का दायित्व है कि वह समाज की कुरीतियों को उजागर करे। उनके मित्रों और समकालीनों के अनुसार, दिनकर सरल जीवन जीते थे और कभी घमंड नहीं करते थे। संसद में उनके भाषण राष्ट्रीय एकता और हिंदी भाषा के प्रचार पर केंद्रित होते थे। दिनकर का व्यक्तित्व राष्ट्रीय चेतना के उस युग का प्रतिबिंब है, जहाँ कवि शब्दों से क्रांति लाता था। उनकी लेखनी में सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति गहरी संवेदनशीलता थी, जो उन्हें जनता का प्रिय बनाती थी।

दिनकर का कृतित्व हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने 17 काव्य संग्रह, 10 गद्य पुस्तकें और 5 बाल साहित्य की रचनाएँ कीं। उनकी भाषा सरल, ओजपूर्ण और प्रभावशाली थी, जिसमें छंद और अलंकारों का सुंदर प्रयोग था। उनकी रचनाएँ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत थीं और बाद में भी सामाजिक जागृति का माध्यम बनीं। उनके निबंध राष्ट्रीय एकता, भाषा और साहित्य की भूमिका पर केंद्रित थे। बाल साहित्य में भी उन्होंने योगदान दिया, जो बच्चों में राष्ट्रीय भावना जगाने वाला था। दिनकर को कई पुरस्कार प्राप्त हुए: पद्म भूषण, ज्ञानपीठ और भागलपुर विश्वविद्यालय से एल.एल.डी. की मानद उपाधि। उनका कृतित्व राष्ट्रीय चेतना के युग का दर्पण है, जहाँ साहित्य समाज को दिशा देने का साधन बना।

राष्ट्रीय चेतना के युग में दिनकर की भूमिका अपरिमेय है। उनकी रचनाएँ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान युवाओं को प्रेरित करती थीं। वे गांधीजी के अनुयायी थे। दिनकर ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी में इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उनकी रचनाओं ने क्षेत्रीय और भाषाई विविधताओं के बावजूद राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया। दिनकर सामाजिक न्याय के पक्षधर थे और दलितों, किसानों की पीड़ा को अपनी रचनाओं में स्थान देते थे।

उनका योगदान केवल साहित्यिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी था। संसद में उनके भाषण हिंदी भाषा और राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते थे। उनकी रचनाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को बल दिया, बल्कि स्वतंत्र भारत में सामाजिक सुधार और एकता के लिए भी प्रेरणा दी। दिनकर का साहित्य आधुनिक भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जहाँ साहित्य ने राजनीतिक और सामाजिक जागृति पैदा की।

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य के सूर्य हैं, जिनकी रचनाएँ आज भी राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित करती हैं। उनका व्यक्तित्व विद्रोही और सौम्य का संयोग था, जबकि उनका कृतित्व ओज और भावना का संगम। उनकी रचनाएँ स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत के निर्माण तक एक सेतु की तरह हैं। दिनकर की विरासत युवा पीढ़ी को प्रेरित करती है कि साहित्य समाज को बदल सकता है। उनकी मृत्यु के पांच दशक बाद भी उनकी रचनाएँ प्रासंगिक हैं, जो राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक गौरव की मांग करती हैं। दिनकर सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय चेतना के युग कवि हैं, जिनका योगदान अमर है।दिनकर की मृत्यु 24 अप्रैल 1974 को चेन्नई में हुई। उनकी जीवन से स्पष्ट है कि वे एक शिक्षक, प्रशासक, राजनीतिज्ञ और कवि के रूप में बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। राष्ट्रीय चेतना के युग में उनका जीवन भारत की आजादी की लड़ाई से गहराई से जुड़ा रहा।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार और स्तम्भकार हैं)

नवरात्रि पर्व भारतीय संस्कृति और आस्था का एक अनुपम उत्सव है

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

नवरात्रि पर्व भारतीय संस्कृति और आस्था का एक अनुपम उत्सव है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि शक्ति, श्रद्धा और सकारात्मकता का प्रतीक है। माँ दुर्गा को शक्ति स्वरूप मानकर उनकी उपासना करने से जीवन में साहस, संतुलन और मंगल का संचार होता है। नवरात्रि के नौ दिन शक्ति के नौ रूपों की साधना और आराधना के लिए समर्पित हैं। इन दिनों में साधक आत्मशुद्धि, आत्मबल और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्राप्त करता है। नवरात्रि मिलन, उत्साह और एकता का भी पर्व है। नौ दिनों तक चलने वाले व्रत, गीत, गरबा और दुर्गा पूजा समाज को जोड़ते हैं। यह पर्व स्त्री-शक्ति के महत्त्व और उसके पूजन की परंपरा को उजागर करता है, जिससे मनुष्य जीवन में श्रद्धा और संतुलन बना रहता है। नवरात्रि हमें यह सिखाती है कि जब भी जीवन में अंधकार या कठिनाई आए, तो साहस, निष्ठा और विश्वास से हम हर संकट का सामना कर सकते हैं। माता रानी सभी भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करें।

...और "द वर्निंग ट्रेन" बनने से बच गया टाटा सुपरफास्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, हावड़ा-नई दिल्ली रेल मार्ग पर सोमवार को बड़ा हादसा झारखंड में टल गया, जब टाटा 18184 सुपरफास्ट ट्रेन की एक बोगी में अचानक आग लग गई। घटना जामताड़ा जिले के कालाझरिया रेलवे ट्रैक के पास हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बोगी से अचानक धुआं और आग की लपटें निकलने लगीं, इससे यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। लोग ट्रेन से बाहर कूदने लगे।लोको पायलट ने सूझबूझ दिखाते हुए ट्रेन को तुरंत रोक दिया और यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। करीब 45 मिनट तक ट्रेन खड़ी रही, इस दौरान रेलवे स्टाफ ने फायर एक्सटिंग्विशर से आग पर काबू पाया।रेलवे स्टाफ ने तत्काल फायर एक्सटिंग्विशर की मदद से आग पर काबू पाया। मौजूद रेलवे अधिकारी के मुताबिक, बोगी के अंडर-गियर से चिंगारी उठने के कारण आग लगी थी। इस घटना से यात्री घबरा गए और बोगियों से कूदने लगे। जामताड़ा स्टेशन पर पहुंचने के बाद ट्रेन की पूरी जांच की गई। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि घटना की विस्तृत जांच की जा रही है और यात्रियों की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त सतर्कता बरती जाएगी।

पजामा संभलता कोन्या, शौक बन्दूकां का राख्खें

सुशील कुमार 'नवीन'

हरियाणवी में एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि सूत न कपास, जुलाहे गेल लट्ठम लठ। अर्थात ख़ुद के पास कुछ भी नहीं है, दूसरों से उलझते फिरें। एक बार राह चलते एक व्यक्ति जान बूझकर दूसरे से टकरा गया। यही नहीं बहस कर उसे ललकारने भी लगा। जिससे टकराया था वो बात को बढ़ाना नहीं चाहता था, सो बात को वहीं ख़त्म कर निकल रहा था, पर टकराने वाला तो हर हाल में लड़ने की तैयारी में था। बहस बढ़ने लगी। बात हाथापाई तक पहुंच गई। थप्पड़ मुक्का जोर पकड़ने ही वाले थे कि जानबूझकर टकराने वाला बोला- तुझे थोड़ी सी शर्म नहीं आती जो भूखे आदमी से लड़ रहा है। दम है तो पहले कुछ खिला पिला,फिर लड़के दिखा।

इंसानियत की भावना दिखाते हुए पहले उसे पेटभर खिलाया गया। खाना पेट में जाते ही टोन बदल गई और वो फिर गाली गलौज करने लगा। इस पर दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। कभी वो ऊपर तो कभी वो नीचे। इसी दौरान उसका कुर्ता कुर्ता फट गया। फटा तो वो वैसे ही पहले से पड़ा था। कुर्ता फटते ही नया ड्रामा शुरू कर दिया। ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। कहा - अब क्या पहनूंगा, मेरे पास तो यही कुर्ता था। दूसरा बोला- कोई बात नहीं, पहले लड़ाई कर ले, फिर तेरे कुर्ते का भी इंतजाम करेंगे।

लड़ाई फिर शुरू हो गई। अबकी बार छलनी स्टाइल बनियान के चीथड़े उड़ गये। रोना फिर शुरू हो गया। बोला- कुर्ते के साथ बनियान दोगे तो ही लड़ूंगा। यह भी स्वीकार हो गया। थोड़ी देर बाद ज़ोर आजमाइश हुई तो इस बार पाजामे का नाड़ा टूट गया। उसने फौरन कहा कि लड़ाई तो रोकनी होगी,मेरे पाजामे का नाड़ा टूट गया है। थोड़ी देर रुको, मैं अभी पाजामा बदलकर आया। दूसरे ने कहा कि कोई बात नहीं, चड्डी पहन रखी होगी। लड़ाई के बाद पाजामा बदल लेना। जवाब दिल दहलाने वाला था। बोला- यहां खाना तो मांग-मांगकर खाना पड़ रहा है। चड्डी कहां से खरीदूं?

दूसरे ने फौरन उसके दो धरे और यह कहकर भगा दिया कि जब खाने को रोटी नहीं है, पहनने को चड्डी नहीं है। तो लड़ना ज़रूरी है क्या। भीख मांग, भीख। आप भी सोच रहे होंगे कि कहानी किस संदर्भ में सुनाई गई है तो सुनें। एशिया कप में भारत-पाकिस्तान का रविवार का मैच तो आपने ज़रूर देखा होगा। ख़िसियानी बिल्ली खंभा नोचे की कहावत पूरे मैच में लगातार देखने को मिली। बार-बार ऐसी हरकतें की गई कि भारतीय खिलाड़ी अपना संयम खो दें। बैट को बंदूक के रूप में चलाने का साइन किसी सीधी छेड़ से कमतर नहीं था। इसके बाद बैटिंग के दौरान शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा से उलझना साफ दिखा रहा था कि ये पूरी प्लानिंग के साथ आज मैदान में आए थे कि किसी तरह बात बिगड़े और हमारी इज्जत रह जाए।

इतिहास गवाह है कि जब-जब भारत-पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच हुआ है। वो एक मैच न होकर मैदान-ए-जंग बना है। पाकिस्तान निचले पायदान की टीम से हार जाए सहन हो जायेगा,पर भारत से हार सहन नहीं होगी। तोड़ फोड़ होगी, गाली गलौज तो सामान्य बात ही है।

रविवार को दोनों के बीच दुबई में एशिया कप में दोबारा आमना-सामना हुआ, नतीजा वही। अभिषेक शर्मा और शुभमन गिल ने ऐसा ठठा-ठठाकर मारा कि दर्द कई दिन तक नहीं जाएगा। ख़ास बात ये दर्द घाव पर मिर्च छिड़कने जैसा था। हालांकि उनके लिए ये अब कोई नई बात नहीं है। इस तरह की बेइज्जती तो वे कई बार करवा चुके हैं। भारत ने इन्हें हर जगह मात दी है। चाहे खेल का मैदान हो या फिर लड़ाई का। साइकिल ढंग से चलानी नहीं आती हो तो, लंबोर्गिनी चलाने के सपने नहीं देखने चाहिए। ख़ेल के मैदान में ताकत खेलकर ही दिखाई जाती है। हरकतों से नहीं। बच्चों की बंदूकों से बच्चे ही डरते हैं, बड़े नहीं। सूर्या भाऊ ने मैच के बाद जो बात कही है वो और भी बिल्कुल सही बैठती है कि मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस करने आए सूर्या ने साफ-साफ कह दिया कि भारत और पाकिस्तान के बीच अब कोई प्रतिद्वंद्विता (राईवलरी) नहीं है। सूर्या की यह बात भी सही है। मुकाबला तो बराबर वालों में ही होता है। इसलिए पहले पाकिस्तान क्रिकेट में भारत के बराबर बने, फिर कोई बात हो।

संवाद हीनता: परिवार और समाज की चुनौती

"खामोशी का असर: परिवार और समाज पर संवादहीनता का बोझ"

आज के व्यस्त और डिजिटल जीवन में संवादहीनता परिवार और समाज की बड़ी चुनौती बन गई है। बातचीत की कमी भावनात्मक दूरी, गलतफहमियाँ और मानसिक तनाव बढ़ाती है। परिवार में बच्चे और बड़े एक-दूसरे की भावनाओं को साझा नहीं कर पाते, जबकि समाज में सहयोग और सामूहिक प्रयास कमजोर पड़ते हैं। इसका समाधान नियमित संवाद, साझा गतिविधियाँ, सकारात्मक सुनना और डिजिटल सीमाएँ तय करना है। संवादिता केवल बातचीत नहीं, बल्कि विश्वास, समझ और संबंधों की नींव है। इसे प्राथमिकता देकर हम परिवार और समाज को मजबूत और भावनात्मक रूप से स्वस्थ बना सकते हैं।

- डॉ सत्यवान सौरभ

आज का समय बहुत तेजी से बदल रहा है। तकनीकी प्रगति और व्यस्त जीवनशैली ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसके साथ ही एक गंभीर समस्या भी सामने आई है – संवाद हीनता। संवाद हीनता का अर्थ है बातचीत और विचारों के आदान-प्रदान की कमी। यह केवल शब्दों की कमी नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जिसमें लोग अपनी भावनाओं, समस्याओं और अनुभवों को साझा नहीं कर पाते। परिवार, मित्रता और समाज सभी पर इसका गहरा असर पड़ता है।

परिवार जीवन का वह आधार है जहाँ बच्चे और बड़े अपने अनुभव साझा करते हैं और आपसी समझ विकसित करते हैं। लेकिन आज, व्यस्त जीवन, डिजिटल साधनों का अधिक प्रयोग और पीढ़ियों के अंतर ने पारिवारिक संवादिता को कमजोर कर दिया है। माता-पिता अपने काम और जिम्मेदारियों में इतने व्यस्त रहते हैं कि बच्चों के साथ समय बिताना मुश्किल हो जाता है। वहीं, बच्चे स्कूल, कोचिंग और मोबाइल की दुनिया में उलझे रहते हैं। परिणामस्वरूप, घर में बैठकर खुलकर बातचीत करना लगभग कम होता जा रहा है।

डिजिटल दुनिया ने जीवन को आसान बनाया है, लेकिन इसके दुष्परिणाम भी हैं। स्मार्टफोन, टीवी और सोशल मीडिया ने परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से दूर कर दिया है। युवा सदस्य अधिक समय इन माध्यमों में व्यतीत करते हैं और आमने-सामने संवाद कम हो जाता है। ऐसे संवाद अक्सर सतही हो जाते हैं और भावनाओं की गहराई को व्यक्त नहीं कर पाते।

पीढ़ियों का अंतर भी संवाद में बाधा डालता है। बुजुर्ग अनुभव और परंपरा पर भरोसा करते हैं, जबकि युवा आधुनिक दृष्टिकोण और स्वतंत्रता की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। यह अंतर कभी-कभी परिवार में गलतफहमी और असहमति को जन्म देता है। छोटे-छोटे झगड़े या आलोचना भी भावनात्मक दूरी बढ़ा देती है और परिवार में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है।

संवाद हीनता केवल परिवार तक सीमित नहीं है। समाज में भी लोग अपनी राय, शिकायत या सुझाव साझा नहीं करते। इससे सहयोग और सामूहिक प्रयास कमजोर पड़ते हैं और गलतफहमियाँ बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी मोहल्ले में सफाई या सुरक्षा संबंधी समस्या को साझा नहीं किया जाता, तो समाधान कठिन हो जाता है और विवाद पैदा हो सकते हैं।

संवाद हीनता के कई कारण हैं। व्यस्त जीवनशैली, डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग, डर या शर्म की भावना, मानसिक तनाव, सामाजिक दूरी और पीढ़ियों के बीच अंतर—ये सभी मिलकर लोगों को खुलकर संवाद करने से रोकते हैं। इसके नकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर दिखाई देते हैं। व्यक्ति में अकेलापन और मानसिक तनाव बढ़ता है, आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है। परिवार में विश्वास और समझ की कमी होती है। समाज में सहयोग और सामूहिक प्रयास कम हो जाते हैं।

इस समस्या को दूर करने के लिए कुछ उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, नियमित संवाद का समय निर्धारित करना जरूरी है। परिवार के साथ भोजन, चाय या वीकेंड पर बातचीत को प्राथमिकता दी जा सकती है। दूसरी महत्वपूर्ण बात है सुनने और समझने की आदत। आलोचना से बचकर, एक-दूसरे की बात ध्यानपूर्वक सुनना और समझना संवादिता को बढ़ाता है। तीसरी बात है साझा गतिविधियों का महत्व। खेल, यात्रा, हॉबीज़ या सामाजिक कार्यों में परिवार और दोस्तों को शामिल करने से संवाद प्राकृतिक रूप से बढ़ता है।

डिजिटल उपकरणों का संतुलित उपयोग भी जरूरी है। मोबाइल और टीवी से समय निकालकर आमने-सामने बातचीत को प्राथमिकता देना चाहिए। साथ ही, अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करना भी आवश्यक है। डर या शर्म के कारण अपनी भावनाओं को दबाना संवादिता को और कमजोर करता है। बच्चों को भी अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संक्षेप में, संवादिता जीवन का वह आधार है जो रिश्तों, विश्वास और सहयोग को मजबूत करती है। संवाद हीनता केवल बातचीत की कमी नहीं है, बल्कि परिवार और समाज की संरचना को प्रभावित करने वाली गंभीर समस्या है। इसे समय रहते पहचानना और समाधान करना आवश्यक है। खुली बातचीत, सकारात्मक सुनना और साझा गतिविधियाँ न केवल परिवार और समाज को मजबूती देती हैं, बल्कि व्यक्तिगत विकास और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं।

आज की चुनौती यह है कि हम अपनी व्यस्तता, डिजिटल साधनों और पीढ़ियों के अंतर के बावजूद संवादिता को प्राथमिकता दें। संवादिता ही वह माध्यम है जो हमें एक-दूसरे के करीब लाती है, समझ को गहरा करती है और समाज में सामूहिक सहयोग को बढ़ावा देती है। परिवार और समाज तभी सशक्त रह सकते हैं जब संवादिता मौजूद हो और इसे बढ़ावा दिया जाए। यही हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता और जिम्मेदारी है।

प्रज्ञान को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

25 सितम्बर को हमारे सुपुत्र चि. प्रज्ञान 'सौरभ' का दूसरा जन्मदिन है। प्रिय प्रज्ञान को आकाश भर अनन्त शुभकामनाएँ। ईश्वर की कृपा और आप सबकी दुआएँ सदैव हम पर बनी रहें।

❀ शुभकामना-पुष्प ❀

जन्मदिन की बधाइयाँ, करें पुत्र स्वीकार,
है सबकी शुभकामना, खुशियाँ मिलें हजार।।
बहुत-बहुत शुभकामना, तुमको प्रियवर आज,
हो प्रशस्त जीवन सुखद, सुन्दर साज समाज।।
जीवन भर मिलती रहें, खुशियाँ सदा अपार,
मात शारदे आपके, भरें ज्ञान भण्डार।।
शुभ सरिता बहती रहे, जीवन हो सत्संग,
घर आँगन खिलते रहें, प्रेम-प्रीति के रंग।।
धर्म-कर्म अध्यात्म का, सदा करें उत्थान,
लक्ष्य प्राप्ति हेतु अनवरत, बढ़े सौरभ प्रज्ञान।।
जीवन भर प्रज्ञान को, खुशियाँ मिलें अपार,
बुजुर्ग शुभ आशीष दें, बाँटे लाड-दुलार।।
उन्नति पथ बढ़ते रहो, स्वप्न करो साकार,
ईश्वर की कृपया रहें, खुशियाँ मिलें अपार।।

आज हुआ दो वर्ष का, हर्षित है प्रज्ञान।
दे रहे दुआएँ सभी, बनी रहे मुस्कान।।
प्रिय प्रज्ञान, तुम्हारे जीवन में खुशियों की पतंग सदा ऊँची उड़ती रहे और मां वागीश्वरी का आशीष तुम्हें निरंतर ज्ञान और संस्कार से आलोकित करता रहे।

- डॉ. सत्यवान सौरभ/डॉ. प्रियंका सौरभ

हिंदी टीवी चैनलों से उर्दू शब्द हटाने का विवाद, भाषा का स्वाभाविक प्रवाह या जबरन शुद्धिकरण?

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

भारतीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा सितंबर 2025 में कुछ प्रमुख हिंदी टीवी न्यूज़ चैनलों,आजतक, एबीपी न्यूज़, ज़ी न्यूज़, टीवी9 भारतवर्ष और टीवी18,को जारी किया गया नोटिस एक बार फिर भाषा, संस्कृति और पहचान की बहस को केंद्र में ले आया है। मंत्रालय का निर्देश है कि इन चैनलों पर लगभग 30% तक उर्दू शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, और इन्हें प्रसारण से हटाने की आवश्यकता है। यह कदम महाराष्ट्र निवासी एस.के. श्रीवास्तव की शिकायत पर आधारित है, जिन्होंने आरोप लगाया था कि हिंदी चैनल दर्शकों के साथ धोखा कर रहे हैं, क्योंकि "हिंदी समाचार" के नाम पर उर्दू का इस्तेमाल किया जा रहा है।पर सवाल यह है कि क्या वास्तव में हिंदी और उर्दू को इस तरह कठोर और यांत्रिक तरीके से अलग किया जा सकता है?भाषा का इतिहास और साझा विरासत हिंदी और उर्दू कोई दो पूरी तरह अलग भाषाएँ नहीं हैं। इनकी जड़ें हिंदुस्तानी परंपरा में हैं, जो सदियों से भारतीय समाज के संवाद, कविता, गद्य और संगीत में व्याप्त रही है। उर्दू के प्रभाव में आए शब्द,जैसे सियासत, इंसाफ, तन्हाई, अजीब, अहवाल,आज सामान्य हिंदी भाषण में इतने सहज़ हैं कि उन्हें विदेशी नहीं, बल्कि अपनी भाषा का हिस्सा माना जाता है। हिंदी के प्रसार और स्वीकृति में यही सहजता इसकी ताक़त रही है।शब्दों पर रोक लगाने की कोशिश उस स्वाभाविक मिश्रण को तोड़ती है, जिसने हिंदी को जीवंत और व्यवहारिक बनाए रखा है। यह मान लेना कि हिंदी बिना उर्दू शब्दों के पूर्ण या सरल रहेगी, एक भाषाई भ्रम से अधिक कुछ नहीं।उर्दू मीडिया की स्थिति उल्लेखनीय है कि भारत में कई ऐसे अख़बार आज भी प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें लगभग पूरा संवाद और लेखन उर्दू लिपि और शब्दावली में होता है,उर्दू टाइम्स, दैनिक आफ़ताब कश्मीर, हिंद समाचार और कश्मीर उज़मा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह उपस्थिति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि उर्दू केवल जीवित ही नहीं, बल्कि अपनी साहित्यिक और सामाजिक भूमिका के साथ सक्रिय भी है। यदि उर्दू मीडिया अपने पाठक वर्ग के लिए स्वाभाविक रूप से चल सकता है, तो हिंदी मीडिया को उर्दू शब्दों से बचने की अनिवार्यता थोपना वास्तव में भाषायी विविधता पर गहरा प्रहार प्रतीत होता है।टीवी चैनलों की मुश्किलें यदि मंत्रालय का निर्देश कठोरता से लागू होता है, तो टीवी न्यूज़ चैनलों के सामने गंभीर चुनौतियाँ खड़ी होंगी।हिंदी समाचार की शैली में प्रचलित कई सामान्य शब्दों का स्थानापन्न खोजना कठिन होगा।समाचार भाषा का प्रभावी संचार टूट जाएगा और वाक्य संरचना अप्राकृतिक लगेगी।संस्कृतनिष्ठ या अत्यधिक शुद्ध शब्दों का प्रयोग सामान्य दर्शकों को दूर कर सकता है।दरअसल, पत्रकारिता का उद्देश्य संचार है, न कि किसी भाषा को कृत्रिम रूप से शुद्ध करना।बहस के दोनों पक्ष भाषाई शुद्धता के पक्षधर यह मानते हैं कि हिंदी को एक "स्वतंत्र" भाषा के रूप में सामने आना चाहिए और इसके लिए उर्दू मूल के शब्दों का प्रयोग कम होना आवश्यक है। उनका तर्क है कि यह न केवल भाषा की पहचान को मज़बूत करेगा बल्कि हिंदी बोलने वालों को भाषाई आत्मविश्वास प्रदान करेगा।विरोधी पक्ष का कहना है कि हिंदी और उर्दू का सहअस्तित्व भारतीय बहुसांस्कृतिक वास्तविकता का प्रतीक है। यदि उर्दू शब्दों पर पाबंदी लगती है, तो यह केवल भाषाई नहीं, बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक विभाजन को बढ़ावा देगा। साथ ही यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी सवाल खड़े करता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भाषा को कृत्रिम रूप से बाँधना उस संवाद प्रक्रिया को बाधित कर सकता है, जिसकी नींव ही स्वतंत्रता पर टिकी है।स्थायी समाधान की राहस्पष्ट है कि मंत्रालय का यह क़दम केवल कानूनी कार्रवाई तक सीमित मुद्दा नहीं है। यह व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रश्न से जुड़ा है। भाषा जो स्वभाव से प्रवाहित और लचीली होती है, उसे जबरन सीमाओं में बाँधना किसी स्थायी समाधान की ओर नहीं ले जाएगा।औपचारिक प्रतिबंध और आदेश इस बहस को और तीखा कर सकते हैं, लेकिन समाधान तभी निकलेगा जब सभी पक्ष,नीति निर्माता, मीडिया संस्थान, विद्वान और सामान्य नागरिक,मिलकर खुला संवाद करें। हिंदी और उर्दू दोनों की ऐतिहासिक साझेदारी को स्वीकार करते हुए एक ऐसी राह तलाशनी होगी, जिसमें भाषा न सिर्फ़ ₹शुद्ध₹ बल्कि समावेशी, जीवंत और संवादशील बनी रहे। सूचना मंत्रालय द्वारा जारी किया गया यह नोटिस केवल तकनीकी निर्देश नहीं है, बल्कि भाषा के सामाजिक अस्तित्व पर एक चुनौती है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हम हिंदी को किस राह पर ले जाना चाहते हैं,क्या एक ऐसी भाषा के रूप में, जो जबरन शुद्धिकरण से अपनी सहजता खो दे, या एक ऐसी भाषा के रूप में, जो विविधता को आत्मसात करके और समृद्ध होकर आगे बढ़े।भारतीय वास्तविकता यह बताती है कि हिंदी की ताकत उसके उर्दू, फारसी, अंग्रेज़ी और दर्ज़नों अन्य स्रोतों से मिले शब्दों के मेल-जोल में है। इस ताकत को ही उसका भविष्य बनाना होगा।अब देखना होगा कि टीवी चैनलों पर किस तरह इन आदेशों का पालन हो सकेगा।

झारखंड में दो साल का बच्चा नाले में बहा पांच किलोमीटर दुर तालाब में मिला शव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के गिरिडीह जिले में नाले में बहे दो साल के बच्चे का शव रविवार को एक तालाब के पास से बरामद किया गया। गिरिडीह के एसपी विमल कुमार ने बताया कि बच्चे की पहचान गिरिडीह के मंगरोडीह निवासी दीपक ठाकुर के बेटे अंकुश ठाकुर के रूप में हुई है। शनिवार शाम परिवार बच्चे के साथ गांधी चौक के पास खरीदारी करने के लिए आई थी।पुलिस अधिकारी ने कहा कि बच्चे की मां के बयान के अनुसार वे नाले के किनारे चल रहे थे। इसी बीच बच्चा फिसलकर नाले में चला गया और बारिश के कारण तेज बहाव में बह गया। प्रशासन ने नाले के ढक्कन हटाने के लिए जेसीबी मशीनें तैनात कीं और तलाशी अभियान शुरू किया, जो देर रात तक जारी रहा।सुबह फिर से तलाशी अभियान शुरू किया गया और आखिरकार लगभग दोपहर 12 बजे गिरिडीह के डाकीटांड तालाब के पास एक खेत में उसका शव मिला। यह उस जगह से लगभग पांच किलोमीटर दूर है, जहां बच्चा नाले में फिसला था। करीब 16 घंटे के बचाव अभियान के बाद बच्चे का शव मिला। पुलिस अधिकारी ने कहा कि बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिए गिरिडीह सदर अस्पताल भेज दिया गया है।

फाइल फोटो

हालांकि, गिरिडीह नगर आयुक्त प्रशांत लायेक ने बच्चे के नाले में फिसलने पर आश्चर्य व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह एक ढका हुआ नाला था। पुलिस और हमने सीसीटीवी फुटेज खंगाली ताकि पता चल सके कि बच्चा सचमुच नाले में फिसला था या नहीं। हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

नई पीढ़ी और विकसित भारत के निर्माताओं के लिए एक उपहार: मनमोहन सामल

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर : आज पवित्र नवरात्रि का पहला दिन है। आज से ओडिशा और पूरे देश में नए जीएसटी सुधार के लागू होने से न केवल जीएसटी दर या कर में कमी आएगी, बल्कि यह एक ऐतिहासिक कदम है जो आम आदमी के जीवन में बदलाव लाएगा। प्रदेश अध्यक्ष श्री मनमोहन सामल ने कहा, ₹मैं राज्य की जनता की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। श्री सामल ने कहा कि नई पीढ़ी के जीएसटी सुधार देशवासियों को लगभग 2 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करेंगे और भारतीय अर्थव्यवस्था को एक मजबूत बढ़ावा और गति प्रदान करेंगे।

जीएसटी श्रेणी में लगभग 99 प्रतिशत वस्तुएँ, जो पहले 12 प्रतिशत की दर पर थीं, को घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है और लगभग 90 प्रतिशत वस्तुएँ, जो 28 प्रतिशत की दर पर थीं, को घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया है। इससे उपभोक्ता बचत बढ़ेगी, आवश्यक वस्तुओं की कीमतें कम होंगी और घरेलू मांग मजबूत होगी। गरीबों, किसानों, मध्यम और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को काफी राहत मिलेगी। कृषि उपकरण, सिंचाई उपकरण, छोटे ट्रैक्टर जैसे कई कृषि उपकरणों पर दर कम कर दी गई है और 5 प्रतिशत जीएसटी लगाया जाएगा, जिससे कृषि व्यय कम होगा। स्वास्थ्य और जीवन बीमा पर जीएसटी पूरी तरह से हटा दिया गया है, और कैंसर और अन्य गंभीर पुरानी बीमारियों और चिकित्सा उपकरणों के लिए जीएसटी को पूरी तरह से छूट दी गई है। इससे आम आदमी को बहुत फायदा होगा, श्री सामल ने कहा। जीएसटी 2.0 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आर्थिक सुधारों का एक हिस्सा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 11 वर्षों में भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी और सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन गया है। रिकॉर्ड विदेशी निवेश के साथ व्यापार और रोज़गार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बुनियादी ढाँचे में क्रांतिकारी प्रगति हुई है। राष्ट्रीय राजमार्गों का 60% से अधिक विस्तार, 20 से अधिक शहरों में मेट्रो रेल, 150 से अधिक हवाई अड्डे, वंदे भारत और अमृत भारत जैसी ट्रेनों का आधुनिकीकरण। डिजिटल इंडिया और यूपीआई क्रांति ने इसे दुनिया की सबसे बड़ी डिजिटल लेनदेन वाली अर्थव्यवस्था बना दिया है। डीबीटी या प्रत्यक्ष बैंक जमा ने बिचौलियों/दलालों की भूमिका को समाप्त कर दिया है और सरकारी खजाने से 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि के डायवर्जन को रोक दिया है। आत्मनिर्भर भारत और पीएलआई योजनाओं के कारण रक्षा, मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण में भारी वृद्धि हुई है। गरीब कल्याण योजना ने करोड़ों परिवारों का जीवन बदल दिया है। खाद्य सुरक्षा योजना के तहत 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया गया है, आयुष्मान भारत योजना के तहत 50 करोड़ नागरिकों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की गई है, करोड़ों परिवारों को उज्ज्वला योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत रसोई गैस मिली है। 14 करोड़ शौचालयों ने स्वच्छता और सम्मानजनक जीवन प्रदान किया है। स्टार्टअप इंडिया और मुद्रा योजना ने उद्यमियों को नई गति दी है और भारत में सौ से अधिक यूनिकॉर्न उद्यमी स्थापित हुए हैं। कोविड महामारी के बाद, भारत दुनिया में सबसे तेज़ गति से अपनी अर्थव्यवस्था को समायोजित करने में सक्षम रहा है। इस जीएसटी सुधार से भारत की अर्थव्यवस्था और प्रगतिशील होगी, निवेशकों का विश्वास मजबूत होगा और विकसित भारत 2047 तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। श्री सामल ने कहा कि जीएसटी 2.0 प्रधानमंत्री मोदी के परिवर्तनकारी नेतृत्व का स्पष्ट प्रमाण है।

अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों के कारण, ओडिशा के करोड़ों किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। 15 लाख से अधिक किसान और उनके परिवार आर्थिक रूप से और सशक्त होंगे। कोयले पर उपकर हटाने और जीएसटी दरों में बदलाव से ओडिशा के राजस्व में वृद्धि होगी। ओडिशा के पर्यटन उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव आएगा और रोजगार के अपार अवसर पैदा होंगे। कपास पर जीएसटी दर 18% से घटाकर 5% करने से ओडिशा के लाखों बुनकरों को लाभ होगा और विदेशों में निर्यात की मात्रा बढ़ाने और देश के लिए विदेशी मुद्रा लाने में मदद मिलेगी। श्री सामल ने कहा कि जीएसटी सुधारों का लाभ सबसे प्रभावी तरीके से ओडिशा तक पहुंचेगा और यह ओडिशा के युवाओं के लिए नए अवसर पैदा करेगा।

78 साल पहले हमें विदेशी शासन से आजादी मिली थी, लेकिन आज विदेशी वस्तुओं से मुक्ति का समय आ गया है। प्रधानमंत्री की अपील: ₹हम स्वदेशी खरीद रहे हैं, स्वदेशी बेच रहे हैं₹ प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने ओडिशा के लोगों से इसमें शामिल होने की अपील की है।

इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष श्री बिरंची नारायण त्रिपाठी, प्रदेश प्रवक्ता सुदीप्त रॉय, प्रदेश मीडिया समन्वयक सुजीत कुमार दास और सोशल मीडिया समन्वयक उमाकांत पटनायक प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

बंगाल की झालदा पुलिस ने सुदेश,हरेलाल, लंबोदर को पीडितों से मिलने नहीं दिया

कोटशीला मे हुई हिंसा के शिकार घायलों को उपचार व मुआवजा दिया जाय : आजसू

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो को पश्चिम बंगाल के झालदा में पुलिस ने रोक दिया। सुदेश महतो को पार्टी प्रतिनिधिमंडल के साथ कोटशिला जाने से रोका गया। जहां वे हाल ही में हुई हिंसा की घटनाओं के पीड़ितों से मिलने जा रहे थे। प्रतिनिधिमंडल में सुदेश महतो के साथ पार्टी के पूर्व विधायक लंबोदर महतो, ईचागढ़ के पूर्व प्रत्याशी हरेलाल महतो, पार्टी के महासचिव एवं हजारीबाग लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी संजय मेहता शामिल थे।

ज्ञात हो कि कुड़मी समाज के एसटी दर्जे की मांग को लेकर हुए आंदोलन के दौरान कोटशिला क्षेत्र के कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। इन घायलों से मिलने और उनके हालचाल जानने के उद्देश्य से सुदेश महतो तथा आजसू पार्टी का प्रतिनिधिमंडल पश्चिम बंगाल रवाना हुआ था, लेकिन रास्ते में ही पुलिस प्रशासन ने उन्हें रोक दिया और आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी।

पार्टी के महासचिव संजय मेहता ने पुरुलिया के एडिशनल एसपी से बात की। उन्होंने साफ तौर पर एसपी से कहा कि पुलिस के आदेश के बावजूद लोकतांत्रिक अधिकार का हनन हमलोग नहीं सहेंगे। हमलोगों को जाने दिया जाए। इसके बाद पुलिस ने बड़ी सुरक्षा के बीच सुदेश महतो को कोटशिला तक जाने दिया, लेकिन सिर्फ कार्यकर्ताओं से मिलने दिया। पुलिस ने पीड़ितों के गांवों में जाने से सुदेश महतो को रोक दिया ।पार्टी के प्रवक्ता संजय मेहता ने बताया की पीड़ितों से मिलने से रोकना लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब लोग अपनी समस्याएं और पीड़ा साझा करना चाहते हैं। तब प्रशासन उन्हें दबाने और रोकने का प्रयास करता है। उन्होंने कहा की कोटशिला की घटना में पीड़ित परिवारों के साथ पार्टी की पूरी संवेदना है। प्रशासन चाहे जितना भी रोके, हम जनहित और समाजहित की आवाज़ को बुलंद करते रहेंगे।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के दर्द को सुनना और साझा करना किसी भी राजनीतिक दल का दायित्व है। बंगाल पुलिस दमन पर उतर आई है। संजय मेहता ने बताया की सुदेश महतो के कार्यक्रम की सूचना पूर्व में ही बंगाल पुलिस को दे दी गई थी। बंगाल पुलिस ने अनुमति भी दी थी। बंगाल पुलिस ने सुदेश महतो के काफिले को सुरक्षा भी उपलब्ध कराई, लेकिन झालदा पुलिस ने ज्यादती करते हुए रोक दिया ।आजसू पार्टी ने प्रशासन से मांग की है कि हिंसा में घायल लोगों को उचित उपचार एवं मुआवजा दिया जाए तथा दोषियों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। पुलिस किसी भी आंदोलनकारी के ऊपर दमन न करे। गांव में घुसकर पुलिस ने लोगों के

मोदी 27 को झारसुगुड़ा आएंगे, प्रदेश अध्यक्ष ने किया स्थल का निरीक्षण

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 27 तारीख को अपने ओडिशा दौरे पर ब्रह्मपुर में एक आधिकारिक समारोह में शामिल होने वाले हैं। हालाँकि, प्रधानमंत्री मोदी के दौरे में कुछ बदलाव किए गए हैं। खबर है कि मोदी 27 तारीख को झारसुगुड़ा आएँगे। रविवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल और प्रदेश सचिव मानस मोहंती ने संबलपुर का दौरा किया और दोपहर में झारसुगुड़ा का दौरा किया ।प्रदेश अध्यक्ष ने उस मैदान का भी दौरा किया जहां प्रधानमंत्री मोदी झारसुगुड़ा हवाई अड्डे के उद्घाटन के अवसर पर जनता को संबोधित करेंगे।

नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र की सभी टूटी सड़कों पर प्रिमिक्स डालने का कार्य शुरू: करमजीत सिंह रिंटू

भारी बरसात कारण सीवरेज और कूड़ा लिफ्टिंग की की समस्या का भी हल निकाला

अमृतसर, 22 सितंबर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू द्वारा आज मेडिकल एन्क्लेव में मुख्य सड़क के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया गया। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि नॉर्थ विधानसभा की सभी सड़कों को प्रिमिक्स से बनवाने का कार्य शुरू करवा दिया गया है। उन्होंने कहा कि इंप्रूवमेंट ट्रस्ट, नगर निगम और पीडब्ल्यूडी के अधीन पड़ती सभी सड़कों को बनवाने की मंजूरी ले ली गई है। उन्होंने कहा कि आने वाले 2 महीने के भीतर सभी सड़कों की चौड़ाई को भी बढ़ाकर बनवा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्रवासियों से किया गया वादा पूरा किया जा रहा है। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि इस मुख्य सड़क को बनवाने की मांग लंबे समय से उठ रही थी और क्षेत्रवासियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। इस सड़क के निर्माण से न केवल क्षेत्रवासियों की मांग पूरी होगी, बल्कि आवागमन संबंधी समस्याओं का भी समाधान होगा।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि कंपनी द्वारा सफाई का काम छोड़ देने के कारण सफाई व्यवस्था को लेकर पहले कुछ समस्या आई थी। उन्होंने कहा कि नई कंपनी द्वारा पूरी तरह से सफाई को लेकर कार्य करने में लगभग 1 महीने का समय लग जाना है। उन्होंने कहा कि सफाई व्यवस्था को लेकर फिलहाल कुछ हल निकाल दिया गया है। उन्होंने कहा कि 1 महीने के लिए नगर निगम की सारी मशीनरी और प्राइवेट ट्रैक्टर ट्राली, छोटी गाड़ियों की संख्या बढ़ाकर शहर से कूड़ा लिफ्टिंग शुरू करवा दी गई है। उन्होंने कहा कि लगभग 1 महीने बाद शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर परमानेंट हल निकल जाएगा।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि सीवरेज की डी-सिल्टिंग के लिए इंप्रूवमेंट ट्रस्ट, नगर निगम की सुपर सक्कर और जेट्टिंग मशीने लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सीवरेज की सफाई लगातार जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि स्ट्रीट लाइट के रखरखाव के लिए भी अधिकारियों द्वारा लगातार कार्य किया जा रहा है। जिस भी क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट खराब होती है, उसे ठीक करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वार्ड में किसी को भी कोई समस्या आती है तो वह अपनी वार्ड के पार्षद और वार्ड इंचार्ज के साथ संपर्क करके समस्या का हल निकाल सकते हैं। इस अवसर पर सीनियर डिप्टी मेयर प्रियंका शर्मा, अंकुर गुप्ता, साहिल सगर, अरविंदर भट्टी, बत्रा जी, विजय परेसर, विशाखा सिंह, लखविंदर सिंह, सुरजीत सिंह, बलविंदर काला, प्रणव धवन और भारी संख्या में क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

अजनाला में बाढ़ से 1,000 एकड़ उपजाऊ ज़मीन नदी में समाई, किसान बेहाल — धालीवाल

अमृतसर/अजनाला, 22 सितम्बर (साहिल बेरी)

अजनाला सेक्टर के सीमा गाँव जैसे बल्ल लभे दरिया, कमीरपुरा, साहोवाल आदि में रावी नदी की भयानक बाढ़ से नष्ट हुई फसलों का जायज़ा लेने के लिए क्षेत्रीय विधायक और पंजाब के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री कुलदीप सिंह धालीवाल स्वयं पहुँचे। बीएसएफ द्वारा उपलब्ध कराई मोटरबोट पर सवार होकर उन्होंने नदी पार जाकर बरबाद हुई फसलों का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान, श्री धालीवाल ने किसानों के 6 ट्रैक्टरों को, जो बाढ़ से 10-10 फुट रेत व गाद में दब गए थे, निकालने की प्रक्रिया का नेतृत्व किया। मौके पर ही 3 ट्रैक्टर बाहर निकाले गए और नदी की तेज़ धारा का सामना करते हुए उन्हें नाव पर चढ़ाकर गाँव बल्ल लभे दरिया के मालिक किसानों को वापस सौंपा गया। उन्होंने किसानों को हिम्मत दी।

किसानों की माँग पर—क्योंकि बाढ़ में एक बड़ी नाव और एक बेड़ी बह गई थी—धालीवाल ने अपनी निजी जेब से ₹1 लाख दान करते हुए कारीगरों को आदेश दिया कि 2 हफ्तों में नई नाव और बेड़ी किसानों को उपलब्ध करवाई जाए।

किसानों से समस्याएँ सुनने के बाद धालीवाल ने कहा कि यह प्राकृतिक आपदा ऊपरी पहाड़ी क्षेत्रों में बादल फटने से आई, जिससे भारी मात्रा में पत्थर, लाल मिट्टी और गाद तिन डैम तक पहुँची। इतनी तेज़ धारा थी कि इंजीनियर भी गाँवों और कस्बों को पहले से सूचना देना असंभव समझे।

इसी बीच, मधोपुर हेडवर्क्स के 3 फ्लड गेट टूटने की जाँच के लिए पंजाब सरकार ने 5 विशेषज्ञ इंजीनियरों की समिति गठित की है, जो संरचनात्मक, यांत्रिक, जल विज्ञान और भू-तकनीकी कारणों की जाँच करेगी। लापरवाही के आरोप में 3 अधिकारी पहले ही निलंबित किए जा चुके हैं।

धालीवाल ने केंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पंजाब में हजारों एकड़ उपजाऊ ज़मीन बाढ़ से नदी में समा गई, लेकिन केंद्र सरकार मूक दर्शक बनी हुई है। उन्होंने कहा कि पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ और अन्य वरिष्ठ नेताओं ने केंद्र से विशेष राहत पैकेज न दिलवाकर किसानों के साथ विश्वासघात किया है।

प्रभावित किसानों के अनुसार, गाँव बल्ल लभे दरिया की लगभग 250 एकड़ और अजनाला क्षेत्र की कुल लगभग 1,000 एकड़ उपजाऊ ज़मीन रावी नदी में समा गई है। किसान अपनी "गायब हुई ज़मीन" खोजने में भटक रहे हैं। धालीवाल ने ज़ोर देकर कहा कि केंद्र सरकार को प्रभावित किसानों को प्रति एकड़ कम से कम ₹20 लाख मुआवज़ा देना चाहिए।

उन्होंने यह भी बताया कि 2 जुलाई को दिल्ली में केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री श्री सी.आर. पाटिल से मुलाक़ात कर उन्होंने रावी नदी की गाद साफ़ करने (डी-सिल्टिंग) और पिछले बाढ़ों में समाई ज़मीन का मुआवज़ा देने हेतु फंड जारी करने का मामला उठाया था, क्योंकि यह विषय केंद्र सरकार के अधीन है।

सीमा पार से संचालित हथियार तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़; 10 पिस्तौल, 2.5 लाख रुपये हवाला राशि समेत तीन गिरफ्तार

पाकिस्तानी हैंडलर ड्रोन के जरिए भारतीय क्षेत्र में भेजता था हथियारों की खेप : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 22 सितंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने सीमा पार से अवैध हथियार सप्लाई में शामिल एक संगठित हथियार एवं हवाला नेटवर्क के तीन सदस्यों को 10 आधुनिक हथियारों और 2.5 लाख रुपये हवाला मनी समेत गिरफ्तार कर गैंग का भंडाफोड़ किया है। यह जानकारी पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने आज यहां दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान अमरजीत सिंह उर्फ बाऊ (22) निवासी माझी मेओ (अमृतसर), मनबीर सिंह (26) निवासी वान तारा सिंह (तरनतारन) और मुहम्मद तौफीक खान उर्फ बब्बलू (42) निवासी गौतम नगर, मुंबई के रूप में हुई है। बरामद हथियारों में तीन .30 बोर पीएक्स5 पिस्तौल, तीन 9 एमएम ग्लॉक, एक 9 एमएम ब्रेटा और तीन .30 बोर पिस्तौल शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि शुरुआती जांच से पता चला है कि गिरफ्तार आरोपी पाकिस्तानी हैंडलरों के संपर्क में थे और राज्य की शांति भंग करने के इरादे से अवैध हथियार हासिल करने और आगे सप्लाई करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते थे।

उन्होंने कहा कि इस मामले में आगे-पीछे के संबंधों का पता लगाने के लिए और जांच की जा रही है ताकि पूरे नेटवर्क और सीमा पार संबंधों का खुलासा किया जा सके।

पुलिस आयुक्त (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने कार्रवाई के विवरण साझा करते हुए कहा कि गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस टीमों ने अमरजीत उर्फ बाऊ को गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से एक ग्लॉक पिस्तौल बरामद की। बाद में अमरजीत के खुलासे पर मनबीर को नामजद किया गया और नौ पिस्तौल समेत गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि अमरजीत और मनबीर दोनों का एक साझा पाकिस्तानी हैंडलर था, जो ड्रोन के जरिए हथियारों की खेप भारतीय क्षेत्र में भेजता था।

सीपी ने आगे बताया कि जांच से खुलासा हुआ है कि मुंबई आधारित व्यक्ति, मुहम्मद तौफीक खान, तस्करी से अर्जित धन को हवाला के माध्यम से पाकिस्तान भेजता था और नेटवर्क चलाने के लिए पंजाब के अलग-अलग शहरों में किराए के मकानों में रहता था। उसे 2.5 लाख रुपये हवाला राशि समेत गिरफ्तार किया गया।

इस संबंध में, अमृतसर के पुलिस स्टेशन गेट हकीमा में आर्म्स एक्ट की धारा 25(6), 25(7) और 25(8) के तहत एफआईआर नंबर 257, दिनांक 17.09.2025 दर्ज किया गया है।

अमृतसर में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित तरुण चुघ ने GST में राहत को बताया दिवाली से पहले बड़ा तोहफा

अमृतसर 22 सितंबर (साहिल बेरी)

आज भारतीय व्यापार मंडल की एक मीटिंग नेहरू कॉम्प्लेक्स में रखी गई जिसमें मुख्य मेहमान भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री माननीय श्री तरुण चुघ जी ने आकर व्यापारियों को जीएसटी के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस जीएसटी से व्यापारियों और देशवासियों को आने वाले समय में बहुत लाभ मिलेगा उन्होंने माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिवाली से पहले व्यापारियों और देश की जनता को जीएसटी में राहत के तौर पर जो तोहफा दिया है उन्होंने सुन का कॉन्ट्रेक्ट्स उनका बहुत बहुत आभार जताया किया मीटिंग में व्यापार मंडल के पंजाब प्रधान राजीव अनेजा अमृतसर प्रधान राजीव दुग्गल चेयरमैन जसवीर सोडी श्री बख्शी राम अरोड़ा एक्स काउंसलर चन्द्र शेखर काउंसलर कृति अरोड़ा जी विजय सेठ अमित सेठ राजकुमार महाजन राजीव गुलाटी डॉ॰ सुरेश सूद रंजीत कुमार जीता एडवोकेट खैरा गुंद रवि भल्ला रमण अरोड़ा संदीप पोपली कंप्यूटर एसोसिएशन के विकास नारंग भरत पोपली जगदीश कपूर अशोक कालिया अजय कुमार राजीव कपूर प्रवेश चोपड़ा विक्रम बग्गा राजू नारंग गौरव दुआ वऔर भी शहर के कई व्यापारी मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023